भीम प्रज्ञा अलर्ट

'काबिलियत की पहचान इस बात से नहीं होती कि इंसान ने कितनी ऊँची कुर्सी हासिल की, बल्कि इस बात से होती है कि जिम्मेदारी मिलने पर उसने कितना ईमानदार और मजबूत चरित्र दिखाया। संघर्ष इंसान को रोकता नहीं, उसे तराशता है।'

दैनिक

# भीम प्रज्ञा

PRGI No. RJHIN/25/A3844 डाक पंजीयन G/JJN/053/2024-26 Valid up to 31 dec. 2026

2009 से स्थापित

सम्यक, न्याय, स्वतंत्रता, समानता, बंधुता, एवं सामाजिक चेतना के लिए रचनात्मक पत्रकारिता

गांव के गुवाड़ से निकलकर प्रकाशित होने वाले दैनिक अखबार भीम प्रज्ञा की मजबूती के लिए पाठक बनिए और बनाइए अपनी प्रतिक्रिया दीजिए

हेल्पलाइन - 9983040937

Bheem Pragya publication
A/C No: 61347330768
IFSC Code- SBIN0031880
Phone pe , G-pay
9983040937

www.bheempragya.in | वर्ष-1 | अंक-284 | झुंझुनू (राजस्थान) | बुधवार, 9 सितंबर, 2026 | Email.bheempragya@gmail.com | पृष्ठ-8 | मूल्य: 5.00

## काबिलियत और बड़प्पन जिम्मेदारियों की भट्टी में तपकर ही हासिल होते हैं

सुविधाएं इंसान को आराम दे सकती हैं, लेकिन संघर्ष ही उसे काबिल और जिम्मेदार बनाता है। आज का दौर बाजारवाद और भौतिक प्रतिस्पर्धा का दौर है। दुनिया में शायद ही ऐसी कोई वस्तु हो जिसे धन के बल पर खरीदा न जा सके। महंगे कपड़े, आलीशान मकान, आधुनिक वाहन, सुख-सुविधाओं के साधन और प्रतिष्ठा का दिखावा–सब कुछ बाजार में उपलब्ध है। लेकिन मनुष्य के व्यक्तित्व की कुछ ऐसी पूंजी भी है, जिसकी कोई कीमत तय नहीं की जा सकती। काबिलियत, चरित्र, संस्कार और बड़प्पन ऐसी ही अमूल्य संपत्तियां हैं। यहां मैं बोलूंगा तो फिर कहोगे कि बोलता है। इन गुणों को किसी दुकान से खरीदा नहीं जा सकता और न ही किसी पद या धन के बल पर हासिल किया जा सकता है। इनके लिए व्यक्ति को जीवन की जिम्मेदारियों की भट्टी में तपना पड़ता है।

काबिलियत केवल डिग्री हासिल करने या बड़े पद पर पहुंच जाने का नाम नहीं है। वास्तविक काबिलियत तब सामने आती है, जब व्यक्ति कठिन परिस्थितियों में भी सही निर्णय लेने की क्षमता रखता है। परिस्थितियां प्रतिकूल हों, साधन सीमित हों और रास्ते में बाधाएं खड़ी हों, तब भी जो व्यक्ति अपने कर्तव्य से पीछे नहीं हटता, वही वास्तव में काबिल कहलाने का अधिकारी है। जीवन में जिम्मेदारियां कभी आसान नहीं होतीं। परिवार की जिम्मेदारी हो, रोजगार की हो, समाज की हो या किसी पद की–हर जिम्मेदारी व्यक्ति की परीक्षा लेती है। कई बार परिस्थितियां हमें ऐसे निर्णय लेने के लिए मजबूर करती हैं, जिनमें अपनी सुविधा छोड़कर दूसरों के हित को प्राथमिकता देनी पड़ती है। यही क्षण व्यक्ति के चरित्र का निर्माण करते हैं। संघर्ष व्यक्ति को तोड़ने के लिए नहीं, उसे गढ़ने के लिए आता है। जिस तरह सोने को आभूषण बनने से पहले आग में तपना पड़ता है, उसी प्रकार मनुष्य की प्रतिभा और व्यक्तित्व भी संघर्ष की आग में तपकर निखरते हैं। जो व्यक्ति हर कठिनाई से बचने का रास्ता खोजता है, वह शायद आरामदायक जीवन तो जी सकता है, लेकिन जीवन की बड़ी जिम्मेदारियों को संभालने की क्षमता विकसित नहीं कर पाता। इसके विपरीत, जो व्यक्ति कठिनाइयों को चुनौती के रूप में स्वीकार करता है, असफलताओं से सीखता है और हर परिस्थिति में आगे बढ़ने का प्रयास करता है, उसके भीतर धीरे-धीरे आत्मविश्वास, धैर्य और निर्णय लेने की क्षमता पैदा होती है।

लेकिन केवल काबिल होना पर्याप्त नहीं है। समाज को ऐसे लोगों की आवश्यकता है, जिनके पास योग्यता के साथ-साथ बड़प्पन भी हो। क्योंकि काबिलियत व्यक्ति को ऊंचाई तक पहुंचा सकती है, लेकिन बड़प्पन ही उसे उस ऊंचाई पर टिकाए रखता है। बड़प्पन का अर्थ केवल बड़े पद पर बैठना या दूसरों से अधिक धनवान होना नहीं है। बड़प्पन तो उस व्यवहार का नाम है, जिसमें व्यक्ति अपनी सफलता के बावजूद दूसरों का सम्मान करना नहीं भूलता। जो अपने से कमजोर व्यक्ति के साथ भी सम्मान से बात करे, अपनी शक्ति का दुरुपयोग न करे, गलती होने पर उसे स्वीकार करे और आवश्यकता पड़ने पर दूसरों की मदद के लिए आगे आए–वास्तविक अर्थों में वही बड़ा इंसान है। हमारे इतिहास में ऐसे अनेक उदाहरण हैं, जिन्होंने सुविधाओं के बजाय संघर्ष को चुना और अपनी जिम्मेदारियों को अपनी शक्ति बना लिया। डॉ. भीमराव आंबेडकर ने अत्यंत विषम सामाजिक परिस्थितियों में शिक्षा हासिल की और ज्ञान को सामाजिक परिवर्तन का माध्यम बनाया। महात्मा ज्योतिबा फुले ने सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध संघर्ष करते हुए शिक्षा और समानता की मशाल जलाए रखी। डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम ने साधारण परिस्थितियों से निकलकर अपनी प्रतिभा, अनुशासन और मेहनत के बल पर देश के सर्वोच्च पदों में से एक तक पहुंचकर युवाओं के लिए प्रेरणा का उदाहरण प्रस्तुत किया। इन महान व्यक्तित्वों की सफलता के पीछे केवल प्रतिभा नहीं थी, बल्कि जिम्मेदारी के प्रति गहरी प्रतिबद्धता थी। आज की पीढ़ी के सामने सबसे बड़ी चुनौती यह है कि वह सफलता तो जल्दी चाहती है, लेकिन उसके लिए आवश्यक संघर्ष से बचना चाहती है। सोशल मीडिया ने सफलता का एक ऐसा चमकदार चेहरा हमारे सामने प्रस्तुत कर दिया है, जिसमें उपलब्धि तो दिखाई देती है, लेकिन उसके पीछे छिपी वर्षों की मेहनत, असफलताएं, त्याग और संघर्ष दिखाई नहीं देते।

युवा यह समझें कि किसी की सफलता देखकर उससे ईर्ष्या करने के बजाय उसके संघर्ष से सीखना चाहिए। जीवन में मिलने वाली हर जिम्मेदारी को बोझ समझने के बजाय उसे अपने व्यक्तित्व को निखारने का अवसर मानना चाहिए। माता-पिता की जिम्मेदारी, परिवार की जिम्मेदारी, समाज के प्रति जिम्मेदारी और अपने पेशे के प्रति ईमानदारी–यही वे कसौटियां हैं, जिन पर व्यक्ति का वास्तविक चरित्र तैयार होता है। इसलिए जीवन में यदि कभी परिस्थितियां कठिन हो जाएं तो उनसे घबराइए मत। संभव है कि वही कठिन समय आपके व्यक्तित्व को उस ऊंचाई तक पहुंचाने की तैयारी कर रहा हो, जहां आपकी योग्यता और बड़प्पन दोनों दिखाई देंगे। काबिलियत किताबों से शुरू हो सकती है, लेकिन जिम्मेदारियों से निखरती है। बड़प्पन संस्कारों से जन्म ले सकता है, लेकिन त्याग और संघर्ष से सिद्ध होता है।

**अंततः** जीवन का मूल्य इस बात से तय नहीं होता कि हमने कितना धन कमाया, कितनी सुविधाएं जुटाईं या कितनी बड़ी कुर्सी हासिल की। असली मूल्य इस बात का है कि हमें मिली जिम्मेदारियों को हमने कितनी ईमानदारी से निभाया और अपनी सफलता के बावजूद इंसानियत को कितना बचाए रखा। हमेशा याद रखिए–

'सुविधाओं में पला व्यक्ति सफल हो सकता है, लेकिन जिम्मेदारियों में तपकर निकला व्यक्ति ही वास्तव में काबिल और बड़ा इंसान बनता है।'

# नगर निकाय चुनाव को लेकर मतदान दल रवाना, 9 निकायों में आज होगा मतदान

**भीम प्रज्ञा न्यूज.झुंझुनूं।**

नगर निकाय आम चुनाव 2026 के प्रथम चरण के तहत झुंझुनूं जिले के नौ नगरीय निकायों में बुधवार, 9 सितंबर को होने वाले मतदान को लेकर प्रशासन ने तैयारियां पूरी कर ली हैं। मंगलवार को जिलेभर में मतदान दलों को आवश्यक चुनाव सामग्री के साथ उनके निर्धारित मतदान केंद्रों के लिए रवाना किया गया। सुबह से ही मतदान सामग्री वितरण केंद्रों पर चुनाव ड्यूटी में लगे अधिकारी और कर्मचारियों की चहल-पहल देखने को मिली। सेठ मोतीलाल कॉलेज परिसर सहित निर्धारित वितरण केंद्रों पर मतदान दल ईवीएम, वीवीपैट और अन्य चुनाव सामग्री लेकर बसों एवं अन्य वाहनों से अपने-अपने मतदान केंद्रों की ओर रवाना हुए।

### ईवीएम-वीवीपैट की जांच के बाद मिली रवानगी

मतदान दलों की रवानगी से पहले निर्वाचन अधिकारियों की निगरानी में ईवीएम, वीवीपैट और अन्य चुनाव सामग्री का मिलान एवं तकनीकी जांच करवाई गई। प्रत्येक मतदान दल ने अपने रिकॉर्ड के अनुसार उपलब्ध सामग्री का सत्यापन किया, ताकि मतदान के दौरान किसी भी प्रकार की तकनीकी या व्यवस्थागत परेशानी सामने न आए। दोपहर करीब 12 बजे तक सामग्री मिलान और जांच की प्रक्रिया पूरी होने के बाद मतदान दलों को उनके निर्धारित मतदान केंद्रों के लिए रवाना कर दिया गया। इस दौरान रिटर्निंग अधिकारी एवं उपखंड अधिकारी रामकरण सिंह सहित अन्य प्रशासनिक अधिकारियों ने मतदान सामग्री वितरण केंद्रों का निरीक्षण किया। अधिकारियों ने मतदान दलों को निष्पक्ष, पारदर्शी और शांतिपूर्ण तरीके से मतदान प्रक्रिया संपन्न कराने के लिए आवश्यक दिशा-निर्देश दिए।

### 9 नगरीय निकायों में होगा मतदान

झुंझुनूं जिले में 9 सितंबर को नगर परिषद झुंझुनूं के साथ नगर पालिका बगड़, सुल्ताना, नवलगढ़, जाखल, मुकुंदगढ़, डूंडलोद, खेतड़ी और उदयपुरवाटी में मतदान होगा। मतदान प्रक्रिया सुबह शुरू होकर निर्धारित समय तक चलेगी। मतदान समाप्त होने तक प्रशासन और पुलिस की ओर से सुरक्षा एवं व्यवस्थाओं पर विशेष नजर रखी जाएगी।

### 2200 से अधिक पुलिसकर्मी संभालेंगे सुरक्षा व्यवस्था

प्रथम चरण के चुनाव को शांतिपूर्ण एवं निष्पक्ष तरीके से संपन्न कराने के लिए जिले में 2200 से अधिक पुलिसकर्मियों की तैनाती की गई है। संवेदनशील एवं महत्वपूर्ण मतदान केंद्रों पर अतिरिक्त पुलिस बल लगाया गया है। इसके अलावा सेक्टर मजिस्ट्रेट और पुलिस अधिकारी लगातार क्षेत्रों में भ्रमण कर मतदान केंद्रों की व्यवस्थाओं और कानून-व्यवस्था पर नजर रखेंगे।

### अलग-अलग स्थानों से रवाना हुए मतदान दल

झुंझुनूं नगर परिषद एवं बगड़ नगर पालिका के मतदान दल सेठ मोतीलाल पीजी कॉलेज एवं शिक्षा संकुल, झुंझुनूं से रवाना हुए। सुल्ताना नगर पालिका के मतदान दल मास्टर हजारी लाल शर्मा राजकीय महाविद्यालय, चिड़ावा से रवाना किए गए।

नवलगढ़ एवं जाखल के मतदान दल सेठ जी.बी. पोद्दार कॉलेज, नवलगढ़ से रवाना हुए। मुकुंदगढ़ एवं डूंडलोद के मतदान दल कनोडिया कॉलेज, मुकुंदगढ़ से रवाना किए गए। खेतड़ी नगर पालिका के मतदान दल राजकीय जयसिंह उच्च माध्यमिक विद्यालय, खेतड़ी से रवाना हुए। उदयपुरवाटी नगर पालिका के मतदान दल राजकीय महाविद्यालय, उदयपुरवाटी से अपने-अपने मतदान केंद्रों के लिए रवाना हुए। अब मतदान दलों के मतदान केंद्रों पर पहुंचने के साथ ही चुनावी तैयारियां अंतिम चरण में पहुंच गई हैं। बुधवार को होने वाले मतदान में मतदाता अपने मताधिकार का प्रयोग करेंगे, वहीं प्रशासन की ओर से शांतिपूर्ण, निष्पक्ष और पारदर्शी मतदान सुनिश्चित करने के लिए सुरक्षा एवं व्यवस्थाओं को लेकर पूरी सतर्कता बरती जा रही है।

### झुंझुनूं नगर परिषद में 94 मतदान केंद्र

झुंझुनूं नगर परिषद क्षेत्र के 60 वार्डों में मतदान के लिए कुल 94 मतदान बूथ बनाए गए हैं। इनमें 84 बूथ ऐसे हैं जहां 1400 तक मतदाता हैं, जबकि 10 मतदान केंद्रों पर 1400 से अधिक मतदाता होने के कारण अतिरिक्त व्यवस्थाएं की गई हैं। वहीं बगड़ नगर पालिका में 20 और सुल्ताना नगर पालिका में 25 मतदान बूथ बनाए गए हैं। इन दोनों निकायों में 1400 से अधिक मतदाताओं वाला कोई मतदान केंद्र नहीं है।

## भिवाड़ी के 9 मतदान केंद्रों पर पहुंचे जिला निर्वाचन अधिकारी: व्यवस्थाओं का जायजा लिया

### संवेदनशील बूथों पर सुरक्षा और EVM की हिफाजत के निर्देश

**भीम प्रज्ञा न्यूज**

**खैरथल-तिजारा ।** खैरथल में नगर निकाय चुनाव-2026 की तैयारियों को लेकर जिला प्रशासन अलर्ट है। जिला निर्वाचन अधिकारी और कलेक्टर अतुल प्रकाश ने मंगलवार को भिवाड़ी नगर परिषद क्षेत्र के 9 मतदान केंद्रों का दौरा किया। उन्होंने मतदान केंद्रों पर मूलभूत सुविधाओं, सुरक्षा व्यवस्था और चुनाव की तैयारियों का जायजा लिया। अधिकारियों को स्वतंत्र, निष्पक्ष और शांतिपूर्ण मतदान सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए। अतुल प्रकाश ने घटाल, खिजरपुर, हरचंदपुर और सांथलका के सरकारी स्कूलों में बने 9 मतदान केंद्रों का निरीक्षण किया। उन्होंने निर्देश दिए कि चुनाव आयोग के नियमों के हिसाब से सभी व्यवस्थाएं समय पर पूरी की जाएं। साथ ही, मतदान के दौरान किसी भी तरह की परेशानी नहीं आनी चाहिए।

### EVM और चुनाव सामग्री की सुरक्षा सुनिश्चित करने के निर्देश

कलेक्टर अतुल प्रकाश ने मतदान दलों को श्वङ्करूऔर चुनाव सामग्री की पूरी सुरक्षा सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने साफ किया कि चुनाव प्रक्रिया में किसी भी स्तर पर लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। सभी मतदान कर्मियों को सतर्क रहकर राज्य चुनाव आयोग के निर्देशों का पालन करने और मतदान प्रक्रिया को पारदर्शी बनाने को कहा गया। उन्होंने मतदान दलों से यह भी कहा कि चुनाव के दौरान कोई भी समस्या आने पर तुरंत बड़े अधिकारियों को बताएं। इससे समय रहते उसका समाधान किया जा सकेगा। एसपी बृजेश ज्योति उपाध्याय ने मतदान दलों को सुरक्षा व्यवस्था की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि मतदान केंद्रों पर शांतिपूर्ण और भयमुक्त माहौल में वोटिंग कराना पुलिस प्रशासन की प्राथमिकता है। उन्होंने मतदान दलों से सुरक्षा में तैनात पुलिसकर्मियों के साथ अच्छा तालमेल बनाए रखने को कहा। एसपी ने कानून-व्यवस्था से जुड़े सभी निर्देशों का पूरी तरह पालन करने के निर्देश भी दिए।

#### ये रहे मौजूद

निरीक्षण के दौरान पुलिस अधीक्षक बृजेश ज्योति उपाध्याय, आरओ टपूकड़ा कृष्ण यादव, नगर परिषद आयुक्त सुरेश मीणा, जिला निर्वाचन अधिकारी कार्यालय के विशेष अधिकारी ऐश्वर्यम प्रजापत और आरओ भिवाड़ी सुमित्रा मिश्र मौजूद थे। इनके साथ संबंधित अधिकारी और मतदान दलों के कर्मी भी उपस्थित रहे।

## राजकीय महाविद्यालय बिसाऊ में विश्व साक्षरता दिवस मनाया

**भीम प्रज्ञा न्यूज.बिसाऊ।**

राजकीय महाविद्यालय बिसाऊ में सोमवार को निर्वाचन साक्षरता क्लब के तत्वावधान में विश्व साक्षरता दिवस मनाया गया। कार्यक्रम के दौरान विद्यार्थियों को साक्षरता एवं निर्वाचन प्रक्रिया के प्रति जागरूक किया गया।नोडल अधिकारी मनोज सुंडा ने निर्वाचन साक्षरता पर प्रकाश डालते हुए बताया कि लोकतंत्र को मजबूत बनाने में जागरूक मतदाता की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। उन्होंने निर्वाचन प्रक्रिया के विभिन्न चरणों की जानकारी देते हुए कहा कि निर्वाचन साक्षरता क्लब द्वारा पूरे शैक्षणिक सत्र में निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार विभिन्न जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। इस अवसर पर सहायक आचार्य रोहित मीणा ने भी विद्यार्थियों को निर्वाचन साक्षरता के महत्व से अवगत कराया तथा लोकतांत्रिक मूल्यों को अपनाने का संदेश दिया। कार्यक्रम में सहायक आचार्य शुभम कुमार, सुनीता कुमारी, सतकला, अनिता लोचिब सहित महाविद्यालय के अनेक विद्यार्थी उपस्थित रहें।

## अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस पर सेही कलां विद्यालय की व्याख्याता शिक्षा बजाज सम्मानित

**भीम प्रज्ञा न्यूज.चिड़ावा।**

60वें अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस के अवसर पर जिला मुख्यालय झुंझुनूं में आयोजित जिला स्तरीय सम्मान समारोह में राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय (राउमावि) सेही कलां की व्याख्याता शिक्षा बजाज को उत्कृष्ट कार्य के लिए सम्मानित किया गया।जिले के सरकारी विद्यालयों में संचालित 'उल्लास जन-जन साक्षर अभियान' के तहत उल्लेखनीय कार्य करने पर साक्षरता प्रभारी शिक्षा बजाज को जिला कलेक्टर डॉ. अरुण गर्ग एवं मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी अशोक शर्मा ने प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया। शिक्षा बजाज के सम्मानित होने पर शिक्षा जगत, समाज एवं उनके परिवार में खुशी का माहौल है। उनकी इस उपलब्धि पर पति शुभकरण बजाज, बेटा दिव्यांश बजाज, जेठ सुनील बजाज, एडवोकेट दिनेश बजाज, भाई ललित, डॉ. विवेक तिवारी, डॉ. संजय इंदोरिया, ओम प्रकाश अवस्थी, अ.भा.रा. संगठन के जिला संगठन मंत्री सुनील भारद्वाज, पीएम श्री बालिका विद्यालय की प्रधानाचार्य सरोज दाधीच, वीर सावरकर कॉलेज की प्रधानाचार्य रेखा शर्मा, राउमावि सेही कलां के प्रधानाचार्य मनोज झाझड़िया,

राउमावि सारी के प्रधानाचार्य प्रदीप मोदी, राबाउमावि बड़ागांव की प्रधानाचार्य सुमन चाहर, सीकर की प्रधानाचार्य सुमन सेवदा, पूर्व प्रधानाचार्य अरविंद जांगिड़ सहित राधारमण ग्रुप, अमृतवाणी ग्रुप के सदस्यों एवं राउमावि सेही कलां परिवार ने हर्ष व्यक्त करते हुए उन्हें बधाई दी।सम्मान समारोह में शिक्षा बजाज के कार्यों की सराहना करते हुए साक्षरता अभियान को जन-जन तक पहुंचाने में शिक्षकों की भूमिका को महत्वपूर्ण बताया गया। शिक्षा बजाज का सम्मान विद्यालय एवं क्षेत्र के लिए भी गौरव का विषय माना जा रहा है।

## नगरीय निकाय चुनाव-2026: मतदान दलों की ब्रीफिंग, जिला कलक्टर व एसपी ने दिए आवश्यक दिशा-निर्देश

**भीम प्रज्ञा न्यूज.झुंझुनूं।**

नगरीय निकाय आम चुनाव-2026 को शांतिपूर्ण, निष्पक्ष एवं सुव्यवस्थित रूप से सम्पन्न कराने के उद्देश्य से 8 सितंबर को सेठ मोतीलाल कॉलेज, झुंझुनूं एवं पोद्दार कॉलेज, नवलगढ़ में मतदान दलों की ब्रीफिंग आयोजित की गई। ब्रीफिंग के दौरान जिला कलक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी डॉ. अरुण गर्ग आईएएस तथा पुलिस अधीक्षक कावेंद्र सिंह सागर आईपीएस ने मतदान दलों को निर्वाचन प्रक्रिया से संबंधित आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। अधिकारियों ने मतदान कर्मियों को निर्वाचन आयोग के निर्देशों एवं निर्धारित प्रक्रिया की पूर्ण पालना सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। साथ ही मतदान केन्द्रों पर उपलब्ध आवश्यक व्यवस्थाओं का जायजा लेने और मतदान प्रक्रिया को निष्पक्ष एवं पारदर्शी तरीके से सम्पन्न कराने पर जोर दिया। मतदान केन्द्रों पर सुरक्षा व्यवस्था एवं कानून-व्यवस्था बनाए रखने को लेकर भी आवश्यक निर्देश दिए गए। मतदान दलों को कहा गया कि किसी भी प्रकार की समस्या, अव्यवस्था या संदिग्ध गतिविधि सामने आने पर इसकी तत्काल सूचना संबंधित अधिकारियों एवं पुलिस को दें। जिला प्रशासन एवं पुलिस ने स्वतंत्र, निष्पक्ष एवं भयमुक्त वातावरण में मतदान सम्पन्न कराने के लिए अपनी प्रतिबद्धता दोहराई।

# दुनिया के सबसे बड़े कबूतर के सिर पर है ताज

गौरा विक्टोरिया दुनिया की सबसे बड़ी जीवित कबूतर प्रजाति है। गौरा विक्टोरिया सबसे अद्भुत पक्षियों में से एक है। यह एक बड़ा नीला कबूतर है जिसके सिर पर एक भव्य लेस नुमा बड़ी सी कलगी लगी होती है। यह दुनिया का सबसे बड़ा जमीन पर ही विचरण करने वाला कबूतर है। यह न्यू गिनी का मूल निवासी है।

## रूप रंग और आकार

यह एक बड़े आकार का कबूतर है। जिसका लंबाई 73 से 75 सेंटीमीटर और वजन लगभग 3.5 किलो का होता है। इसे दुनिया का सबसे बड़ा जीवित कबूतर माना गया है। इसकी कलगी विक्टोरिया के ताज सी सुंदर होती है। इस ताज में लगभग 50 से 60 लंबे पतले तार नुमा पंख होते हैं। कलगी के जापानी पंखे जैसे पंख नीचे से नीले और उपर से एकदम सफेद होते हैं। ताज ही इसकी खास पहचान है। इसकी पूंछ में भी हल्के नीले रंग के 16 पंख होते हैं। उड़ने पर इनके पंखों से ताली बजाने जैसी आवाज आती है। यह झुंड में जमीन पर ही विचरण करते हैं। प्रजनन नम और सूखे मौसम में होता है। मादा पेड़ों पर टहनी और पत्तियों से बने घोंसले में केवल एक ही अंडा देती है। अंडा देने के एक सप्ताह पूर्व नर मादा के लिए घोंसला निर्माण सामग्री ला कर देता है। 30 दिन में अंडा फूटता है। इनका जीवन काल 20 से 25 वर्ष तक माना गया है।

## संरक्षण की स्थिति

इनके सुंदर कलगी के पंखो के कारण और इसके मांस के लिए इसका बहुत शिकार किया जाता है जिनकी मार्केट में बहुत मांग रहती है। दुनिया में अब ये केवल 10 हजार से लेकर 20 हजार की संख्या में ही बचे हैं।

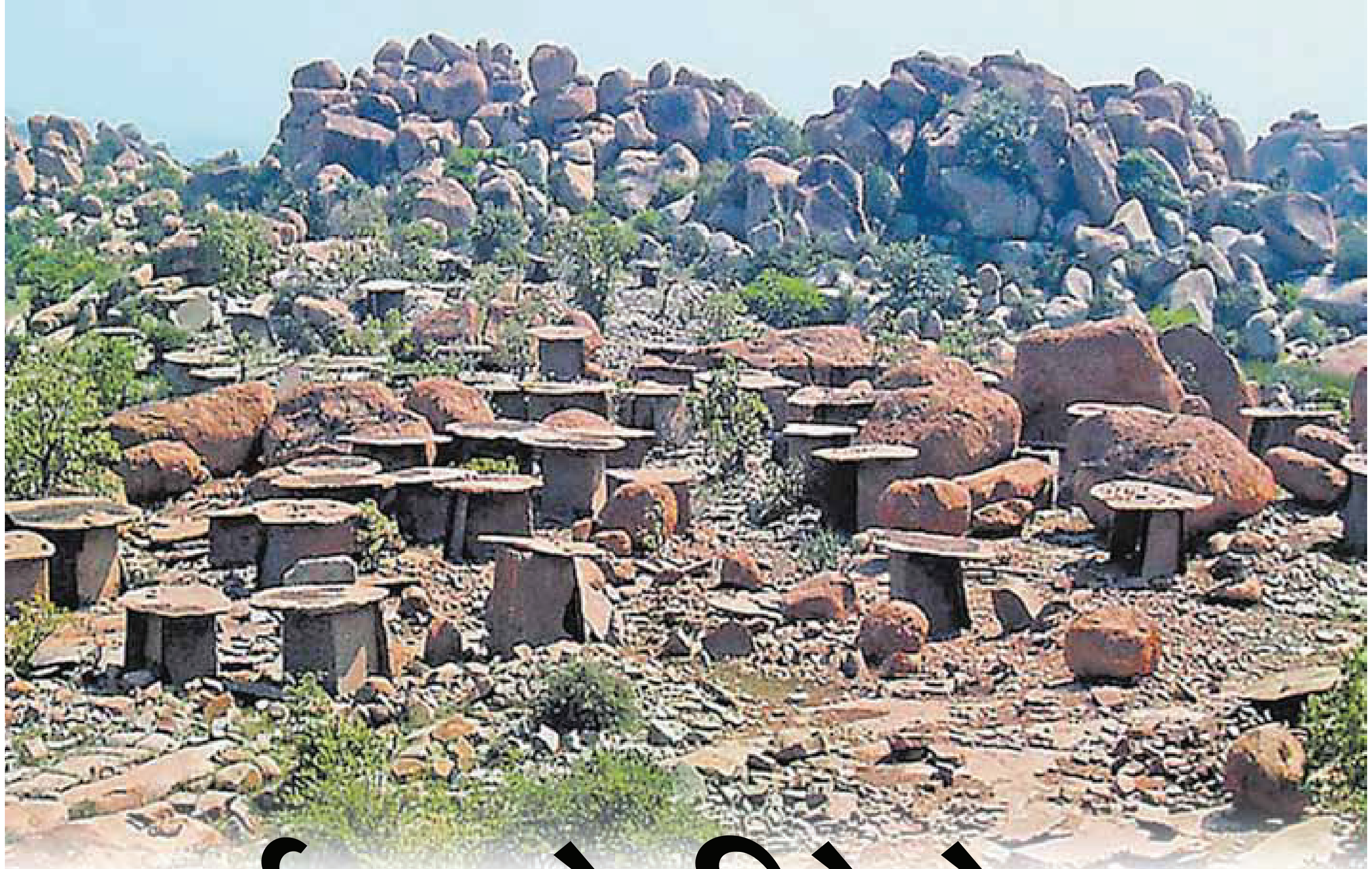

# कर्नाटक के हिरे बेनकल की रहस्यमयी पहाड़ी

## अलौकिक शक्तियों वाले बौनों का अनसुलझा इतिहास

**कर्नाटक के धूल भरे रास्तों से गुजरते हुए, जहां सूरज की किरणें पत्थरों को सोने-सा चमकाती हैं, एक ऐसी जगह छिपी है जो समय की धुंध में खोई हुई प्रतीत होती है। हिरे बेनकल, जिसे स्थानीय भाषा में 'मोरियर गुड्डा' यानी 'बौनों की पहाड़ी' कहा जाता है, दक्षिण भारत का एक प्रागैतिहासिक चमत्कार है। लगभग 3,000 साल पुरानी इस जगह पर करीब 1,000 मेगालिथिक संरचनाएं, जिन्हें डोल्मेन कहा जाता है, बिखरी पड़ी हैं। ये तीन तरफा पत्थरों के कमरे, 8-10 फीट ऊंचे, विशाल पत्थरों की छतों (कैपस्टोन) के साथ, न केवल पुरातात्विक खजाना हैं, बल्कि एक ऐसी कहानी बयां करते हैं जो विज्ञान और लोक कथाओं के बीच झूलती है।**

### पत्थरों पर दर्ज कहानियां

हिरे बेनकल की पहाड़ी दक्षिण भारत के सबसे बड़े कब्रगाहों (नेक्रोपोलिस) में से एक है। ये डोल्मेन, जो 1000 ईसा पूर्व से 200 ईसा पूर्व के बीच, नवपाषाण युग से लौह युग तक बनाए गए, प्राचीन कब्रें हैं। प्रत्येक डोल्मेन एक छोटा-सा कमरा है, जिसके ऊपर भारी-भरकम कैपस्टोन छत की तरह रखा गया है। कुछ डोल्मेन में गोल छेद बने हैं, जो खिड़कियों जैसे दिखते हैं, मानो ये पत्थरों के घर हों। स्थानीय लोग इन्हें 'मोरियर माने' यानी 'बौनों के घर' कहते हैं। इन संरचनाओं को देखकर ऐसा लगता है जैसे आप किसी भूतिया शहर में चल रहे हों, लेकिन ये मृतकों की स्मृति में बनाए गए स्मारक हैं।

लोककथाओं में इनका जिक्र और भी रोमांचक है। कहा जाता है कि इन्हें इंसानों ने नहीं, बल्कि 'मोरियर' नामक बौनों की एक विलुप्त प्रजाति ने बनाया था। ये छोटे कद के प्राणी अलौकिक

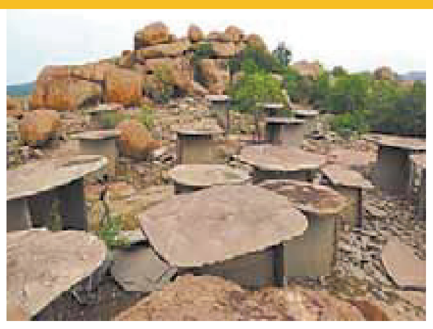

शक्तियों और गजब की इंजीनियरिंग प्रतिभा के मालिक थे। कुछ डोल्मेन में बने सटीक गोल छेद देखकर स्थानीय लोग दांतों तले उंगली दबा लेते हैं। उनके लिए उस युग में ऐसी कारीगरी इंसानों के बस की बात नहीं थी। एक किंवदंती यह भी है कि ये बौने आग की बारिश में खत्म हो गए, लेकिन उनके बनाए ये पत्थर आज भी उनकी मौजूदगी की गवाही देते हैं। रात के सन्नाटे में इन डोल्मेन के आसपास अजीब-सी आवाजें सुनाई देने की बातें भी प्रचलित हैं, मानो बौने अब भी अपनी रचनाओं की रखवाली कर रहे हों।

### विज्ञान और किंवदंती का संगम

हिरे बेनकल सिर्फ लोक कथाओं का ठिकाना नहीं, बल्कि पुरातत्वविदों के लिए एक अनसुलझी पहेली है। नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस्ड साइंसेज के प्रोफेसर श्रीकुमार मेनन इन बौनों की कहानियों को प्राचीन भारतीयों की सांस्कृतिक स्मृति से जोड़ते हैं। वे इन्हें इंडोनेशिया में मिले 'हॉबिट' (होमो फ्लोरेसिएंसिस) जैसी छोटे कद की मानव प्रजाति से जोड़कर देखते हैं। क्या ये डोल्मेन वाकई किसी ऐसी प्रजाति ने बनाए थे, जो इतिहास के पन्नों से गायब हो चुकी है? या फिर ये प्राचीन भारतीयों की उन्नत इंजीनियरिंग का नमूना हैं, जिन्हें समय ने रहस्यमयी बना दिया?

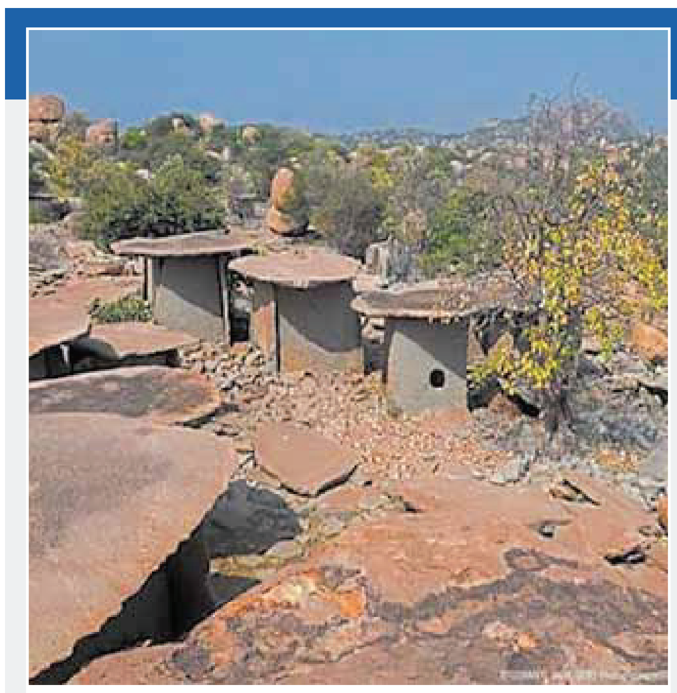

### दुनिया की नजरों से ओझल

हैरानी की बात है कि जहां ब्रिटेन का स्टोनहेंज हर साल लाखों पर्यटकों को खींचता है, वहीं हिरे बेनकल की ये प्राचीन रचनाएं दुनिया की नजरों से लगभग ओझल हैं। पास में स्थित हम्पी के भव्य मंदिरों की चमक में यह पहाड़ी कहीं दब-सी गई है। व्लॉगर नम्रता के 'नम्रता'ह्य मंत्रा' के अनुसार, कुछ महीनों में यहां मुश्किल से 20-30 यात्री ही पहुंचते हैं। जो आते हैं, वे इस जगह की शांति और रहस्य से अभिभूत हो जाते हैं। सूरज ढलते ही जब ये पत्थर सुनहरी रोशनी में नहाते हैं, तो ऐसा लगता है मानो समय ठहर गया हो। हिरे बेनकल को यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल का दर्जा दिलाने की कोशिश चल रही हैं। पुरातत्वविदों और संरक्षणवादियों का मानना है कि यह भारत की सबसे अनमोल धरोहरों में से एक है। लेकिन इसके साथ एक चिंता भी जुड़ी है। अगर यह पर्यटकों के लिए खुल गया, तो क्या ये नाजुक संरचनाएं अनियंत्रित भीड़ का सामना कर पाएंगी? कई डोल्मेन पहले ही समय और प्रकृति की मार झेल चुके हैं। कुछ पत्थर टूट चुके हैं, तो कुछ पर आधुनिक पर्यटकों की 'खुदाई' ने निशान छोड़ दिए हैं।एक अनूठा निमंत्रण हिरे बेनकल सिर्फ पत्थरों का ढेर नहीं, बल्कि एक ऐसी जगह है जहां इतिहास, रहस्य और प्रकृति एक-दूसरे से गले मिलते हैं।

इन डोल्मेन के बीच चलते हुए आप उन प्राचीन बौनों की कहानियों को महसूस कर सकते हैं, जो शायद कभी हकीकत थे या शायद लोककथाओं की देन। ये संरचनाएं हमें अपने अतीत से जोड़ती हैं और यह सवाल छोड़ जाती हैं कि क्या हम वाकई अपने इतिहास को पूरी तरह समझ पाए हैं? अगर आप रोमांच और रहस्य के शौकीन हैं, तो हिरे बेनकल की सैर आपके लिए एक अनोखा अनुभव हो सकता है। लेकिन याद रखिए, जब आप इन पत्थरों के बीच चले, तो शायद कोई 'मोरियर' आपकी ओर देख रहा हो, अपनी बनाई इस दुनिया को संभालने की कोशिश में।

# मोटी लाल चोंच वाला किंगफिशर 'स्टार्क बिल्ड'

'स्टार्क निल्ड' एक बड़ा किंगफिशर है। यह विभिन्न प्रकार के वृक्षीय आव्जासों में पाया जाता है जैसे झील के किनारे, नदियों और समुद्री तटी के आसपास। भारतीय उपमहाद्वीप में यह राजस्थान और अन्य शुष्क क्षेत्रों को छोड़कर सभी जगह पाया जाता है। इसके अलावा यह दक्षिण पूर्वी एशिया, बांग्लादेश, बर्मा और श्रीलंका से लेकर इंडोनेशिया तक पाया जाता है। इसका वैज्ञानिक नाम पेलोगॉप्सिस कैपेसिस है।

## पानी में भी कर लेता है शिकार

यह एक बड़ा किंगफिशर है जिसकी लंबाई 25 से 38 सेंटीमीटर और बजन 140 से 200 ग्राम तक का होता है। वयस्क पक्षी की पीठ हरी-नीली, पंख नीले और पूंछ भी नीले रंग की होती है। यह पक्षी पानी में भी शिकार कर लेता है।

## शिकार क्षेत्र की रक्षा करता है

यह अपने भोजन की तलाश में पेड़ों की टहनी पर शांति से बैठा रहता है। आकार में काफी बड़ा होने के बावजूद भी आसानी से नजर नहीं आता और अन्य शिकारी पक्षियों से अपने शिन्कार क्षेत्र का रक्षण करता है। भोजन में मछलिया, छोटे पक्षी, मेङक, केकड़े और चूहे शामिल हैं। अधांत या पूर्ण रूप से मांसाहारी पक्षी है और 1 दिन में 15 से 20 मछलियां तक खा जाता है।

## सड़ते हुए पेड़ में बनाते हैं घोंसला

इनका प्रजनन काल जनवरी से सितंबर तक सलता है। नयरक पक्षी नदियों के किनारे या सड़ते हुए पेड़ या दीमक की नालियों में अपना घोराला खोदकर बनाते हैं। नर और गादा दोनों चूजों की देखभाल करते हैं। गादा एक बार में 2 से 5 तक अंडे देती है जो सफेद चमकदार और गोल होते हैं।

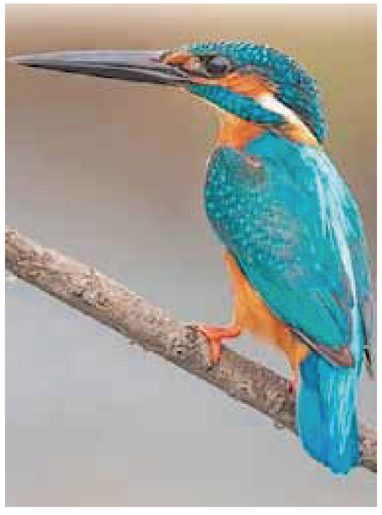

# ये है भारत की एकमात्र ट्रेन जिसमें यात्रा करना है बिल्कुल मुफ्त!

भारत में ट्रेन परिवहन का एक मुख्य साधन हैं। रोज हजारों लोग ट्रेन के माध्यम से अपने गंतव्य तक पहुंचाते हैं। ट्रेन का सफर वास्तव में बहुत ही सुविधाजनक होता है जिसमें आप बहुत थोड़े किराए में आरामदायक सफर तय कर सकते हैं। लेकिन क्या आप जानते हैं भारत में एक ऐसी ट्रेन है जिसमें यात्रा बिल्कुल मुफ्त है? जी हां, भारत की एकमात्र ऐसी ट्रेन है जिसमें यात्रा बिल्कुल मुफ्त है। इस ट्रेन में सफर करने के लिए आपको एक भी रुपया नहीं देना होता है। आइए आज इस लेख में हम आपको बताते हैं देश की इस अनोखी ट्रेन के बारे में। कौन सी है यह ट्रेन और क्या है इसका इतिहास और इस अनोखी सुविधा के पीछे का कारण।

## भाखड़ा नंगल ट्रेन का इतिहास

इस ट्रेन का इतिहास भाखड़ा नंगल बांध के निर्माण से जुड़ा हुआ है। 1948 में जब भाखड़ा नंगल बांध का निर्माण कार्य चल रहा था, तब इस क्षेत्र में काम करने वाले मजदूरों को आने-जाने के लिए एक सुविधाजनक साधन की आवश्यकता थी। इसीलिए इस ट्रेन का निर्माण किया गया था। शुरुआत में इस ट्रेन का इस्तेमाल केवल बांध निर्माण कार्य में लगे मजदूर ही करते थे। लेकिन बाद में इसे आम जनता के लिए भी खोल दिया गया। इस ट्रेन को मुफ्त में चलाने का फैसला इसलिए लिया गया ताकि इस क्षेत्र के लोगों को एक सस्ती और सुविधाजनक यात्रा का साधन मिल सके।

भाखड़ा नंगल ट्रेन पंजाब और हिमाचल प्रदेश के बीच चलती है। यह ट्रेन शिवालिक पहाड़ियों के बीच से होकर गुजरती है। इस ट्रेन में सफर करते हुए आप खूबसूरत प्राकृतिक दृश्य देख सकते हैं।

## ट्रेन का भविष्य

हालांकि भाखड़ा नंगल ट्रेन एक अनोखी और लोकप्रिय ट्रेन है, लेकिन इसे कई चुनौतियों का सामना भी करना पड़ रहा है। इनमें से एक चुनौती है ट्रेन के रखरखाव की। इसके अलावा, इस ट्रेन को चलाने में लगने वाले खर्च को भी पूरा करना एक चुनौती है।

## भाखड़ा नंगल ट्रेन की विशेषताएं

- **मुफ्त यात्रा:** इस ट्रेन में यात्रा बिल्कुल मुफ्त है।
- **खूबसूरत दृश्य:** इस ट्रेन में सफर करते हुए आप खूबसूरत प्राकृतिक दृश्य देख सकते हैं।
- **ऐतिहासिक महत्व:** इस ट्रेन का इतिहास भाखड़ा नंगल बांध के निर्माण से जुड़ा हुआ है।

स्थानीय लोगों के लिए सुविधाजनक: यह ट्रेन स्थानीय लोगों के लिए एक सुविधाजनक यात्रा का साधन है।

# भारत विकास परिषद नीमराना की राष्ट्रीय सामूहिक गान प्रतियोगिता सम्पन्न, एमडीवीएम पारले स्कूल ने मारी बाजी

भीम प्रज्ञा न्यूज.नीमराना।

**रमेश चंद ।** भारत विकास परिषद, नीमराना के तत्वावधान में मंगलवार को आर्य पब्लिक स्कूल में राष्ट्रीय सामूहिक गान प्रतियोगिता का भव्य आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में क्षेत्र के 6 विद्यालयों के विद्यार्थियों ने भाग लेकर देशभक्ति गीतों की मनमोहक प्रस्तुतियां दीं और पूरे परिसर को देशभक्ति के रंग में रंग दिया। कार्यक्रम का शुभारंभ स्वामी विवेकानंद जी के चित्र पर माल्यार्पण कर किया गया। प्रतियोगिता में निर्णायक मंडल की भूमिका डॉ. बलवंत शास्त्री एवं जयसिंह ने निभाई। निर्णायकों द्वारा सभी टीमों की प्रस्तुतियों का बारीकी से मूल्यांकन कर परिणाम घोषित किया गया। प्रतियोगिता में एमडीवीएम स्कूल पारले ने प्रथम, ऑक्सफोर्ड पब्लिक स्कूल शाहजहांपुर ने द्वितीय तथा आर्य विद्या मंदिर ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। विजेता टीमों को भारत विकास परिषद द्वारा

सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि राजवीर सिंह यादव ने विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन करते हुए कहा कि इस प्रकार की प्रतियोगिताएं बच्चों में राष्ट्रप्रेम, अनुशासन, संस्कार एवं आत्मविश्वास को मजबूत करती हैं। उन्होंने विद्यार्थियों से जीवन में लक्ष्य निर्धारित कर निरंतर आगे बढ़ने का आह्वान किया। कार्यक्रम का सफल एवं प्रभावशाली मंच संचालन राजेन्द्र कुमार यादव ने अपनी ओजपूर्ण शैली में किया। परिषद के सचिव शशांक भारद्वाज ने बताया कि यह प्रतियोगिता शाखा स्तरीय थी। इसमें प्रथम स्थान प्राप्त करने वाली टीम अब 13 सितंबर को सीकर में आयोजित होने वाली प्रांत स्तरीय प्रतियोगिता में भाग लेगी और प्रांत स्तर पर विजेता रहने वाली टीम को राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता में भाग लेने का अवसर मिलेगा। इस अवसर पर अध्यक्ष अनिल कुमार, सचिव शशांक भारद्वाज, कोषाध्यक्ष सतवीर यादव, सदस्य धर्मेंद्र यादव, राष्ट्रीय मानवाधिकार एवं सामाजिक न्याय परिषद भारत के प्रदेश उपाध्यक्ष महावीर प्रसाद चारखिया, संयोजक रविन्द्र कुमार यादव सहित विद्यालय स्टाफ एवं परिषद के सदस्य उपस्थित रहें।

# अन्तर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस पर नूनिया गोठड़ा विद्यालय में आयोजित हुआ कार्यक्रम

भीम प्रज्ञा न्यूज.चिड़ावा।

अन्तर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस के अवसर पर मंगलवार, 8 सितंबर 2026 को शहीद सूबेदार निहाल सिंह राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय नूनिया गोठड़ा में एक विशेष समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता विद्यालय के प्रधानाचार्य ने की। समारोह की शुरुआत मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी डॉ. उमादत झाझडिया एवं अतिरिक्त मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी सुरेश कुमार पायल ने की। अधिकारियों ने दीप प्रज्वलन कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया और उपस्थित लोगों को साक्षरता के महत्व तथा जीवन में इसकी उपयोगिता पर संबोधित किया। कार्यक्रम के दौरान विद्यार्थियों ने साक्षरता के महत्व को

दर्शाती सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दीं। छात्राओं ने साक्षरता पर आधारित एक हास्यप्रद व रोचक नाटक प्रस्तुत कर दर्शकों को जागरूक किया। वहीं, लर्नर मोतीराम ने साक्षरता पर एक प्रेरणादायी गीत व भजन प्रस्तुत कर सभी का ध्यान खींचा। ब्लॉक साक्षरता समन्वयक सुनीता ने साक्षरता के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाले सर्वश्रेष्ठ लर्नर्स, साक्षरता प्रभारियों और वीटी (वॉलंटियर टीचर्स) को प्रमाण पत्र एवं मोमेंटो प्रदान कर सम्मानित किया। समारोह के समापन पर प्रधानाचार्य और ब्लॉक साक्षरता प्रभारी ने जन-जागरूकता पर बल देते हुए कहा कि साक्षरता ही जीवन की प्रगति का मुख्य स्रोत है। अंत में विभिन्न गतिविधियों में भाग लेने वाले छात्र-छात्राओं को पुरस्कार देकर उनका उत्साहवर्धन किया गया।

# चौधरी स्व. श्री नथमल ढाका की प्रथम पुण्यतिथि पर आयोजित स्वैच्छिक रक्तदान शिविर में 317 यूनिट रक्त का हुआ संग्रहण

भीम प्रज्ञा न्यूज.लक्ष्मणगढ़।

जाट समाज लक्ष्मणगढ़ के पूर्व अध्यक्ष चौधरी स्व. श्री नथमल ढाका की प्रथम पुण्यतिथि पर मंगलवार को चौधरी निवास आयोजित स्वैच्छिक रक्तदान शिविर में 317 यूनिट रक्त का संग्रहण हुआ। शिविर का शुभारम्भ संत विकास नाथ महाराज एवं लक्ष्मणगढ़ जाट समाज के अध्यक्ष नेमीचंद ढाका ने दीप प्रज्वलन कर किया गया। शिविर में श्री कल्याण राजकीय चिकित्सालय सीकर, प्रिंस ब्लड सेंटर, शेखावाटी चैरिटेबल ब्लड सेंटर,सीकर ब्लड सेंटर की टीमों ने रक्त संग्रहण किया। इस अवसर पर नवरंग चौधरी, अरुण चौधरी, राजकुमार भास्कर, मदन सेवदा,

नरेन्द्र बाटड़, जितेन्द्र ढाका, सत्येन्द्र आर्य, जीतू डोटासरा, सुरेंद्र गोदारा, हरीश फौजी, नथमल बोला, हंसराज बाटड़, कुलदीप ढाका, महेश ढाका, विकास गोदारा, महेन्द्र ढाका, जोगेन्द्र सिंह सूंडा प्रिंस ,रामनिवास ढाका, घनश्याम नरसास, बाबूलाल ढाका, एडवोकेट बाबूलाल ढाका, एडवोकेट राजकुमार राड़, विद्याधर कंटेवा, प्रसिद्ध कॉमेडियन बनवारी गोस्वामी, हरफूल गोदारा, बनवारी ढाका सनवाली, ईश्वर चाहर, हरि सेवदा, राजेश बाटड़, अशोक थालौड़, बाबू लाल गोदारा, संदीप पारीक, प्रदीप पारीक, बलबीर सारण, बलबीर भोजासर, विजेन्द्र सेवदा, जयप्रकाश ढाका, निवास ढाका, पवन सैनी, संजीव भानुका, मनोज सारण, नंदकिशोर सारण, गणेश चाहर, मामराज गढ़वाल,भंवर गढ़वाल, रमेश गढ़वाल, मनोज सैनी, सुरेन्द्र ढाका अलखपुरा बोगन आदि ने शिविर में पहुंचकर रक्तदाताओं की होसला अफजाई की। कार्यक्रम का संचालन राजेन्द्र बीरड़ा ने किया गया। रक्तदाताओं को प्रशस्ति पत्र व प्रतिक चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया। रामस्वरूप ढाका ने आभार व्यक्त किया।

# योग एवं ध्यान के क्षेत्र में अतुलनीय योगदान के लिए महेंद्र सिंह यादव 'मानद डॉक्टरेट' की उपाधि से सम्मानित

भीम प्रज्ञा न्यूज.चिड़ावा।

राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सामाजिक सुधारों के क्षेत्र में कार्यरत प्रतिष्ठित संस्था 'ट्रूइंटेक्स रिफॉर्म फाउंडेशन' द्वारा नई दिल्ली में आयोजित भव्य 'एनुअल अवॉर्ड सेरेमनी 2026' में समाजसेवी महेंद्र सिंह यादव को 'मानद डॉक्टरेट' की उपाधि से विभूषित किया गया। उन्हें यह सर्वोच्च सम्मान योग और ध्यान के क्षेत्र में दिए गए उनके उत्कृष्ट योगदान और निस्वार्थ समाज सेवा के लिए प्रदान किया गया है। ?समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में पूर्व ब्यूरोक्रेट एवं वरिष्ठ प्रशिक्षक डॉ. हिमानी वर्मा उपस्थित रहीं। विशिष्ट अतिथि के रूप में प्रसिद्ध सोशल मीडिया

इन्फ्लुएंसर संदीप शर्मा और अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी मिस कशिश ने शिरकत की। ?कार्यक्रम के दौरान मुख्य अतिथि डॉ. हिमानी वर्मा ने महेंद्र सिंह यादव को मानद डॉक्टरेट की उपाधि, प्रशस्ति पत्र और मेडल सौंपकर सम्मानित किया। उन्होंने महेंद्र सिंह यादव द्वारा जन-जन तक योग, मानसिक शांति और आरोग्य पहुँचाने के निरंतर प्रयासों की भूरि-भूरि प्रशंसा की। ?सम्मान प्राप्त करने के बाद डॉ. महेंद्र सिंह यादव ने फाउंडेशन का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि यह सम्मान उन्हें समाज सेवा और योग-ध्यान के प्रचार-प्रसार के लिए और अधिक ऊर्जा व निष्ठा के साथ कार्य करने की प्रेरणा देगा। समारोह में देश-विदेश की कई नामचीन हस्तियाँ और गणमान्य लोग मौजूद रहें।

# सूखे कुएं बने 'डेथ ट्रैप' और कसावती नदी में बहते सीवर के पानी से पटीकरा में गहराया स्वास्थ्य व सुरक्षा संकट

## ग्रामीणों ने समाधान शिविर में उठाई आवाज, उपायुक्त ने समस्या के निवारण का दिया आश्वासन

भीम प्रज्ञा न्यूज.नारनौल।

गांव पटीकरा के ग्रामीणों ने गांव की गंभीर पेयजल, पर्यावरणीय और सुरक्षा संबंधी समस्याओं को लेकर उपायुक्त महोदया को 'समाधान शिविर' के माध्यम से एक ज्ञापन सौंपा है। ग्रामीणों ने सूखे कुओं को ढकवाने और कसावती (कृष्णावती) नदी में बहाए जा रहे गंदे सीवर के पानी पर तुरंत रोक लगाने की पुरजोर मांग की है। ग्रामीणों के अनुसार अविभाजित पंजाब के समय कसावती नदी के किनारे बनाए गए कुओं का समूह भूजल स्तर गिरने से पूरी तरह सूख चुका है। देखरेख के अभाव में ये कुएं अब 'मौत के कुएं' बन गए हैं, जिनमें गिरकर कई इंसान और मवेशी अपनी जान गंवा चुके हैं। जन-धन की सुरक्षा के लिए इन्हें जल्द से जल्द भरवाने या पक्के ढक्कन से ढकने की मांग की गई है। इसके साथ ही, गांव की पूर्व दिशा में बहती कसावती नदी में नारनौल शहर के एक बड़े हिस्से और गांव के गंदे सीवर का पानी बिना उपचारित किए लगातार छोड़ा जा रहा है। रेलवे पुल से लेकर

श्मशान घाट तक जमा यह जहरीला पानी भारी दुर्गंध और बीमारियां फैला रहा है। इससे भूजल प्रदूषित हो रहा है, जिससे पेयजल और कृषि भूमि दोनों को नुकसान पहुंच रहा है। नदी का मार्ग बंद होने से आमजन और पशुओं की आवाजाही भी पूरी तरह ठप हो गई है।

समाधान शिविर में पूर्व वरिष्ठ प्रबंधक प्यारेलाल चवन, पूर्व हेड मास्टर सतीश तंवर, नंबरदार जोरावर सिंह, पार्षद योगेश कुमार (वार्ड 6), पार्षद रितु प्रसाद (वार्ड 7), अंबेडकर युवा मंडल प्रधान करण सिंह और उपाध्यक्ष सुजान सिंह ने इस दीर्घकालिक समस्या का समाधान न होने पर गहरा रोष जताया। वहीं, संघर्ष समिति के महासचिव एवं कबीर सामाजिक उत्थान संस्था के वाइस चेयरमैन बिरदी चंद गोठवाल ने कहा कि यह केवल पटीकरा की नहीं बल्कि पूरे जिले से जुड़ी एक गंभीर समस्या है। यदि प्रशासन इसका निष्पक्ष सर्वे करवाए तो वास्तविक स्थिति सामने आ जाएगी। मामले की गंभीरता को देखते हुए माननीय उपायुक्त महोदया ने ग्रामीणों को इस जनसमस्या का शीघ्र अति शीघ्र उचित निवारण कराने का आश्वासन दिया है।

# मतदान से पहले मैदान में उतरा प्रशासन, मंडावर-महवा में व्यवस्थाओं की परखी नब्ज

## जिला निर्वाचन अधिकारी व निर्वाचन पर्यवेक्षक ने मतदान केंद्रों से लेकर स्ट्रांग रूम तक लिया जायजा, अधिकारियों को दिए निष्पक्ष एवं शांतिपूर्ण मतदान के निर्देश।

भीम प्रज्ञा न्यूज.दौसा/मंडावर।

**मनोज खंडेलवाल ।** नगर निकाय आम चुनाव-2026 के प्रथम चरण के मतदान से पहले प्रशासन ने तैयारियों को अंतिम रूप देने के लिए मोर्चा संभाल लिया है। मंगलवार को जिला निर्वाचन अधिकारी एवं जिला कलक्टर डॉ. सौम्या झा और निर्वाचन पर्यवेक्षक डॉ. टी. शुभमंगला ने जिले के विभिन्न क्षेत्रों का दौरा कर मतदान व्यवस्थाओं की जमीनी हकीकत परखी।जिला निर्वाचन अधिकारी डॉ. सौम्या झा ने मंडावर और महवा क्षेत्र में मतदान दलों के प्रशिक्षण तथा विभिन्न मतदान केंद्रों का निरीक्षण किया। उन्होंने मतदान केंद्रों पर आवश्यक सुविधाओं, मतदाताओं के लिए उपलब्ध व्यवस्थाओं और चुनाव संबंधी तैयारियों की जानकारी लेते हुए संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। उन्होंने मतदान दलों से निष्पक्षता और निर्भीकता के साथ शांतिपूर्ण मतदान संपन्न कराने पर जोर दिया। वहीं निर्वाचन पर्यवेक्षक डॉ. टी. शुभमंगला ने भांडारेज, बांदीकुई, बसवा, मंडावर और महवा क्षेत्र का दौरा किया। उन्होंने मतदान दलों के प्रशिक्षण, मतदान सामग्री के प्रबंधन और मतदान के बाद ईवीएम व निर्वाचन सामग्री जमा कराने के लिए बनाए गए स्ट्रांग रूम की व्यवस्थाओं का निरीक्षण किया। मतदान केंद्रों पर पहुंचकर उन्होंने मतदाताओं के लिए उपलब्ध सुविधाओं और सुरक्षा इंतजामों की भी जानकारी ली।

अधिकारियों ने स्पष्ट किया कि मतदान से जुड़ी सभी व्यवस्थाएं निर्धारित समय से पहले पूरी कर ली जाएं, ताकि मतदान दिवस पर किसी भी मतदाता या मतदान दल को परेशानी का सामना नहीं करना पड़े। निष्पक्ष, स्वतंत्र और शांतिपूर्ण मतदान के लिए प्रशासन की तैयारियों को लेकर अधिकारियों ने संबंधित कार्मिकों को पूरी गंभीरता और जिम्मेदारी के साथ दायित्व निभाने के निर्देश दिए।चुनाव के इस अंतिम पड़ाव में प्रशासन की निगाह अब बूथ से लेकर स्ट्रांग रूम तक हर व्यवस्था पर है—क्योंकि लोकतंत्र के इस उत्सव में एक-एक वोट की सुरक्षा और निष्पक्षता ही सबसे बड़ी कसौटी है।

# चिड़ावा में श्री राणी सती दादी जी का दो दिवसीय वार्षिक महोत्सव 10 सितंबर से

## मंगल पाठ, भव्य धार्मिक झांकियां, राधा-कृष्ण होली और छप्पन भोग रहेंगे मुख्य आकर्षण

भीम प्रज्ञा न्यूज.चिड़ावा।

नगर के प्रतिष्ठित श्री राणी सती मंदिर में दो दिवसीय वार्षिक उत्सव एवं भादो अमावस्या मेले का आयोजन 10 एवं 11 सितंबर 2026 को श्रद्धा और उल्लास के साथ किया जाएगा। श्री राणी सती मंदिर ट्रस्ट, चिड़ावा की ओर से आयोजित होने वाले इस धार्मिक महोत्सव को लेकर श्रद्धालुओं में खासा उत्साह है।उत्सव के पहले दिन 10 सितंबर को दोपहर 12:15 बजे से विशाल मंगल पाठ का आयोजन होगा। मुंबई के प्रसिद्ध भजन गायक राकेश बावलिया एवं मंडली द्वारा सुमधुर भजनों के साथ दादी जी का मंगल पाठ प्रस्तुत किया जाएगा। इस दौरान कोलकाता के सुगंधित फूलों से दादी जी का भव्य दरबार एवं श्रृंगार सजाया जाएगा। दिल्ली के कलाकारों द्वारा धार्मिक झांकियां प्रस्तुत की जाएंगी। वहीं वृंदावन से आए कलाकार राधा-कृष्ण होली का अलौकिक मंचन करेंगे। श्रद्धालुओं के लिए पुष्प एवं इत्र वर्षा की भी विशेष व्यवस्था रहेगी। शाम 7:30 बजे दादी जी को 56 भोग अर्पित कर महाआरती की जाएगी। 11 सितंबर को भादो अमावस्या के मुख्य पर्व पर सुबह से ही मंदिर में धार्मिक अनुष्ठान शुरू होंगे। सुबह 6:30 बजे प्रातःकालीन आरती होगी और इसी समय से श्रद्धालु दादी जी के दरबार में जात-पूजन एवं धोक लगा सकेंगे। शाम 7:30 बजे संध्या आरती संपन्न होगी। भादो अमावस्या के अवसर पर 11 सितंबर को दोपहर 3 बजे से श्री राणी सती मैरिज ग्राउंड में विशाल मेले का आयोजन किया जाएगा। मेले में श्रद्धालुओं के लिए तीखी-मीठी चटपटी चाट एवं प्रसाद वितरण की व्यवस्था रहेगी। श्री राणी सती मंदिर ट्रस्ट, चिड़ावा ने समस्त धर्मप्रेमी जनता से परिवार सहित इस भव्य धार्मिक आयोजन में शामिल होकर दादी जी का आशीर्वाद प्राप्त करने की अपील की है।

# मंडावर महवा रोड स्टेशन पर लगी 'जन अदालत', 56 रेलकर्मियों की समस्याओं का मौके पर समाधान

## UMID के 15 और HRMS के 41 प्रकरणों का हुआ निस्तारण।

भीम प्रज्ञा न्यूज.मंडावर।

**मनोज खंडेलवाल ।** रेल कर्मचारियों की सेवा संबंधी समस्याओं के त्वरित समाधान के लिए मंडावर महवा रोड रेलवे स्टेशन पर जन अदालत शिविर आयोजित किया गया। मंडल रेल प्रबंधक, आगरा गगन गोयल के मार्गदर्शन और वरिष्ठ मंडल कार्मिक अधिकारी अरुण सिंह तोमर के निर्देशन में आयोजित शिविर में 56 रेल कर्मचारियों ने भाग लिया। शिविर में कर्मचारियों से संबंधित यूएमआईडी के 15 और एचआरएमएस के 41 प्रकरण प्राप्त हुए। कर्मचारियों की ओर से प्रस्तुत सभी प्रकरणों पर आवश्यक कार्रवाई करते हुए मौके पर ही निस्तारण किया गया। इससे कर्मचारियों को अपनी सेवा

संबंधी समस्याओं के समाधान के लिए संबंधित कार्यालयों के चक्कर लगाने के बजाय एक ही मंच पर समाधान की सुविधा मिली। जन अदालत का उद्देश्य कर्मचारियों की समस्याओं को प्राथमिकता से सुनकर उनका त्वरित और प्रभावी समाधान सुनिश्चित करना रहा। आगरा मंडल की ओर से कर्मचारी हित में इस तरह के शिविर आयोजित किए जा रहे हैं, ताकि सेवा संबंधी मामलों के निस्तारण के लिए कर्मचारियों को सुविधाजनक और पारदर्शी व्यवस्था मिल सकें।कर्मचारियों की समस्या जब पहुंची समाधान के द्वार, तो जन अदालत बनी राहत का आधार।

# दौसा जिले में 157 क्रिटिकल पोलिंग बूथ: 1500 जवान-40 पुलिस मोबाइल पार्टियां रहेंगी तैनात

भीम प्रज्ञा न्यूज

**दौसा ।** दौसा नगर निकाय चुनाव के तहत स्वतंत्र, निष्पक्ष, पारदर्शी, शांतिपूर्ण मतदान के लिए पुलिस-प्रशासन तैयार है। पहले चरण में 9 सितम्बर को बांदीकुई, बसवा, भांडारेज, सिकराय, महवा और मंडावर नगर पालिका क्षेत्रों में होने वाले चुनाव में 1500 पुलिसकर्मी, आरएसी-होमगार्ड का

जाब्ता तैनात रहेगा। साथ ही 40 पुलिस मोबाइल पार्टियां बनाई गई हैं। पहले चरण के चुनाव के लिए मोबाइल पार्टियां संबंधित नगर निकाय क्षेत्रों में पहुंच गई हैं।

**157 बूथ क्रिटिकल -** जिले में 11 नगर निकायों में कुल 362 मतदान बूथ रहेंगे। इनमें 157 क्रिटिकल बूथ हैं। दौसा में 38, महवा में 17, लालसोट में 16, बांदीकुई, मंडावर में 15-15, सिकराय में 13, रामगढ़ पचवारा, भांडारेज में 12-12, मंडावरी में 7, बसवा, लवाण में 6-6 क्रिटिकल बूथ हैं। पहले चरण के चुनाव के लिए 1500 पुलिसकर्मी, आरएसी, होमगार्ड तैनात रहेंगे। इनमें आरएसी की दो कंपनियां भी शामिल हैं। पुलिस मोबाइल पार्टियों के अलावा सुपरवाइजर अधिकारी भी रहेंगे। इंस्पेक्टर, आरपीएस अधिकारियों को सुपरवाइजर अधिकारी लगाया गया है। क्रिटिकल मतदान भवनों के लिए 1 अधिकारी, 4 जवानों का जाब्ता तैनात किया जाएगा।

**एसपी बोले- भयमुक्त चुनाव कराना प्राथमिकता** एसपी पीयूष दीक्षित ने पुलिस मोबाइल पार्टियों, सुपरवाइजर अधिकारियों की ब्रीफिंग के दौरान कहा कि मतदान शांतिपूर्ण, निष्पक्ष, भयमुक्त वातावरण में कराना पुलिस की प्राथमिकता है। किसी भी स्थिति में कानून-व्यवस्था बिगाड़ने का प्रयास करने वालों के खिलाफ सख्ती से कार्रवाई की जाए।

# यूनिवर्सिटी में देसी-विदेशी भाषाओं के लिए खुलेगा भाषा केंद

## सुखाड़िया यूनिवर्सिटी एकेडमिक काउंसिल की बैठक में हुए महत्वपूर्ण निर्णय

भीम प्रज्ञा न्यूज

**उदयपुर ।** उदयपुर की मोहनलाल सुखाड़िया यूनिवर्सिटी में एकेडमिक काउंसिल की बैठक मंगलवार को अतिथि गृह सभागार में कुलगुरु प्रोफेसर कैलाश डागा की अध्यक्षता में हुई। बैठक में यूनिवर्सिटी के शैक्षणिक मानकों को मजबूत करने और नवाचारों को अपनाने के उद्देश्य से कई महत्वपूर्ण निर्णय हुए। देसी और विदेशी भाषाओं के अध्ययन को बढ़ावा देने के लिए यूनिवर्सिटी में स्वतंत्र भाषा केंद्र स्थापित करने का निर्णय लिया गया। इस केंद्र से विभिन्न भाषाओं के शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाए जाएंगे। इससे छात्रों और शिक्षकों दोनों को लाभ मिलेगा।

### सिक्किम के छात्र यहां ले सकेंगे उच्च शिक्षा

बोर्ड ऑफ ओपन स्कूलिंग एंड स्किल एजुकेशन सिक्किम के वाइस चेयरमैन की ओर से मिले पत्र के आधार पर सुखाड़िया यूनिवर्सिटी में उच्च शिक्षा में प्रवेश के लिए स्वीकृति दी गई। इससे सिक्किम बोर्ड से पास हुए छात्र यहां आकर आगे की पढ़ाई कर सकेंगे। साथ ही महर्षि संदीपनी राष्ट्रीय वेद संस्कृत शिक्षा बोर्ड उज्जैन द्वारा कक्षा 10वीं-12वीं की परीक्षा पास कर चुके छात्रों को उच्च अध्ययन के लिए मान्य किया गया। इसके अलावा मास्टर ऑफ आर्ट्स (एमए) इन हिंदू स्टडीज पाठ्यक्रम को भी स्वीकृति दी गई।

### माइग्रेशन प्रक्रिया को लेकर स्पष्ट दिशा-निर्देश

यूजीसी के नए नियमों के अनुसार- एक छात्र एक सत्र में नियमित यूनिवर्सिटी और एक ओपन विश्वविद्यालय की डिग्री एक साथ अध्ययन कर सकता है। हालांकि माइग्रेशन प्रक्रिया स्पष्ट नहीं थी। इस संबंध में काउंसिल ने स्पष्ट दिशा-निर्देश जारी किए। अब ऐसे छात्रों को माइग्रेशन प्राप्त करने के लिए संबंधित यूनिवर्सिटी से एनओसी लेनी होगी। उसे संबंधित कॉलेज या विश्वविद्यालय में जमा करना होगा। इसके बाद यूनिवर्सिटी के लागू नियमों के अनुसार एनरोलमेंट की प्रक्रिया पूरी की जाएगी। साथ ही निर्णय लिया कि प्रदेश के अन्य राज्य द्वारा सुखाड़िया यूनिवर्सिटी के साथ शैक्षणिक आदान-प्रदान करने के लिए एमओयू किया जा सकेगा।

# खेतड़ीनगर में व्याख्याता संगठन रेसला की बैठक: वीरेन्द्र अवाना तीसरी बार ब्लॉक अध्यक्ष बने

## नई कार्यकारिणी का गठन किया

भीम प्रज्ञा न्यूज

**खेतड़ी ।** खेतड़ीनगर में व्याख्याता संगठन रेसला खेतड़ी ब्लॉक की बैठक हुई। इसमें नई कार्यकारिणी का गठन किया गया। चुनाव पर्यवेक्षक सुरेंद्र कुमार बड़सरा और वीरेन्द्र यादव की देखरेख में सर्वसम्मति से चुनाव हुए।

### नई कार्यकारिणी का गठन किया

वीरेन्द्र अवाना को तीसरी बार रेसला खेतड़ी ब्लॉक अध्यक्ष चुना गया। हरवंश शर्मा को ब्लॉक मंत्री, मोनिका डांगी को महिला मंत्री और दिनेश जांगिड़ को कोषाध्यक्ष बनाया गया। रामानंद उपाध्यक्ष, पंकज नेहरा महिला उपाध्यक्ष, यशपाल जौरासिया मीडिया प्रभारी बने। विजयपाल यादव और सीमा चाहर रेसला प्रवक्ता चुने गए। लीलाधर यादव, जयपाल यादव, मातादीन गुर्जर और सुरेंद्र ताखर को संगठन मंत्री बनाया गया। दुर्गा प्रसाद गुर्जर और संपत लाल संरक्षक, जबकि कपूरचंद सभाध्यक्ष चुने गए।

### शिक्षकों के हितों पर एकजुट होने का भरोसा दिलाया

नवनिर्वाचित ब्लॉक अध्यक्ष वीरेन्द्र अवाना ने कहा कि वे संगठन की दी गई जिम्मेदारी पर खरे उतरेंगे। उन्होंने शिक्षक हितों के लिए एकजुट होकर लगातार काम करने का भरोसा दिलाया। इस मौके पर संगठन के सदस्यों ने नई कार्यकारिणी का माल्यार्पण कर सम्मान किया। जिला संयोजक गजेंद्र कुमार और नगेंद्र कुमार जालोपिया ने पदाधिकारियों को शपथ दिलाई।

# खेतड़ी में आज होगा शहरी सरकार के लिए मतदान, 25 वार्डों में 188 प्रत्याशी मैदान में

भीम प्रज्ञा न्यूज.खेतड़ी।

शहरी सरकार के चुनाव के प्रथम चरण में खेतड़ी में आज मतदान होगा। मतदान को लेकर प्रशासन ने सभी तैयारियां पूरी कर ली हैं। नगर के 25 वार्डों में मतदान के लिए कुल 18 मतदान केंद्र बनाए गए हैं। खेतड़ी में इस बार कुल 188 प्रत्याशी चुनाव मैदान में हैं। इनमें 24 प्रत्याशी भाजपा से, 20 प्रत्याशी कांग्रेस से हैं, जबकि 144 प्रत्याशी निर्दलीय या अन्य दलों से चुनाव लड़ रहे हैं। कई वार्डों में भाजपा और कांग्रेस के बीच सीधा मुकाबला माना जा रहा है, वहीं कुछ वार्डों में निर्दलीय प्रत्याशी दोनों प्रमुख दलों के चुनावी समीकरण बिगाड़ते नजर आ रहे हैं।चुनाव प्रचार का निर्धारित समय समाप्त होने के बाद अब प्रत्याशी घर-घर संपर्क कर मतदाताओं को अपने पक्ष में मतदान करने के लिए जुटे हुए हैं। अंतिम समय में प्रत्याशी और उनके समर्थक मतदाताओं से व्यक्तिगत संपर्क कर समर्थन जुटाने में लगे हैं। खेतड़ी में कुल 17,034 मतदाता अपने मताधिकार का प्रयोग करेंगे। इनमें 8,967 पुरुष मतदाता और 8,067 महिला मतदाता शामिल हैं। वहीं थर्ड जेंडर मतदाताओं की संख्या शून्य है। प्रशासन की ओर से मतदाताओं से शांतिपूर्ण एवं निर्भीक होकर मतदान करने की अपील की गई है। जिन मतदाताओं के पास मतदाता पहचान पत्र उपलब्ध नहीं है, वे निर्वाचन आयोग द्वारा निर्धारित अन्य वैध पहचान पत्रों में से किसी एक का उपयोग कर मतदान कर सकेंगे।

खेतड़ी में आज होगा शहरी सरकार के लिए मतदान, 25 वार्डों में 188 प्रत्याशी मैदान में

भीम प्रज्ञा न्यूज.खेतड़ी।

शहरी सरकार के चुनाव के प्रथम चरण में खेतड़ी में आज मतदान होगा। मतदान को लेकर प्रशासन ने सभी तैयारियां पूरी कर ली हैं। नगर के 25 वार्डों में मतदान के लिए कुल 18 मतदान केंद्र बनाए गए हैं। खेतड़ी में इस बार कुल 188 प्रत्याशी चुनाव मैदान में हैं। इनमें 24 प्रत्याशी भाजपा से, 20 प्रत्याशी कांग्रेस से हैं, जबकि 144 प्रत्याशी निर्दलीय या अन्य दलों से चुनाव लड़ रहे हैं। कई वार्डों में भाजपा और कांग्रेस के बीच सीधा मुकाबला माना जा रहा है, वहीं कुछ वार्डों में निर्दलीय प्रत्याशी दोनों प्रमुख दलों के चुनावी समीकरण बिगाड़ते नजर आ रहे हैं।चुनाव प्रचार का निर्धारित समय समाप्त होने के बाद अब प्रत्याशी घर-घर संपर्क कर मतदाताओं को अपने पक्ष में मतदान करने के लिए जुटे हुए हैं। अंतिम समय में प्रत्याशी और उनके समर्थक मतदाताओं से व्यक्तिगत संपर्क कर समर्थन जुटाने में लगे हैं।

खेतड़ी में कुल 17,034 मतदाता अपने मताधिकार का प्रयोग करेंगे। इनमें 8,967 पुरुष मतदाता और 8,067 महिला मतदाता शामिल हैं। वहीं थर्ड जेंडर मतदाताओं की संख्या शून्य है। प्रशासन की ओर से मतदाताओं से शांतिपूर्ण एवं निर्भीक होकर मतदान करने की अपील की गई है। जिन मतदाताओं के पास मतदाता पहचान पत्र उपलब्ध नहीं है, वे निर्वाचन आयोग द्वारा निर्धारित अन्य वैध पहचान पत्रों में से किसी एक का उपयोग कर मतदान कर सकेंगे।

# मंडावर के पुराना बस स्टैण्ड के पास दो बाइकों की भिड़ंत, जलदाय विभाग का लाइनमैन गंभीर घायल

## सिर में गहरी चोट लगने पर दौसा रेफर, परिजन निजी एंबुलेंस से जयपुर ले गए।

भीम प्रज्ञा न्यूज.मंडावर।

घायल जलदायकर्मी सुरेशचंद शर्मा

**मनोज खंडेलवाल ।** थाना क्षेत्र में मंगलवार को बस स्टैंड रोड स्थित पुराना बस स्टैंड के पास दो मोटरसाइकिलों की भिड़ंत हो गई। हादसे में मंडावर जलदाय विभाग में लाइनमैन के पद पर कार्यरत रसीदपुर निवासी करीब 57 वर्षीय सुरेशचंद पुत्र डालचंद शर्मा गंभीर रूप से घायल हो गया। हादसे के बाद मौके पर अफरा-तफरी मच गई। जानकारी के अनुसार सुरेशचंद शर्मा मोटरसाइकिल से जा रहे थे। इसी दौरान मिस्त्री मार्केट के पास दूसरी मोटरसाइकिल से उसकी बाइक की भिड़ंत हो गई। दुर्घटना में सुरेशचंद के सिर में गंभीर चोट लगी। बाइक पर उसके साथ मौजूद साथी ने आसपास के लोगों की मदद से उसे निजी साधन से राजकीय चिकित्सालय मंडावर पहुंचाया। सूचना मिलने पर पुलिस भी मौके पर पहुंच गई। राजकीय चिकित्सालय में चिकित्सकों ने घायल का प्राथमिक उपचार किया। सिर में गहरी और गंभीर चोट होने के कारण चिकित्सकों ने उसे जिला चिकित्सालय दौसा रेफर कर दिया। बाद में सूचना पर पहुंचे परिजन सुरेशचंद शर्मा को निजी एंबुलेंस से दौसा जिला चिकित्सालय ले जाने के बजाय उपचार के लिए जयपुर ले गए।हादसे में शामिल दूसरी मोटरसाइकिल के चालक के संबंध में फिलहाल स्पष्ट जानकारी नहीं मिल सकी है। वहीं दुर्घटना को लेकर समाचार लिखे जाने तक मंडावर थाने में किसी पक्ष की ओर से रिपोर्ट दर्ज नहीं कराई गई थी।

# कच्ची बस्तियों में पहुंची अपनत्व की रसोई

भीम प्रज्ञा न्यूज.लक्ष्मणगढ़।

लोक सेवा ज्ञान मंदिर ट्रस्ट द्वारा चलाए जा रहे आध्यात्मिक चेतना अभियान के तहत सामाजिक समरसता, भाईचारे और मानवता की भावना को बढ़ावा देने के उद्देश्य से ट्रस्ट के सरक्षंक सुभाष जोशी व प्रकाश पासोरिया के सानिध्य में एक सराहनीय पहल की गई। बरसात के मौसम में कच्ची बस्तियों में रहने वाले आम नागरिकों को खाना बनाने में होने वाली परेशानियों को देखते हुए ट्रस्ट की ओर से जरूरतमंद परिवारों तक एक समय का भोजन पहुंचाकर राहत प्रदान की गई। इस अवसर पर ट्रस्ट के प्रभारी राजेन्द्र कुमार शर्मा, दिव्यांग प्रकोष्ठ के प्रभारी कमल कुमावत, शशि प्रकाश कुमावत, ई मित्र प्रभारी नासिर तगाला सहित ट्रस्ट के संरक्षक पदाधिकारी कार्यकर्ता उपस्थित रहें।

# लोक सेवा ज्ञान मंदिर ट्रस्ट ने आंगनबाड़ी और प्राथमिक विद्यालय के बच्चों को कराया भोजन, शिक्षा और सामाजिक सरोकार का दिया संदेश

भीम प्रज्ञा न्यूज.चिड़ावा।

लोक सेवा ज्ञान मंदिर ट्रस्ट, चिड़ावा की ओर से सामाजिक सरोकार की अनूठी पहल करते हुए सोमवार को स्थानीय आंगनबाड़ी केंद्र एवं प्राथमिक विद्यालय में बच्चों के लिए विशेष भोजन वितरण कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के दौरान पीएम श्री राजकला राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय की प्रधानाचार्या सरोज दाधीच ने अपने हाथों से नन्हे-मुन्ने बच्चों को भोजन परोसा और ट्रस्ट के इस मानवीय प्रयास की मुक्तकंठ से सराहना की। ट्रस्ट प्रभारी रजनीकांत मिश्रा ने बताया कि लोक सेवा ज्ञान मंदिर ट्रस्ट का मुख्य उद्देश्य सरकारी योजनाओं को जन-जन तक पहुंचाना, योग शिक्षा और आध्यात्मिक चेतना का प्रसार करना है। इसी उद्देश्य के तहत ट्रस्ट पर्यावरण संरक्षण, स्वच्छता अभियान और बाल कल्याण जैसे सामाजिक कार्यों में बढ़-चढ़कर भाग लेता है। जिला प्रभारी राधेश्याम शर्मा सुखाड़िया ने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि ट्रस्ट समाज के अंतिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति तक पहुंचकर हर त्योहार की खुशियां उनके साथ बांटता है। साथ ही विभिन्न पर्वों और उनके पौराणिक व सामाजिक महत्व की जानकारी भी आमजन तक पहुंचाई जाती है। इस अवसर पर सुरक्षा प्रभारी अशोक पुजारी, विजय कुमार सोनी, विद्यालय स्टाफ जयप्रकाश, आंगनबाड़ी केंद्र एवं प्राथमिक विद्यालय का समस्त स्टाफ उपस्थित रहा। सभी गणमान्य जनों ने ट्रस्ट द्वारा चलाए जा रहे इस सेवा अभियान की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

# भाजपा युवा नेता कुलदीप लाम्बा ने उचाना भाजपा विधायक देवेन्द्र अत्री से की शिष्टाचार भेंट

भीम प्रज्ञा न्यूज / विजय रंगा(ब्यूरो चीफ)

भाजपा युवा मोर्चा नेता कुलदीप लाम्बा फुलिया कलां ने एक समारोह में उचाना विधायक देवेन्द्र चतुर्भुज अत्री से शिष्टाचार भेंट की इस अवसर पर दोनों ने कुछ स्थानीय मुद्दों पर भी चर्चा की तथा समस्याओं पर विचार-विमर्श के बाद विधायक ?अत्री ने युवा भाजपा नेता कुलदीप लाम्बा को आश्वस्त किया कि उनके द्वारा रखे गए सभी मुद्दों पर गम्भीरता से विचार विमर्श किया जाएगा। कुलदीप लाम्बा ने हरियाणा में निकायों के मुद्दों पर गम्भीरता से विचार विमर्श कर इस समस्या का भी शीघ्र निराकरण करने के लिए कहा। भाजपा नेता कुलदीप लाम्बा स्वयं दलित समुदाय से हैं इसलिए उन्होंने हरियाणा सरकार में मंत्री कृष्ण बेदी, कृषण पंवार के सम्मुख भी सफाई कर्मचारियों के मुद्दे को उठाया है। कुलदीप लाम्बा ने एसपी जींद के बारे में उनके कार्यकलापों की भी समीक्षा करते हुए गांव फुलिया कलां की कुछ शिकायतों पर अभी तक आरोपियों की गिरफ्तारीयां न होने की बात उनके साथ की। उन्होंने मुलाकात के बाद बताया कि उनकी मुलाकात बड़ी ही सोहार्द पूर्ण रही और भाजपा विधायक देवेन्द्र चतुर्भुज अत्री ने आश्वासन दिया कि आपके द्वारा दिए गए सुझावों पर विचार किया जाएगा।

# बच्चे स्वस्थ व ऊर्जावान होंगे तो देश स्वत: ही आगे बढ़ेगा- अतरलाल एडवोकेट, डॉ. राजवती

## गढ़ी-रूथल में रुद्राक्षी जनसेवा फाउंडेशन के कार्यालय का उद्घाटन हुआ

भीम प्रज्ञा न्यूज.मंडी अटेली।

**मनोज बुलाण ।** पांच साल के बच्चों को फ्री हेल्थ चेकअप व दवा वितरण के लिए रुद्राक्षी जनसेवा फाउंडेशन के कार्यालय का उद्घाटन हुआ। शुभारंभ पर मुख्य अतिथि के रूप में युवा नेत्री डॉ. राजवती यादव, समाज सेवी एडवोकेट अतरलाल, महिला कालेज के प्राचार्य प्रो. प्रवीण कुमार रहे। फाउंडेशन के माध्यम से पांच साल तक के बच्चों को आवश्यक सामग्री के साथ आंगनबाड़ी केंद्रों में आवश्यकता के सामान का भी फ्री वितरण किया जाएगा। रुद्राक्षी जनसेवा फाउंडेशन के डायरेक्टर व रेलवे के डीआरयूसीसी सदस्य हरमेश कुमार व गांव के सरपंच राहुल ने आने वाले अतिथियों का स्वागत अभिनंदन किया। इस मौके पर उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए युवा नेत्री डा. राजवती यादव ने कहा कि समाज को बेहतर बनाने के लिए हर व्यक्ति को अपना बेस्ट करना चाहिए। रुद्राक्षी जनसेवा फाउंडेशन के डायरेक्टर हरमेश एक जागरूक युवा के साथ समाज सेवा में आगे रहता है। एडवोकेट अतरलाल ने कहा कि किसी भी राष्ट्र, समाज के लिए बच्चे ही उस देश के भविष्य होते है। इसलिए बच्चों के लिए कार्य करना राष्ट्र की सच्ची सेवा होती है। आज के बच्चे भविष्य के नागरिक होते है। अगर बच्चे स्वास्थ्य व मानसिक रूप से अच्छे होंगे तो समाज प्रगति करेगा। प्रो. प्रवीण कुमार ने कहा कि कोई भी राष्ट्र उसके भूभाग पर रहने वाले लोगों से बनता है। अगर लोगों को स्वास्थ्य के साथ शिक्षा का प्रचार प्रसार होगा वह देश उतना ही विकास करेगा। डायरेक्टर हरमेश कुमार ने बताया कि जनसेवा फाउंडेशन के दूसरे कार्यो में आंगनवाड़ी केंद्रों में आवश्यकता के सामान का भी फ्री वितरण किया जाएगा। देश की नींव बच्चे होते है अगर वो स्वास्थ्य व सशक्त होंगे तो उनका भविष्य उज्जवल होगा। इसके लिए जनसेवा बच्चों को बाल मजदूरी पर अंकुश व उनके शोषण को दूर करने के लिए कार्य प्राथमिकता से कार्य करेगा। इस मौके पर गांव के सरपंच राहुल, भूपेद रायपुरिया, अंकित यादव, रजनेश, राजकुमार बोचडिया, राधेश्याम, भाग सिंह चेयरमैन, कैलाश सेठ, दान सिंह प्रजापत, शेरसिंह प्रजापत, सोनू खारीवाड़ा, नरेश चौहान, लक्ष्मीनारायण सहित अनेक गणमान्य लोग मौजूद रहे।

# अटेली अस्पताल को एक महिला मेडिकल ऑफिसर मिला, क्षेत्र के लोगों को मिलेगी बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं

## अटेली एक मात्र ऐसी सीएचसी है जिसमें मरीजों को अल्ट्रासाउंड की सुविधा मिल रही है

भीम प्रज्ञा न्यूज.मंडी अटेली।

**मनोज बुलाण ।** स्वास्थ्य विभाग ने प्रदेश में 430 नये मेडिकल ऑफिसर की मंगलवार को सूची जारी की है। जिसमें अटेली सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र को एक महिला मेडिकल ऑफिसर मिला है। अस्पताल में सात स्वीकृत पदों में छः मेडिकल ऑफिसर के साथ एक एसएमओं के होने से अटेली क्षेत्र के लोगों को बेहतर स्वास्थ्य सुविधाओं का इजाफा होगा। पहली बार सीएचसी में करीब-करीब चिकित्सकों की पोस्ट भर गयी है। स्वास्थ्य मंत्री का गृह अस्पताल से लोगों में खुशी देखी जा रही है। नयी मेडिकल ऑफिसर नपा के पूर्व चेयरमैन विकास यादव की पुत्री डा. शगुन यादव की नई सूची में नाम आया है। मंगलवार को अटेली में नई मेडिकल ऑफिसर की खबर पर मंत्री आरती राव के कार्यालय में उनके पीए गोविंद गोस्वामी व उपस्थित लोगों को पूर्व चेयरमैन विकास यादव ने मिठाई खिला कर खुशियों को बांटा। पीए गोविंद गोस्वामी व पूर्व चेयरमैन विकास यादव ने कहा कि स्वास्थ्य मंत्री के प्रयासों से प्रदेश व क्षेत्र में लगातार बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं बढ़ रही है। अटेली एक मात्र ऐसी सीएचसी है जिसमें मरीजों को अल्ट्रासाउंड की सुविधा मिल रही है। अटेली में डेंटल विभाग भी है उसमें चिकित्सक भी है लेकिन आधुनिक मशीनें व दूसरे यंत्रों की लोगों ने मांग की है ताकि क्षेत्र में बढ़ रहे फलोराइड पर दांतों का बुरा असर नहीं पड़ सकें। अस्पताल में एक्सरे व आधुनिक टेस्टिंग लैब मिलने से अच्छी व सटीक रिपोर्ट मिल रही है। अटेली के एसएमओं डॉ.अशोक ने बताया कि स्वास्थ्य मंत्री का गृह अस्पताल के चलते लोगों को सरकार की हर प्रकार की सुविधाएं मिल रही है। इस मौके पर धन्नौदा के पूर्व सरपंच अभय सिंह, इंद्रजीत यादव, जीतू मास्टर सहित अनेक गणमान्य लोग मौजूद रहें।

# झुंझुनूं-बगड़-सुलताना, नवलगढ़-जाखल-मुकुंदगढ़-डूंडलोद, खेतड़ी व उदयपुरवाटी में वोटिंग

## गत चुनाव में भाजपा ने 35 व कांग्रेस ने 96 वार्ड जीते थे

भीम प्रज्ञा न्यूज

**झुंझुनूं ।** जिले के 9 निकायों में शहरी सरकार चुनने के लिए बुधवार कोसुबह 7 से शाम 6 बजे तक मतदान होगा। इनमें झुंझुनूं नगर परिषद सहित बगड़, सुलताना, जाखल, नवलगढ़, मुकुंदगढ़, डूंडलोद, खेतड़ी व उदयपुरवाटी नगरपालिकाओं के 274 वार्डों के लिए 1194 प्रत्याशियों की हार-जीत का फैसला ईवीएम में दर्ज हो जाएगा। इन निकायों में 275 वार्ड हैं और इनमें बगड़ नगरपालिका के वार्ड 5 में पहले ही निर्विरोध निर्वाचन होने से 274 वार्डों के लिए मतदान होगा। इन 9 निकायों में सत्तारूढ़ पार्टी के 3 विधायकों समेत 4 विधायकों की साख की परीक्षा भी होगी। मतदान को लेकर जिला व पुलिस प्रशासन ने सभी तैयारियां पूरी करते हुए मतदान दलों को मंगलवार को रवाना कर दिया। संवेदनशील व अतिसंवेदनशील मतदान केंद्रों पर सीसीटीवी कैमरे व वेबकास्टिंग के माध्यम से पैनी नजर रखी जाएगी। मतदान प्रक्रिया समाप्त होते ही सभी ईवीएम मशीनों को कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के बीच स्ट्रांग रूम में सील कर दिया जाएगा। सबसे ज्यादा 60 वार्ड झुंझुनूं नगर परिषद में हैं। जबकि सबसे कम बगड़ नगरपालिका में 19 वार्ड के लिए मतदान होगा। भाजपा, कांग्रेस के साथ रालोपा, माकपा, बसपा के प्रत्याशी मैदान में हैं। निर्दलीय प्रत्याशियों के मैदान में होने से मुकाबला रोचक बना हुआ है। बगड़ नगरपालिका में 20 वार्ड है। लेकिन एक वार्ड 5 में निर्दलीय प्रत्याशी के निर्विरोध निर्वाचित होने की वजह से 19 वार्ड के लिए मतदान होगा। गत चुनाव में इन निकायों के 210 वार्डों के लिए हुए मतदान में भाजपा ने 35 तो कांग्रेस ने 96 वार्ड जीते थे। जबकि 79 निर्दलीय विजेता रहे थे। तब सुलताना, जाखल व डूंडलोद पालिका नहीं थी। इस बार इनके 65 वार्ड जोड़कर कुल 275 के लिए चुनाव हो रहे हैं। इनमें से बगड़ के एक वार्ड में निर्विरोध चुनाव हो चुका। शेष 274 वार्डों के लिए भाजपा ने 212 तो कांग्रेस ने 235 प्रत्याशी मैदान में उतारे हैं। 747 प्रत्याशी निर्दलीय व अन्य दलों के मैदान में हैं। इनमें से किसको कितनी सीटें मिलेंगी, इसका फैसला आज ईवीएम में बंद हो जाएगा।

# विशेष गहन पुनरीक्षण-2026: विशेष अभियान दिवसों पर मतदान केंद्रों पर उपस्थित रहेंगे बीएलओ : जिला निर्वाचन अधिकारी

## 12 व 13 तथा 26 व 27 सितंबर को सुबह 9 से शाम 5 बजे तक प्राप्त किए जाएंगे दावे एवं आपत्तियां

**भीम प्रज्ञा न्यूज.फतेहाबाद।**

**विजय रंगा (ब्यूरो चीफ)** । जिला निर्वाचन अधिकारी एवं डीसी डा. विवेक भारती ने बताया कि मतदाता सूचियों के विशेष गहन पुनरीक्षण-2026 के तहत पात्र नागरिकों से दावे एवं आपत्तियां प्राप्त करने के लिए 12 व 13 सितंबर तथा 26 व 27 सितंबर (शनिवार एवं रविवार) को विशेष अभियान दिवस निर्धारित किए गए हैं। इन विशेष अभियान दिवसों पर सभी मतदान केंद्रों पर बूथ लेवल अधिकारी (बीएलओ) सुबह 9 बजे से शाम 5 बजे तक उपस्थित रहकर नागरिकों से दावे एवं आपत्तियां प्राप्त करेंगे। जिला निर्वाचन अधिकारी डा. विवेक भारती ने बताया कि विशेष गहन पुनरीक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य पात्र नागरिकों का नाम मतदाता सूची में शामिल करना तथा मतदाता सूची में दर्ज नाम, पते एवं अन्य विवरणों में आवश्यक संशोधन अथवा त्रुटियों के संबंध में दावे एवं आपत्तियां प्राप्त करना है। उन्होंने कहा कि विशेष अभियान दिवसों के दौरान नागरिक अपने संबंधित मतदान केंद्र पर पहुंचकर मतदाता सूची का अवलोकन कर सकते हैं तथा नाम दर्ज करवाने, विवरण में संशोधन अथवा अन्य संबंधित दावे एवं आपत्तियां निर्धारित प्रक्रिया के तहत प्रस्तुत कर सकते हैं। उन्होंने पात्र नागरिकों से अपील की कि वे 12 व 13 सितंबर तथा 26 व 27 सितंबर को अपने संबंधित मतदान केंद्र पर पहुंचकर मतदाता सूची में अपने नाम एवं विवरण की जांच अवश्य करें। यदि किसी प्रकार की त्रुटि अथवा आपत्ति हो या पात्र व्यक्ति का नाम मतदाता सूची में दर्ज नहीं है, तो निर्धारित प्रक्रिया के अनुसार आवश्यक फार्म एवं दस्तावेज प्रस्तुत करते हुए दावा अथवा आपत्ति दर्ज करवाएं। जिला निर्वाचन अधिकारी ने सभी बीएलओ को विशेष अभियान दिवसों पर अपने-अपने मतदान केंद्रों पर अनिवार्य रूप से उपस्थित रहकर नागरिकों से दावे एवं आपत्तियां प्राप्त करने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने निर्वाचक पंजीयन अधिकारियों, सहायक निर्वाचक पंजीयन अधिकारियों, उप-जिला निर्वाचन अधिकारी तथा बीएलओ सुपरवाइजरों को भी निर्देश दिए कि वे विशेष अभियान दिवसों के दौरान मतदान केंद्रों का निरीक्षण कर बीएलओ की उपस्थिति सुनिश्चित करें तथा पूरी प्रक्रिया की प्रभावी निगरानी करें। डा. विवेक भारती ने स्पष्ट निर्देश दिए कि विशेष अभियान दिवसों के दौरान किसी भी मतदान केंद्र पर बीएलओ की अनुपस्थिति स्वीकार नहीं की जाएगी।

# सीआईए फतेहाबाद पुलिस की बड़ी कामयाबी, खाराखेड़ी के पास फायरिंग कर 7.47 लाख रुपये की लूट का महज 43 घंटे में पर्दाफाश

## मुख्य साजिशकर्ता सहित चार आरोपी काबू, लूटी गई राशि में से 1 लाख 30 हजार रुपये बरामद

## वारदात में प्रयुक्त कार भी बरामद, हिसार के होटल में रची गई थी लूट की साजिश

**भीम प्रज्ञा न्यूज.फतेहाबाद।**

**विजय रंगा (ब्यूरो चीफ)** । पुलिस अधीक्षक निकिता खट्टर, आईपीएस के दिशा-निर्देशानुसार चलाए जा रहे 'अपराध मुक्त फतेहाबाद' अभियान के तहत सीआईए फतेहाबाद पुलिस ने बड़ी कामयाबी हासिल करते हुए गांव खाराखेड़ी के नजदीक सारंगपुर रोड पर फायरिंग कर 7 लाख 47 हजार रुपये की लूट की वारदात का महज 43 घंटे में पर्दाफाश कर दिया है। पुलिस ने मामले में मुख्य साजिशकर्ता सहित चार आरोपियों को काबू किया है। आरोपियों से लूटी गई राशि में से 1 लाख 30 हजार रुपये तथा वारदात में प्रयुक्त कार भी बरामद की गई है।जानकारी देते हुए अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक दिव्यांशी सिंगला, आईपीएस ने बताया कि 05 सितंबर को शाम करीब 6:30 बजे गांव खाराखेड़ी के नजदीक सारंगपुर रोड पर फायरिंग कर नकदी लूटने की वारदात की सूचना प्राप्त हुई थी। सूचना मिलते ही थाना सदर फतेहाबाद प्रभारी निरीक्षक सुरेन्द्र तथा सीआईए फतेहाबाद प्रभारी निरीक्षक संदीप कुमार अपनी-अपनी टीमों के साथ मौके पर पहुंचे और घटनास्थल का निरीक्षण कर आवश्यक साक्ष्य जुटाए। उन्होंने बताया कि शिकायतकर्ता संदीप कुमार निवासी आदमपुर, जिला हिसार की शिकायत पर थाना सदर फतेहाबाद में अभियोग नंबर 357 दिनांक 06.09.2026, धारा 126, 324(4), 309(1), 3(5) बीएनएस तथा 25-54-59 आर्म्स एक्ट के तहत मामला दर्ज कर आरोपियों की धरपकड़ के लिए अलग-अलग पुलिस टीमें गठित की गईं। एएसपी ने बताया कि सीआईए फतेहाबाद प्रभारी निरीक्षक संदीप कुमार के नेतृत्व में पुलिस टीम ने तकनीकी साक्ष्यों, मुखबिर से मिली सूचनाओं तथा अन्य महत्वपूर्ण सुरागों के आधार पर जांच को आगे बढ़ाया। पुलिस टीम ने कड़ियों को जोड़ते हुए आरोपियों तक पहुंच बनाई। सीआईए फतेहाबाद व थाना सदर फतेहाबाद पुलिस की समन्वित कार्रवाई में चार आरोपियों को काबू किया गया। कार्रवाई के दौरान पुलिस ने लूटी गई राशि में से 1 लाख 30 हजार रुपये तथा वारदात में प्रयुक्त कार बरामद की है।

### हिअईंहिसार के टुडे होटल में रची गई थी लूट की साजिश

एएसपी दिव्यांशी सिंगला ने बताया कि प्रारंभिक जांच में सामने आया है कि शिकायतकर्ता की रिश्तेदारी में लगने वाला एक आरोपी पूर्व में एक आपराधिक मामले में हिसार जेल में बंद था। जेल में उसकी कुछ अन्य आरोपियों से जान-पहचान हुई थी। करीब 25 दिन पहले जेल से बाहर आने के बाद उसने अपने साथियों से दोबारा संपर्क किया। जांच में सामने आया कि जेल से बाहर आने के बाद आरोपियों ने हिसार स्थित टुडे होटल में बैठक कर लूट की वारदात की साजिश रची। इसके बाद शिकायतकर्ता की नकदी संबंधी गतिविधियों की जानकारी जुटाई गई और वारदात को अंजाम देने की पूरी योजना तैयार की गई। पुलिस जांच के अनुसार 05 सितंबर को शिकायतकर्ता नकदी लेकर जा रहा था। उसकी गतिविधियों की जानकारी आरोपियों के साथियों तक पहुंचाई गई, जिसके बाद कार में सवार आरोपियों ने सारंगपुर रोड पर शिकायतकर्ता की गाड़ी के आगे फायरिंग कर उसे रोका और 7 लाख 47 हजार रुपये लूटकर मौके से फरार हो गए।

### न्यायालय के माध्यम से करवाई जाएगी शिनाख्त परेड

एएसपी ने बताया कि पकड़े गए चारों आरोपियों को माननीय न्यायालय में पेश कर पुलिस रिमांड की मांग की जाएगी। साथ ही नियमानुसार न्यायालय के माध्यम से आरोपियों की टेस्ट आइडेंटिफिकेशन परेड (TIP)/शिनाख्त परेड करवाई जाएगी। शिनाख्त प्रक्रिया की निष्पक्षता बनाए रखने के मद्देनजर आरोपियों की पहचान फिलहाल सार्वजनिक नहीं की जा रही है। पुलिस रिमांड के दौरान शेष लूटी गई राशि, वारदात में प्रयुक्त हथियार की बरामदगी तथा मामले में अन्य व्यक्तियों की संभावित भूमिका के संबंध में गहन पूछताछ की जाएगी। फतेहाबाद पुलिस का स्पष्ट संदेश है कि अपराधी चाहे कितनी भी सुनियोजित तरीके से वारदात को अंजाम दें, पुलिस उन्हें कानून के शिकंजे में लाकर रहेगी। गंभीर अपराधों में शामिल किसी भी व्यक्ति को बख्शा नहीं जाएगा।

# पुलिस चौकी चंडीगढ़ रोड टोहाना की कार्रवाई, समर्सिबल मोटरों की तार चोरी मामले में दो आरोपी काबू

## खेतों में लगे समर्सिबल बोरों से करीब 90 फुट तार चोरी करने का मामला

**भीम प्रज्ञा न्यूज.टोहाना।**

**विजय रंगा(ब्यूरो चीफ)** । चोरी की वारदातों पर अंकुश लगाने के लिए चलाए जा रहे अभियान के तहत पुलिस चौकी चंडीगढ़ रोड टोहाना की टीम ने खेतों में लगे समर्सिबल बोरों की तार चोरी करने के मामले में कार्रवाई करते हुए दो युवकों को काबू किया है। आरोपियों की पहचान सौरभ पुत्र अजुबा निवासी वार्ड न0 2 राजनगर टोहाना व कृष्ण कुमार पुत्र श्रवण मनडाल निवासी राजनगर टोहाना के रूप में हुई है। आरोपियों को माननीय न्यायालय में पेश किया जायेगा। पुलिस चौकी चंडीगढ़ रोड टोहाना प्रभारी उपनिरीक्षक ओमप्रकाश ने बताया कि इस संबंध में गांव कालवन, जिला जींद निवासी कृष्ण कुमार ने पुलिस को शिकायत दी थी। शिकायतकर्ता ने बताया कि उसने बलियाला हेड टोहाना के पास खेती के लिए जमीन ठेके पर ले रखी है। इसके साथ लगती जमीन में भी समर्सिबल बोर लगे हुए हैं। शिकायत के अनुसार 5/6 सितंबर 2026 की रात अज्ञात व्यक्तियों ने खेतों में लगे समर्सिबल बोरों से तार चोरी कर ली थी। इनमें शिकायतकर्ता के दो समर्सिबल बोरों से करीब 60 फुट तथा साथ लगते खेत में लगे एक समर्सिबल बोर से करीब 30 फुट तार चोरी हुई थी। शिकायत मिलने पर पुलिस ने थाना शहर टोहाना में मुकदमा नम्बर 267 दिनांक 07.09.2026 धारा 303(2) बीएनएस के तहत दर्ज कर जांच शुरू की। पुलिस टीम ने मामले में अहम सुराग जुटाते हुए सौरभ व कृष्ण को काबू कर लिया। मामले की गहनता से जांच जारी है।

# बोस्ती गांव फतेहाबाद की रिवानी रंगा ने जीती शतरंज का राज्य स्तरीय प्रतियोगिता

## पूरे हरियाणा प्रदेश से अंडर-14 वर्ग की94प्रतिभागी अलग-अलग जिलों से आई थी

**भीम प्रज्ञा न्यूज.टोहाना।**

**विजय रंगा ( ब्यूरो चीफ)** । पानीपत में 6 और 7 सितंबर 2026 को आयोजित हुई अंडर 14बालिका वर्ग शतरंज प्रतियोगिता में रिवानी रंगा ने शानदार प्रदर्शन करते हुए पूरे राज्य में प्रथम स्थान प्राप्त कर प्रतियोगिता जीती ,रिवानी रंगा के पिता विनोद रंगा ने प्रेस को बताया कि रिवानी रंगा ने यह जिला फतेहाबाद में जिला स्तरीय खिताब लगातार दूसरी बार जीता है इससे पहला राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में रिवानी रंगा का आरम्भिक वरियता रैंक 43 वां रैंक दिया गया था,इस प्रतियोगिता में पूरे हरियाणा प्रदेश से अंडर -14वर्ग प्रतियोगिता में कुल 94प्रतिभागीयों ने हिस्सा लिया जिसमें रिवानी रंगा ने पांच प्रतियोगियों को हराकर जिसमें करनाल, यमुनानगर, गुरुग्राम,सोनीपत व फरीदाबाद की प्रतिभागियों को हराकर राज्य स्तरीय खिताब प्रतियोगिता जीती। रिवानी रंगा के कोच ने बताया कि आगामी साल जनवरी में मध्य प्रदेश में राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता का आयोजन होगा जिसमें रिवानी रंगा हरियाणा प्रदेश का प्रतिनिधित्व करेगी रिवानी रंगा की जीत के बाद गांव बोस्ती में जश्न का माहौल है तथा विदित रहे रिवानी रंगा की बड़ी बहन रुबिना रंगा भी शतरंज चैलेंज की कई प्रतियोगिता जीत चुकी है तथा राष्ट्रीय स्तर की खिलाड़ी हैं।विदीत रहे रिवानी रंगा इससे पूर्व राज्य स्तरीय क्षैत्रीय प्रतियोगिता में दो बार स्वर्ण पदक,एक बार रजत पदक व दो बार कांस्य पदक जीत चुकी है।

# सड़क सुरक्षा जीवन रक्षाः इंस्पेक्टर दिनेश सिंह

**भीम प्रज्ञा न्यूज़.जयपुर।**

सड़क सुरक्षा के प्रति युवाओं में जागरूकता बढ़ाने और उन्हें जिम्मेदार सड़क उपयोगकर्ता बनाने के उद्देश्य से प्रादेशिक परिवहन कार्यालय (आरटीओ) जयपुर में पदस्थापित इंस्पेक्टर दिनेश सिंह ने खेतान पॉलिटेक्निक कॉलेज, जयपुर के परिसर में मुस्कान फाऊंडेशन फॉर रोड सेफ्टी के साथ खेतान पॉलीटेक्निक कॉलेज जयपुर एल्यूमनाई एसोसिएशन के द्वारा आयोजित सड़क सुरक्षा जागरूकता कार्यक्रम में जीवन रक्षा पर व्याख्यान दिया। इस प्रोग्राम में 200 से अधिक विद्यार्थियों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम में खेतान पॉलिटेक्निक कॉलेज के साथ-साथ राजकीय इंजीनियरिंग कॉलेज जयपुर एवं राजकिय पॉलिटेक्निक कॉलेज फागी के विद्यार्थी भी शामिल हुए। कार्यक्रम के दौरान सीनियर इंस्पेक्टर दिनेश सिंह जो की खेतान पॉलीटेक्निक के पूर्व छात्र है, ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए सड़क सुरक्षा के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने देश एवं राजस्थान में सड़क दुर्घटनाओं की स्थिति से संबंधित आंकड़े साझा करते हुए युवाओं से सड़क सुरक्षा को अपनी दैनिक आदतों का हिस्सा बनाने का आह्वान किया।उन्होंने सड़क पर अनुशासन, हेलमेट के सही उपयोग, कार चलते समय सीट बेल्ट का उपयोग, वाहन चलाए समय मोबाइल का उपयोग न करने एवं विशेष रूप के ओवर स्पीडिंग की रोकथाम की आवश्यकता पर जोर देते हुए बताया कि सड़क पर अपनी सुरक्षा के साथ साथ दूसरे सड़क उपयोगकर्ता की सुरक्षा की जिम्मेदारी भी प्रत्येक व्यक्ति की है। कार्यक्रम के आयोजन में खेतान पॉलिटेक्निक कॉलेज एल्युमनाई एसोसिएशन के अध्यक्ष जी. पी. शर्मा, जनरल सेकेट्री दिनेश सैनी, एसोसिएशन के सदस्य श्री रघुनाथ सिंह व तारा सिंह का महत्वपूर्ण सहयोग रहा। कार्यक्रम को विनोद जांगिड़, प्रधानाचार्य खेतान पॉलिटेक्निक कॉलेज जयपुर एवं चेयरपर्सन, खेतान पॉलिटेक्निक कॉलेज एल्यूमनाई एसोसिएशन के मार्गदर्शन एवं रामकरण यादव जी के सहयोग से सफलतापूर्वक आयोजित किया गया। मुस्कान फाउंडेशन की ओर से समीर नैनावत एवं महेश कुमार शर्मा ने विद्यार्थियों के साथ संवाद करते हुए यातायात नियमों, सड़क सुरक्षा कानूनों, ट्रैफिक साइन एवं सुरक्षित सड़क व्यवहार के बारे में जानकारी दी। वीडियो एवं प्रेजेंटेशन के माध्यम से विद्यार्थियों को वास्तविक सड़क परिस्थितियों और दुर्घटनाओं से बचाव के व्यावहारिक उपायों से भी अवगत कराया गया। अंत में सिनियर इंस्पेक्टर दिनेश सिंह ने सभी को सड़क सुरक्षा प्रतिज्ञा की शपथ दिलाई।

# भाजपा की पैदल रैली में उमड़ा विशाल जनसैलाब, कार्यकर्ताओं में दिखा उत्साह

**भीम प्रज्ञा न्यूज़.शाहपुरा।**

नगर पालिका शाहपुरा चुनाव-2026 के तहत भारतीय जनता पार्टी द्वारा मंगलवार को विशाल पैदल रैली का आयोजन किया गया। रैली में भाजपा के पदाधिकारियों, कार्यकर्ताओं एवं बड़ी संख्या में आमजन ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की। रैली धरती देवरा से प्रारंभ होकर कलिंजरी गेट, बालाजी की छतरी, मुख्य बाजार होते हुए कुंडगेट, त्रिमूर्ति स्मारक तक पहुंची। इस दौरान मार्ग में भाजपा कार्यकर्ताओं एवं आमजन में खासा उत्साह देखने को मिला। कांग्रेस के राजकुमार अग्रवाल ने मुख्य बाजार में विधायक ड़ॉ लालाराम बैरवा का माला पहनाकर भव्य स्वागत किया। इस अवसर पर शाहपुरा-बनेड़ा विधायक डॉ. लालाराम बैरवा ने कहा कि भाजपा का प्रत्येक कार्यकर्ता संगठन की शक्ति है। कार्यकर्ताओं की मेहनत, समर्पण और एकजुटता ही भाजपा की सबसे बड़ी ताकत है। उन्होंने रैली में उपस्थित सभी पदाधिकारियों, कार्यकर्ताओं एवं आमजन का आभार व्यक्त किया।विधायक डॉ. लालाराम बैरवा ने कहा कि शाहपुरा के विकास और जनहित के संकल्प के साथ भाजपा कार्यकर्ता पूरी मजबूती से चुनाव मैदान में जुटे हुए हैं। उन्होंने कार्यकर्ताओं से संगठन को और मजबूत करते हुए भाजपा के पक्ष में व्यापक जनसंपर्क करने का आह्वान किया। रैली में भाजपा के पदाधिकारी, जनप्रतिनिधि, कार्यकर्ता एवं बड़ी संख्या में स्थानीय नागरिक उपस्थित रहे।

# कीचड़ से बेहाल इब्राहिमपुर-होरीपुरा मार्ग, बच्चों की पढ़ाई पर पड़ रहा असर

## जूते-चप्पल हाथ में लेकर निकलने को मजबूर स्कूली बच्चे, खेतों की मेड़ से गुजरने पर सांप-बिच्छुओं का भी खतरा

**भीम प्रज्ञा न्यूज.भरतपुर।**

**अमित कुमार उन्देरिया** । भरतपुर जिले की रूपबास पंचायत समिति क्षेत्र के इब्राहिमपुर से होरीपुरा गांव को जोड़ने वाला करीब ढाई किलोमीटर लंबा कच्चा रास्ता इन दिनों ग्रामीणों के लिए परेशानी का सबब बना हुआ है। बारिश के बाद रास्ते पर भारी मात्रा में कीचड़ जमा होने से आवागमन बुरी तरह प्रभावित हो गया है। हालात ऐसे हैं कि स्कूली बच्चों को समय पर स्कूल पहुंचने में भी परेशानी हो रही है और उन्हें रास्ता बदलकर इधर-उधर से होकर गुजरना पड़ रहा है।ग्रामीणों के अनुसार इस मार्ग पर लंबे समय से पक्की सड़क तो दूर, मौरम और गिट्टी जैसी सामग्री भी पर्याप्त रूप से नहीं डाली गई है। बारिश होते ही पूरा रास्ता चिकनी मिट्टी और कीचड़ में तब्दील हो जाता है। वाहनों की आवाजाही से स्थिति और भी खराब हो जाती है।

**जूते-चप्पल हाथ में लेकर निकलते हैं बच्चे -** कीचड़ और फिसलन के कारण स्कूली बच्चों को काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। कई बच्चे रास्ते से गुजरते समय अपने जूते-चप्पल हाथ में लेकर निकलने को मजबूर हैं, ताकि कीचड़ में उनके जूते खराब न हों और फिसलकर गिरने से बच सकें। ग्रामीणों का कहना है कि रास्ते पर इतनी अधिक फिसलन हो जाती है कि पैदल चलना भी मुश्किल हो जाता है। ऐसे में छोटे बच्चों के लिए स्कूल तक पहुंचना और वापस घर लौटना किसी चुनौती से कम नहीं है।

**कीचड़ बढ़ा तो खेतों की मेड़ बनी सहारा, सांप-बिच्छुओं का डर -** रास्ते में अधिक कीचड़ होने पर ग्रामीण और स्कूली बच्चे खेतों की मेड़ से होकर निकलने को मजबूर हैं। लेकिन यह वैकल्पिक रास्ता भी सुरक्षित नहीं है। खेतों की मेड़ों पर घास-फूस उगी होने के कारण ग्रामीणों और बच्चों के बीच सांप-बिच्छुओं का डर बना रहता है। ग्रामीणों का कहना है कि बारिश के मौसम में बच्चों को इस तरह खेतों के बीच से स्कूल भेजना अभिभावकों के लिए भी चिंता का विषय बना हुआ है।

**हाट में सब्जी बेचने आने वाले ग्रामीण भी परेशान -** होरीपुरा गांव के कई परिवार खेती-बाड़ी पर निर्भर हैं और खेतों में साग-सब्जियां उगाते हैं। इब्राहिमपुर में प्रत्येक सोमवार और गुरुवार को लगने वाली हाट में ग्रामीण इसी रास्ते से सब्जियां लेकर पहुंचते हैं। खराब रास्ते के कारण उन्हें भारी परेशानी उठानी पड़ती है। कई बार ग्रामीण सिर पर सब्जियों का बोझ रखकर कीचड़ भरे रास्ते को पार करने को मजबूर होते हैं।

**ग्रामीणों में जनप्रतिनिधियों के प्रति नाराजगी -** स्थानीय ग्रामीणों ने आरोप लगाया कि चुनाव के समय नेता और विधायक गांव में वोट मांगने पहुंचते हैं, लेकिन चुनाव के बाद गांव की मूलभूत समस्याओं की ओर ध्यान नहीं दिया जाता। ग्रामीणों का कहना है कि लंबे समय से रास्ते की स्थिति खराब है, लेकिन अभी तक इसका स्थायी समाधान नहीं हुआ। ग्रामीणों ने जिला प्रशासन, कलेक्टर और क्षेत्रीय विधायक से इब्राहिमपुर-होरीपुरा मार्ग की स्थिति को गंभीरता से लेते हुए जल्द से जल्द पक्का करवाने तथा तत्काल मौरम-गिट्टी डलवाकर आवागमन सुचारु कराने की मांग की है। खासकर स्कूली बच्चों की परेशानी को देखते हुए ग्रामीणों ने इस समस्या के शीघ्र समाधान की मांग उठाई है।

### यूएस ओपन में ओसाका हारकर अंतिम आठ से हुईं बाहर

# ज्वेरेव, बोटिक, रायबाकिना और गॉफ क्वार्टर फाइनल में

● नई दिल्ली

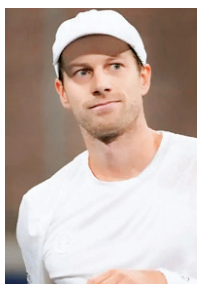
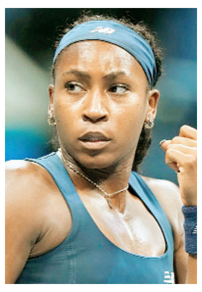

यूएस ओपन 2026 के पुरुष एकल में जर्मनी के एलेक्जेंडर ज्वेरेव और नीदरलैंड के बोटिक वैन डे जैंडशुल्प ने अपने-अपने मुकाबले जीतकर क्वार्टर फाइनल में जगह बना ली है।

ज्वेरेव ने इटली के लुसियानो डार्डेरी को सीधे सेटों में हराया, जबकि बोटिक ने दो सेट पिछड़ने के बाद शानदार वापसी करते हुए आर्थर गेआ को मात दी। अब दोनों के बीच अंतिम आठ में मुकाबला होगा। ज्वेरेव ने 21वीं वरीयता प्राप्त डार्डेरी को 6-2, 6-2, 7-6(3) से हराया। जर्मन खिलाड़ी ने अपनी सर्व और दमदार बेसलाइन हिटिंग के दम पर लगातार दबाव बनाए रखा। डार्डेरी ने तीसरे सेट में अपनी पहली सर्विस और ड्रॉप शॉट के जरिए मुकाबले में वापसी की कोशिश की, लेकिन ज्वेरेव ने अहम मौकों पर धैर्य बनाए रखा और तीसरा सेट टाईब्रेक में जीतकर मैच अपने नाम कर लिया।

इस जीत के साथ ज्वेरेव 2026 में सभी चार ग्रैंड स्लैम के क्वार्टर फाइनल में पहुंचने वाले इकलौते खिलाड़ी बन गए हैं। जीत के बाद ज्वेरेव ने कहा, ''मुझे लगा कि मेरा स्तर एक जैसा था। उन्होंने तीसरे सेट में बहुत अच्छा खेलना शुरू किया। मैंने मुश्किल से ही किसी को गेंद को इतनी जोर से मारते देखा जितना उन्होंने पूरे सेट में लगातार किया।

### महिला एकल में कोको गॉफ ने इवा जोविक को दी शिकस्त

महिला एकल में 2023 की चैंपियन कोको गॉफ ने 18 वर्षीय इवा जोविक को 6-1, 6-4 से हराकर क्वार्टर फाइनल में जगह बनाई। जोविक पहली बार किसी ग्रैंड स्लैम के चौथे दौर तक पहुंची थीं, लेकिन गॉफ के खिलाफ उनका सफर खत्म हो गया। शुरुआत में मुकाबला कुछ हद तक बराबरी का रहा, लेकिन लय हासिल करने के बाद गॉफ ने नियंत्रण अपने हाथ में ले लिया। उन्होंने पहले सेट में जोविक की दो बार सर्विस तोड़ी और सेट 6-1 से जीत लिया। दूसरे सेट में जोविक ने बेहतर खेल दिखाया और गॉफ पर दबाव बनाने की कोशिश की। हालांकि, अहम मौकों पर गलतियों के कारण वह अपनी सर्विस गंवा बैठीं और गॉफ ने 6-4 से सेट जीतकर मैच अपने नाम कर लिया। जोविक ने मैच में सिर्फ नौ विनर्स लगाए, जबकि उनके नाम 30 अनफोर्स्ड एरर्स रहे। क्वार्टर फाइनल में गॉफ का सामना मिरा एंड्रीवा से होगा।

### दो सेट हारने के बाद बोटिक की ऐतिहासिक वापसी

दूसरी ओर, बोटिक वैन डे जैंडशुल्प ने आर्थर गेआ के खिलाफ पांच सेट के मुकाबले में शानदार वापसी की। 87वीं रैंकिंग वाले गेआ ने शुरुआती दोनों सेट 6-3, 7-6(0) से जीतकर मुकाबले पर मजबूत पकड़ बना ली थी। इसके बाद बोटिक ने लगातार तीन सेट जीतकर मैच का रुख पलट दिया। बोटिक ने तीसरा सेट 7-6(7) से जीता। इस सेट के टाईब्रेक में गेआ मैच पॉइंट तक पहुंच गए थे, लेकिन अहम मौके पर उनकी फोरहैंड वॉली और एक अन्य वॉली में गलती हुई, जिसका फायदा बोटिक ने उठाया। चौथे सेट में भी गेआ मैच के लिए सर्व करने की स्थिति में पहुंचे, लेकिन वह मुकाबला खत्म नहीं कर सके। बोटिक ने टाईब्रेक 7-6(6) से जीतकर मैच को निर्णायक सेट में पहुंचाया। पांचवें सेट में उन्होंने 6-4 से जीत दर्ज की। यह मुकाबला 5 घंटे 13 मिनट चला और यूएस ओपन इतिहास का चौथा सबसे लंबा पुरुष एकल मुकाबला रहा। 30 वर्षीय बोटिक ने 2021 के बाद एक बार फिर न्यूयॉर्क में अंतिम आठ में जगह बनाई है।

### रायबाकिना ने ओसाका को हराया

इससे पहले एलेना रायबाकिना ने पूर्व चैंपियन नाओमी ओसाका को 6-1, 6-4 से हराकर अंतिम आठ में जगह बनाई। रायबाकिना ने पहला सेट सिर्फ 22 मिनट में जीत लिया और पूरे मुकाबले में अपनी दमदार बेसलाइन हिटिंग से ओसाका पर दबाव बनाए रखा। 13वीं वरीयता प्राप्त ओसाका ने दूसरे सेट में आक्रामक शुरुआत की और अपनी सर्विस बचाती रहीं, लेकिन सातवें गेम में रायबाकिना ने अहम ब्रेक हासिल कर लिया। ओसाका को मैच के दौरान बाएं पैर में भी परेशानी हुई। इसके बावजूद उन्होंने मुकाबले में बने रहने की कोशिश की, लेकिन रायबाकिना ने 6-4 से दूसरा सेट जीतकर 66 मिनट में मैच खत्म कर दिया। इस हार के साथ 2018 और 2020 की यूएस ओपन चैंपियन ओसाका का तीसरी बार खिताब जीतने का सपना टूट गया। रायबाकिना अब क्वार्टर फाइनल में ओलंपिक चैंपियन झेंग किनवेन से भिड़ेंगी।

# पुराने रंग में नजर आएगी भारतीय हॉकी टीम

## एशियाई खेलों में नीली जर्सी में उतरेंगे खिलाड़ी

दिल्ली

हॉकी इंडिया के अध्यक्ष दिलीप टिर्की ने मंगलवार को कहा कि भारत की पुरुष और महिला हॉकी टीमें जापान के आइची-नागोया में होने वाले आगामी एशियाई खेलों में नीली जर्सी पहनकर खेलेंगी। टिर्की ने कहा कि भारतीय ओलंपिक संघ (आईओए) ने टीम किट के रंगों को लेकर विकल्प दिए थे जिसके बाद हॉकी इंडिया ने भारतीय टीम की जर्सी के लिए नीले रंग को पहली पसंद बनाया।

टिर्की ने एशियाई खेलों में हिस्सा लेने जा रहे खिलाड़ियों के लिए आयोजित विदाई समारोह के इतर कहा, आईओए ने हमें टीम किट के लिए रंगों के विकल्प दिए थे। हॉकी इंडिया ने भारतीय टीम की जर्सी के लिए पहला रंग नीला और दूसरा रंग ऑरेंज चुना है। मैने विश्व कप से पहले भी कहा था कि टीम जर्सी का नारंगी रंग स्थायी नहीं है। इसे भविष्य में बदला भी जा सकता है।

### विश्व कप में जर्सी को लेकर खड़ा हुआ था विवाद

हाल ही में नीदरलैंड और बेल्जियम में हुए विश्व कप से ठीक पहले भारतीय हॉकी टीम की जर्सी का रंग पारंपरिक नीले से बदलकर ऑरेंज किए जाने को लेकर विवाद खड़ा हो गया था। उस समय टिर्की ने इस प्रक्रिया पर सवाल उठाते हुए कहा था कि उनकी या कार्यकारी बोर्ड की जानकारी के बिना जर्सी का रंग बदलने का फैसला लिया गया था। विवाद और बढ़ गया था जब टिर्की ने प्रक्रिया पर सवाल उठाते हुए कहा था कि उनकी या कार्यकारी बोर्ड की जानकारी के बिना जर्सी का रंग बदलने का फैसला लिया गया था। जर्सी का रंग बदलने के पीछे तर्क दिया गया था कि नीली टर्फ पर नीले रंग की जर्सी में खेलने से दिक्कत आती है। उस समय भी पूर्व कप्तान वीरेन रासकिन्हा, परगट सिंह, धनराज पिल्लै, अजित पाल सिंह समेत कई दिग्गजों ने इस फैसले पर सवाल उठाए थे।

## कबड्डी टीम के सदस्य बृजेंद्र परीक्षण में विफल

**नई दिल्ली (आरएनएन)।** एशियाई बीच खेलों में रजत पदक जीतने वाली भारतीय कबड्डी टीम के सदस्य बृजेंद्र सिंह चौधरी से प्रतियोगिता के दौरान हुए डोप परीक्षण में विफल रहने के कारण उनका पदक छीन लिया गया है।

अंतरराष्ट्रीय परीक्षण एजेंसी ने बताया कि चौधरी 27 अप्रैल को प्रतियोगिता के दौरान किए गए डोप परीक्षण में प्रतिबंधित ड्युरेटिक ब्रिंजोलेमाइड के सेवन के दोषी पाए गए थे और उन्होंने प्रतिबंध को स्वीकार कर लिया है। आईटीए ने कहा, अंतरराष्ट्रीय परीक्षण एजेंसी ने बताया है कि भारतीय कबड्डी खिलाड़ी बृजेंद्र सिंह चौधरी पर डोपिंग रोधी नियम उल्लंघन के मामले में कार्रवाई की गई है।

# दलीप ट्रॉफी के फाइनल में ईस्ट जोन ने तीसरे दिन बनाई अपनी मजबूत पकड़

## साउथ जोन ने 242 रन पर खो दिए 6 विकेट, अभी 466 रन पीछे

● नई दिल्ली

अनुभवी तेज गेंदबाज मोहम्मद शमी की छोटे-छोटे स्पेल में प्रभावी गेंदबाजी की बदौलत ईस्ट जोन ने दलीप ट्रॉफी फाइनल के तीसरे दिन साउथ जोन के 242 रन पर छह विकेट झटक कर अपनी स्थिति काफी मजबूत कर ली।

साउथ जोन अभी पूर्व क्षेत्र के 708 रन के विशाल स्कोर से 466 रन पीछे है। पहली पारी में उसके सिर्फ चार विकेट बाकी हैं और ऐसे में उसके लिए बढ़त हासिल करना लगभग असंभव नजर आ रहा है। तीसरे दिन का खेल समाप्त होने तक कप्तान तिलक वर्मा 56 रन (133 गेंद) बनाकर और सीवी मिलिंद बिना खाता खोले क्रीज पर थे। श्रेयस गोपाल 26 रन बनाकर दिन के अंतिम क्षणों में आउट हुए। शमी ने दिन में तीन छोटे-छोटे स्पेल किए। उन्होंने पहले तीन ओवर में दो मेडन डालते हुए सिर्फ एक रन दिया।

### बड़ी पारी नहीं खेल पाए देवदत्त पडिक्कल

श्रीलंका के सफल दौरे से लौटे पडिक्कल एक और बड़ी पारी की ओर बढ़ते नजर आ रहे थे। उन्होंने तेज गेंदबाज मुकेश कुमार की गेंद पर चौका जड़कर 65 गेंदों में अपना अर्धशतक पूरा किया। मुकेश ने जल्द ही बदला ले लिया। उन्होंने पडिक्कल के पैड की ओर गेंद डाली। पडिक्कल के फ्लिक पर स्थानापन्न खिलाड़ी डीपी दास ने आसान कैच लपक लिया। दक्षिण क्षेत्र के बल्लेबाज बड़ी साझेदारी करने में नाकाम रहे। उपकप्तान रिकी भुई के शुरुआती विकेट के बाद नारायण जगदीशन (32) ने पडिक्कल के साथ दूसरे विकेट के लिए 60 रन जोड़े।

# टी20 के लिए भारत और जापान की टीमें तय

## दोनों देशों के बीच 22 सितंबर को होगा स्पेशल मुकाबला

● नई दिल्ली

भारत के खिलाफ स्पेशल टी20 मैच के लिए जापान ने टीम का ऐलान कर दिया है। एशियाड में भाग लेने वाले खिलाड़ी ही भारत के खिलाफ मुकाबले में खेलेंगे। यह टी20 मैच 22 सितंबर को जापान में खेला जाएगा।

इस मैच के लाइव स्ट्रीमिंग के अधिकार फैनकोड के पास हैं। हालांकि, टेलीविजन ब्रॉडकास्ट को लेकर अभी डील फाइनल नहीं हुई है। यह मुकाबला भारतीय समयानुसार सुबह 9.30 बजे शुरू होगा। इस मैच का आयोजन भारत-जापान राजनयिक संबंधों की 75वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में किया जा रहा है। भारतीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और जापान के प्रधानमंत्री सनाए ताकाइची के बीच शिखर सम्मेलन के दौरान हुए समझौते के तहत यह मैच खेला जा रहा है। जापान की तरफ से सर्वाधिक रन बनाने वाले केंडेल कादोवाकी फ्लेमिंग इस मैच में अपने देश की कप्तानी करेंगे। 30 वर्षीय कादोवाकी फ्लेमिंग ने अब तक 55 टी20 अंतरराष्ट्रीय मैचों में 139.41 के स्ट्राइक रेट से 1871 रन बनाए हैं।

### आईसीसी ने दी इस बारे में जानकारी

आईसीसी ने बताया कि जापान की टीम में इब्राहिम ताकाहाशी और डेक्लन सुजुकी मैक्कॉम्ब अन्य दो खिलाड़ी हैं, जिन्हें 50 से अधिक टी20 अंतरराष्ट्रीय मैचों में खेलने का अनुभव है। आईसीसी ने कहा, जापान ने एशियाई खेलों की तैयारी को ध्यान में रखते हुए उन खिलाड़ियों को टीम में शामिल नहीं करने का फैसला किया है, जो आईसीसी नियमों के तहत टी20 अंतरराष्ट्रीय मैच खेलने के योग्य हैं, लेकिन एशियाई खेलों के नियमों के तहत अयोग्य हैं।एशियाई खेल 19 सितंबर से शुरू हो रहे हैं। पुरुषों की क्रिकेट प्रतियोगिता 24 सितंबर से शुरू होगी।

## बांग्लादेश एशिया कप के सेमीफाइनल में

कल भारत से होगा मुकाबला

● दुबई

यूएई को हराकर बांग्लादेश एशिया कप 2026 में पहुंचने वाली चौथी टीम बन गई। दुबई इंटरनेशनल क्रिकेट स्टेडियम में खेले गए मुकाबले में बांग्लादेश ने यूएई को 34 रन से हरा दिया। यूएई के सामने जीत के लिए 104 रन का लक्ष्य था, लेकिन यूएई की टीम 20 ओवर में 9 विकेट खोकर 69 रन ही बना पाई। पहला सेमीफाइनल 10 सितंबर को भारत और बांग्लादेश के बीच खेला जाएगा।

# पैरा आर्चरी वर्ल्ड सीरीजः भारत ने जीते 2 गोल्ड

## मेन्स रिकर्व-कंपाउंड टीम बनी चैंपियन, विमेंस रिकर्व को मिला सिल्वर

● अहमदाबाद

वर्ल्ड आर्चरी पैरा सीरीज स्टेज-3 के तीसरे दिन भारत ने 2 गोल्ड और 1 सिल्वर मेडल जीता। मेंस रिकर्व में हरविंदर सिंह-विजय सुंडी और मेंस कंपाउंड में तोमान कुमार-श्याम सुंदर स्वामी की जोड़ी चैंपियन बनी। वहीं, विमेंस रिकर्व में भावना-पूजा की जोड़ी चीन से हार गई और उन्हें सिल्वर मिला। तोमान कुमार और श्याम सुंदर स्वामी ने इराक के अब्बास काधिम और अनवर अलदावोद को 152-139 से हराया।

### हरविंदर-विजय ने रिकर्व में स्लोवाकिया को हराया

मेंस रिकर्व टीम के फाइनल में हरविंदर सिंह और विजय सुंडी ने स्लोवाकिया के डेविड इवान और डेनिस इवान को 6-2 से हराया। भारतीय जोड़ी पहला सेट 34-37 से हार गई थी, लेकिन इसके बाद लगातार तीन सेट जीतकर मुकाबला नाम किया। तीसरे सेट में हरविंदर ने लगातार तीन 10 अंक हासिल किए। हरविंदर टोक्यो 2020 में ब्रॉन्ज और पेरिस 2024 में गोल्ड मेडल जीत चुके हैं।

### भावना-पूजा को सिल्वर चीन से 0-6 से हारीं

विमेंस रिकर्व टीम फाइनल में भारत की भावना और पूजा को चीन की जोड़ी के खिलाफ 0-6 से हार मिली। मैच के तीनों सेट भारत के पक्ष में नहीं रहे और स्कोर 23-34, 33-35, 30-31 रहा। भारतीय जोड़ी पूरे फाइनल में एक भी 10 का स्कोर नहीं कर सकी।

### शीतल-पायल ब्रॉन्ज से चूकीं

विमेंस कंपाउंड टीम के ब्रॉन्ज मेडल मैच में शीतल देवी और पायल नाग को चीन की वांग हुईटिंग और गाओ फांगक्सिया से हार मिली। भारत की जोड़ी दूसरे एंड तक सिर्फ 1 पॉइंट पीछे थी, लेकिन तीसरे एंड में चीन ने बढ़त बढ़ा ली। इसके बाद भारतीय जोड़ी वापसी नहीं कर सकी और चौथे स्थान पर रही।

## महिला टी20 रैंकिंग में श्री चरणी शीर्ष पर बरकरार

● दुबई

अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद द्वारा मंगलवार को जारी टी20 गेंदबाजों की सूची में भारत की बाएं हाथ की स्पिनर शीर्ष क्रम पर बरकरार हैं। वहीं, अनुभवी दीप्ति शर्मा को फायदा हुआ है। ताजा रैंकिंग में श्री चरणी पहले, इंग्लैंड की सोफी एक्लेस्टन दूसरे, इंग्लैंड की चार्ली डीन तीसरे, दक्षिण अफ्रीका की एन मल्बा चौथे और इंग्लैंड की लॉरेन बेल पांचवें स्थान पर हैं। भारत की अनुभवी स्पिनर दीप्ति शर्मा को दो स्थान का फायदा हुआ है। दीप्ति अब छठे स्थान पर चली गई हैं। दीप्ति मौजूदा एशिया कप में शानदार फॉर्म में हैं, उन्होंने तीन मैचों में आठ विकेट लिए हैं और भारतीय टीम को सेमीफाइनल में भारत की बढ़त में अहम भूमिका निभाई है। इंग्लैंड की लिंसे स्मिथ एक स्थान के नुकसान के साथ सातवें है।

### चामरी अट्टापट्टू को भी मिला फायदा

इसके अलावा, एशिया कप में शानदार प्रदर्शन कर रही कुछ अन्य गेंदबाजों को भी आईसीसी रैंकिंग में फायदा मिला है। बांग्लादेश की मारूफा अख्तर ने 19 स्थान की छलांग लगाते हुए 18वें स्थान पर पहुंच गई हैं। श्रीलंका की कप्तान चामरी अटापट्टू पांच स्थान ऊपर चढ़कर 28वीं रैंक पर हैं और सुल्ताना खातून नौ स्थान ऊपर चढ़कर 37वीं रैंक पर हैं।

## पांच बॉक्सर राज्य स्तरीय प्रतियोगिता के लिए चयनित

● भोपाल / खेल संवाददाता

शासकीय आवासीय खेलकूद संस्थान सीहोर में संचालित बॉक्सिग नोडल खेल प्रशिक्षण केंद्र के पांच बॉक्सरों ने संभाग स्तरीय प्रतियोगिता में शानदार प्रदर्शन करते हुए राज्य स्तरीय प्रतियोगिता के लिए अपना स्थान सुनिश्चित किया है। खेल अधिकारी अताउल्लाह खान ने बताया कि तात्या टोपे स्टेडियम में आयोजित संभाग स्तरीय बॉक्सिग प्रतियोगिता में खिलाड़ियों ने अपने-अपने वजन वर्ग में शानदार प्रदर्शन करते हुए प्रथम स्थान प्राप्त किया।

# संचालक ने शूटिंग अकादमी और स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स का किया निरीक्षण

## शूटिंग अकादमी में राइफल-पिस्टल प्रशिक्षण, जिम, मेस और स्पोर्ट्स साइंस सेंटर का लिया जायजा

● भोपाल

खेल एवं युवा कल्याण विभाग, मध्यप्रदेश के संचालक चंचल शेखर ने मध्यप्रदेश राज्य शूटिंग अकादमी का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने अकादमी में राइफल एवं पिस्टल शूटिंग के खिलाड़ियों के प्रशिक्षण, शूटिंग रेंज, फिटनेस, खान-पान सहित खिलाड़ियों के लिए उपलब्ध विभिन्न सुविधाओं और व्यवस्थाओं का विस्तृत जायजा लिया।

इसके साथ ही शेखर नाथूबड़खेड़ा स्थित अंतर्राष्ट्रीय स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स भी पहुंचे, जहां उन्होंने ग्राउंड का निरीक्षण किया और एथलेटिक्स खिलाड़ियों से मुलाकात कर उनके प्रशिक्षण एवं आवश्यकताओं को लेकर चर्चा की। संचालक ने अकादमी में संचालित राइफल एवं पिस्टल शूटिंग की प्रशिक्षण व्यवस्थाओं का निरीक्षण किया। उन्होंने 10 मीटर, 25 मीटर एवं 50 मीटर शूटिंग रेंज तथा फाइनल रेंज का अवलोकन किया और खिलाड़ियों के प्रशिक्षण एवं अभ्यास की जानकारी ली। इस दौरान उन्होंने राइफल एवं पिस्टल के खिलाड़ियों से संवाद करते हुए उनके प्रशिक्षण, आवश्यकताओं और अकादमी में उपलब्ध सुविधाओं के संबंध में जानकारी प्राप्त की। उन्होंने राइफल एवं पिस्टल के कोच एवं प्रशिक्षकों से भी खिलाड़ियों के प्रशिक्षण कार्यक्रम, प्रदर्शन और प्रशिक्षण से जुड़ी व्यवस्थाओं पर चर्चा की।


| राजधानी (न्यू बॉम्बे) | |
|---|---|
| दिन | रात |
| 569 = 0 | 228 = 2 |
| 337 = 3 | 124 = 7 |
| शुभांक | |
| दिन | रात |
| 359 = 7 | 146 = 1 |
| 169 = 6 | 450 = 5 |
| भाग्यांक | |
| 3 5 | 6 9 |

www.kalyangame.com


पार्टनरशिप

### कैम्पा, एसबीआई लाइफ और चैटजीपीटी के साथ 130 करोड़ की डील

# बीसीसीआई को घरेलू क्रिकेट के लिए मिले साझेदार

● नई दिल्ली

भारतीय क्रिकेट कंट्रोल (बीसीसीआई) को अगले दो साल के लिए घरेलू क्रिकेट के लिए तीन साझेदार मिले हैं। कैम्पा, एसबीआई लाइफ और चैटजीपीटी को एसोसिएट पार्टनर के तौर जुड़े हैं। इन तीनों पार्टनरशिप की वैल्यू दो सीजन के लिए 130 करोड़ रुपये से ज्यादा है, जो पिछले चक्र से 44 प्रतिशत ज्यादा है। यह साझेदारी

भारत की वेस्टइंडीज के खिलाफ सीमित ओवरों की सीरीज से शुरू होगी और मार्च 2028 तक चलेगी। इससे पहले आईडीएफसी बैंक प्रायोजक था। बीसीसीआई ने कहा कि ये साझेदारियां इस बात को दर्शाती हैं कि भारतीय क्रिकेट कारोबार के लिए एक प्रभावी मंच है, जहां कंपनियां दृश्यता बढ़ाने के साथ बड़े और जुनूनी प्रशंसक वर्ग तक पहुंच बना सकती हैं। बीसीसीआई अध्यक्ष मिथुन मन्हास ने कहा, कैम्पा, एसबीआई लाइफ और चौटजीपीटी के साथ जुड़ाव भारतीय क्रिकेट तंत्र की ताकत को दिखाता है।

### सैकिया बोले, यह साझेदारी ब्रांड्स के भरोसे को दिखाती है

बीसीसीआई सचिव देवजीत सैकिया ने कहा, हमारे घरेलू सत्र की साझेदारी की वैल्यू बीसीसीआई और भारतीय टीम इंडिया पर ब्रांड्स के भरोसे को दिखाती है। कंबाइंड डील वैल्यू में 44 प्रतिशत की बढ़ोतरी। लेटेस्ट पार्टनरशिप की वैल्यू 130 करोड़ रुपये से ज्यादा होना बड़ी कामयाबी है। यह भारतीय क्रिकेट के साथ जुड़ने की डिमांड को दिखाता है। कैम्पा, एसबीआई लाइफ और चैटजीपीटी का साथ घरेलू सत्र से मिलने वाले मौकों को रेखांकित करता है।

# टीम इंडिया का कोच बना तो पत्नी दे देगी तलाक

**नई दिल्ली, आरएनएन।** भारतीय टीम के पूर्व तेज गेंदबाज आशीष नेहरा अपने मजाकिया अंदाज के लिए जाने जाते रहे हैं। हाल ही में जब आशीष नेहरा से भारतीय क्रिकेट टीम का हेड कोच बनने को लेकर सवाल पूछा गया तो उनका जवाब सुनकर वहां मौजूद हर शख्स की हंसी छूट गई। नेहरा ने मजाकिया लहजे में साफ कह दिया कि अगर उन्होंने बिना पूछे टीम इंडिया की कोचिंग की जिम्मेदारी ली तो उनका अपनी पत्नी रुश्मा नेहरा से तलाक हो सकता है।

पेस्कोव बोले, मोदी और पुतिन के बीच बेहद करीबी और व्यावहारिक संबंध

वैश्विक एजेंडे के संवेदनशील मुद्दों पर दोनों नेता खुलकर करते हैं चर्चा: पेस्कोव

ब्रिक्स को संगठन नहीं, देशों का 'क्लब' मानता है रूस, तीन स्तंभों पर सहयोग का जोर

ब्रिक्स में साझेदार देशों की बढ़ती भूमिका, 10 देशों को मिला पार्टनर का दर्जा

# ब्रिक्स समिट में शामिल होंगे रूसी राष्ट्रपति पुतिन

## 11 सितंबर को पीएम मोदी के साथ बैठक करेंगे, 9 महीने में दूसरी भारत यात्रा

जेंसी। नई दिल्ली/मॉस्को

दिल्ली में ब्रिक्स शिखर सम्मेलन से इतर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के बीच 11 सितंबर को द्विपक्षीय बैठक होने वाली है। क्रेमलिन ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन की शुक्रवार को होने वाली द्विपक्षीय बैठक की पुष्टि करते हुए भारत को रूस का 'रणनीतिक साझेदार' बताया है। रूसी राष्ट्रपति के दिल्ली पहुंचने से पहले क्रेमलिन के प्रवक्ता और राष्ट्रपति पुतिन के प्रेस सचिव दिमित्री पेस्कोव ने मंगलवार को मीडिया से वर्चुअल बातचीत की। उनके बयानों में भारत-रूस रिश्तों की गर्माहट के साथ-साथ बदलती वैश्विक व्यवस्था की झलक भी दिखाई दी। पेस्कोव ने कहा, दोनों देशों के बीच आपसी संपर्क बहुत अहम होंगे, खासकर प्रधानमंत्री मोदी के साथ बैठक। जैसा कि आप जानते हैं, भारत और रूस के नेताओं के बीच बहुत करीबी संबंध हैं। उनके संबंध बहुत व्यावहारिक हैं और वे एक-दूसरे के साथ इतने ईमानदार हैं कि वैश्विक एजेंडे और हमारे आपसी संबंधों से जुड़े सबसे संवेदनशील मुद्दों पर बहुत खुले और रचनात्मक तरीके से चर्चा कर सकते हैं।

### व्यापार से यूक्रेन युद्ध तक, इन मुद्दों पर होगी बात

मोदी-पुतिन की बैठक में व्यापार, आर्थिक सहयोग और परिवहन से जुड़े मुद्दों पर चर्चा होगी। दोनों देश आपसी कारोबार बढ़ाने और अपनी कंपनियों के लिए नए मौके तलाशने पर भी बात कर सकते हैं। भारतीय कंपनियां रूस के बाजार में विस्तार करना चाहती हैं, जबकि रूस भारत में अपने कारोबार और उत्पादों की पहुंच बढ़ाने में रुचि रखता है। बैठक में रूस-यूक्रेन युद्ध और फारस की खाड़ी में जारी तनाव भी चर्चा का हिस्सा हो सकता है। दोनों नेता युद्ध की मौजूदा स्थिति और उसके असर पर बात कर सकते हैं। रूस के मुताबिक, खाड़ी में जारी घटनाओं का असर वैश्विक अर्थव्यवस्था पर पड़ रहा है।

### ब्रिक्स कोई संगठन नहीं है; यह एक क्लब है: पेस्कोव

ब्रिक्स की अहमियत पर पेस्कोव ने प्रकाश डालते हुए कहा, मैं आपको याद दिलाना चाहता हूं कि ब्रिक्स कोई संगठन नहीं है; यह एक क्लब है। हमारे पास कोई चार्टर, नियम या स्थायी कार्यालय नहीं है। बल्कि, यह उन देशों का एक क्लब है जो इस बात पर एक जैसी सोच रखते हैं कि दुनिया में काम कैसे होने चाहिए और अलग-अलग क्षेत्रों में सहयोग कैसे किया जाना चाहिए। उन्होंने ब्रिक्स के तीन प्रमुख स्तंभों का जिक्र करते हुए कहा, रूस ब्रिक्स सहयोग के तीन मुख्य स्तंभों - राजनीति और सुरक्षा; अर्थव्यवस्था और वित्त; और सांस्कृतिक व मानवीय संपर्क - के और विकास में योगदान देने की पूरी कोशिश कर रहे हैं। बेशक, हमारी अपनी कई पहल हैं जिन्हें हम इस समूह के भीतर बढ़ावा दे रहे हैं। हम ब्रिक्स के भीतर सहयोग के अलग-अलग तरीकों में ज्यादा से ज्यादा देशों को शामिल करने के विचार का समर्थन करते हैं। पार्टनर कंट्री के कॉन्सेप्ट की प्रशंसा करते हुए पेस्कोव बोले, 2024 में, पार्टनर देशों की एक नई श्रेणी - 'ब्रिक्स पार्टनर कंट्री' श्रेणी - बनाई गई थी, और अब यह बहुत अच्छी तरह से विकसित हो रही है। बेलारूस, बोलीविया, वियतनाम, कजाकिस्तान, क्यूबा, नाइजीरिया, मलेशिया, थाईलैंड, युगांडा और उज्बेकिस्तान को पार्टनर का दर्जा दिया गया है। इन देशों के प्रतिनिधियों को धीरे-धीरे अलग-अलग वर्किंग ग्रुप और फॉर्मेट में शामिल किया जा रहा है, और हम इसे एक बहुत ही सकारात्मक विकास मानते हैं।

### भारत को सु-57 लड़ाकू विमान बेचना रूस के एजेंडे में शामिल

रूस भारत को अपना सु-57 लड़ाकू विमान बेचने की तैयारी कर रहा है। क्रेमलिन के प्रवक्ता दिमित्री पेस्कोव ने कहा है कि भारत को सु-57 की बिक्री का मुद्दा रूस के एजेंडे में शामिल है। सु-57 रूस का पांचवीं पीढ़ी का लड़ाकू विमान है। इसे स्टील्थ तकनीक के साथ बनाया गया है, यानी इसे दुश्मन के रडार पर पकड़ना मुश्किल होता है। यह हवा से हवा और हवा से जमीन पर हमला करने वाले आधुनिक हथियारों से लैस हो सकता है। विमान में आधुनिक रडार, सेंसर और इलेक्ट्रॉनिक वॉरफेयर सिस्टम भी लगाए गए हैं।

### रूस और भारत की दोस्ती 55 साल पुरानी

भारत-रूस की दोस्ती की मजबूत नींव सोवियत संघ के दौर में पड़ी। 9 अगस्त 1971 को दोनों देशों ने शांति, मैत्री और सहयोग संधि पर हस्ताक्षर किए। इसके बाद रक्षा, उद्योग और तकनीक के क्षेत्र में सहयोग बढ़ा। सोवियत संघ ने भारत के इंडस्ट्रियल डेवलपमेंट में भी मदद की। भिलाई स्टील प्लांट इसका उदाहरण है। भारत ने सोवियत संघ और बाद में रूस से लड़ाकू विमान, टैंक, पनडुब्बियां और मिसाइल सिस्टम खरीदे।

### यूक्रेन युद्ध के बाद रिश्ते कैसे बदले?

2022 में यूक्रेन युद्ध शुरू होने के बाद अमेरिका और यूरोपीय देशों ने रूस पर प्रतिबंध लगाए। इसके बावजूद भारत ने रूस से कच्चा तेल खरीदना जारी रखा। रॉयटर्स के मुताबिक, 2024 में दोनों देशों का व्यापार करीब 70 अरब डॉलर के रिकॉर्ड स्तर पर पहुंच गया। जुलाई 2026 में रूस भारत के कुल कच्चे तेल आयात का 50.83% हिस्सा था। भारत ने उस महीने रूस से करीब 24.7 लाख बैरल तेल रोजाना खरीदा। यानी यूक्रेन युद्ध के बाद भारत के लिए रूस बड़ा तेल सप्लायर बना।

### क्या व्यापार डॉलर से दूर हो रहा है?

पश्चिमी प्रतिबंधों के बाद भारत और रूस ने रुपए-रूबल में कारोबार बढ़ाया। रूस के मुताबिक, दोनों देशों के व्यापार का करीब 96% हिस्सा अब अपनी करेंसी में हो रहा है। इसमें 22 रूसी और 17 भारतीय बैंक शामिल हैं। हालांकि, 8 सितंबर 2026 को क्रेमलिन के प्रवक्ता दिमित्री पेस्कोव ने कहा कि रूस डॉलर को खत्म नहीं करना चाहता, बल्कि भुगतान के दूसरे विकल्प बढ़ाना चाहता है।

### चीन और अमेरिका कहां खड़े हैं?

रूस के साथ भारत पुराने रिश्ते बनाए हुए है, लेकिन अमेरिका के साथ भी रणनीतिक और रक्षा संबंध मजबूत कर रहा है। वहीं, रूस के चीन के साथ रिश्ते गहरे हुए हैं, क्यों रूस के लिए भारत और चीन दोनों सबसे बड़े खरीदार हैं। रॉयटर्स के मुताबिक, दोनों देश मिलकर रूस से करीब 90% समुद्री तेल खरीदते हैं। इसलिए भारत एक साथ तीन बड़े समीकरण संभाल रहा है- रूस के साथ साझेदारी, अमेरिका के साथ सहयोग और चीन के साथ प्रतिस्पर्धा।

### ब्रिक्स क्या है?

*ब्रिक्स 11 प्रमुख उभरती हुई अर्थव्यवस्थाओं वाले देशों का एक समूह है। इनमें ब्राजील, रूस, भारत, चीन, दक्षिण अफ्रीका, मिस्र, इथियोपिया, ईरान, यूएई, सऊदी अरब और इंडोनेशिया शामिल हैं। इसका मकसद इन देशों के बीच आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक सहयोग को बढ़ावा देना है। इसमें शुरुआत में 4 देश थे, जिसे ब्रिक्स कहा जाता था। यह नाम 2001 में गोल्डमैन सैक्स के अर्थशास्त्री जिम ओ'नील ने दिया था।*

### अमेरिकी प्रतिबंध विधेयक अवैध'

भारत के रूसी ऊर्जा आयात पर अमेरिका की ओर से प्रतिबंध लगाने संबंधी प्रस्ताव पर पेस्कोव ने कड़ा रुख अपनाया। उन्होंने अमेरिकी प्रतिबंध विधेयक को 'अवैध' करार दिया। पेस्कोव ने ब्रिक्स को सिर्फ आर्थिक समूह के रूप में देखने से आगे बढ़ते हुए इसे बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था का प्रतीक बताया। उन्होंने कहा कि भारत ने अपनी ब्रिक्स अध्यक्षता में काफी निवेश किया है और संगठन की विचारधारा बहुध्रुवीय दुनिया की विचारधारा है। उनके अनुसार एकध्रुवीय दुनिया ढह रही है और अपनी प्रतिस्पर्धात्मकता खो रही है। उनके मुताबिक, दिल्ली में होने वाला ब्रिक्स सम्मेलन केवल सदस्य देशों की बैठक नहीं है। इसके पीछे दुनिया की उस नई व्यवस्था की बहस भी है जिसमें रूस, भारत, चीन और दूसरे उभरते देश वैश्विक निर्णय प्रक्रिया में अधिक प्रभाव की मांग कर रहे हैं।

## आतंकी साजिश रचने के आरोपों में अमेरिकी समेत सात विदेशी नागरिकों के खिलाफ चार्जशीट

जेंसी। नई दिल्ली

राष्ट्रीय जांच एजेंसी 'एनआईए' ने आतंकी गतिविधियों की साजिश रचने और उग्रवाद से संबंधित कैंप आयोजित करने जैसे गंभीर आरोपों में शामिल एक अमेरिकन सहित सात विदेशी नागरिकों के मामले में मंगलवार को चार्जशीट दाखिल की है। एनआईए ने आरोपियों के खिलाफ गैरकानूनी गतिविधियां (रोकथाम) अधिनियम, 1967 'यूएपीए' की धारा 18 लगाई थी। खास बात है कि चार्जशीट में सभी आरोपियों के खिलाफ यूएपीए की धारा हटाई गई है। चार्जशीट में केवल 'इमिग्रेशन एंड फॉरेनर्स एक्ट', 2025 की धारा 21 और 23 लिखी है। ये दोनों धाराएं में फॉरेनर्स रीजनल रजिस्ट्रेशन ऑफिस के स्तर पर समझौता योग्य (कंपाउंडेबल) अपराध की श्रेणी में आती हैं।

### 180 दिन पहले पकड़े गए थे आरोपी

सुप्रीम कोर्ट के वकील रोहित डंडरियाल, जिन्होंने अदालत के समक्ष आरोपियों का पक्ष रखा, ने अमर उजाला को बताया कि इस केस में जांच एजेंसी पर कई सवाल खड़े होते हैं। आरोपियों को 180 दिन पहले पकड़ा गया था। उस वक्त जांच एजेंसी ने आतंकी साजिश की बात कही थी। अधिवक्ता रोहित का कहना है कि उन्होंने जांच एजेंसी के समक्ष कहा था कि वे लोग घूमने आए थे। उनके पास सभी तरह के दस्तावेज थे। इसके बावजूद उन्हें तीस दिन की न्यायिक हिरासत में रखा गया। उसके बाद वह अवधि 90 दिन तक बढ़ा दी गई।

### एक अमेरिकी और छह यूक्रेनी नागरिक

राष्ट्रीय जांच एजेंसी द्वारा गिरफ्तार आरोपियों में अमेरिकी नागरिक मैथ्यू एरन वैनडाइक सहित छह यूक्रेनी नागरिक हुरबा पेट्रो, स्लीवियाक तारास, इवान सुकमानोव्स्की, स्टेफनकिव मारियन, होंचारुक मक्सिम और कामिन्स्की विक्टर शामिल हैं। इनके खिलाफ यूएपीए की धारा 18 समेत कई अन्य धाराओं के तहत केस दर्ज किया था। 13 मार्च को अमेरिकन नागरिक वैनडाइक को कोलकाता एयरपोर्ट पर हिरासत में लिया गया था। यूक्रेन के नागरिकों को दिल्ली और लखनऊ के एयरपोर्ट से गिरफ्तार किया गया।

## पुलिस रिकॉर्ड में दर्ज 200 बदमाश लापता, एसएसपी ने दिया ऑफर, हिस्ट्रीशीटर ढूंढो और हजार रुपये पाओ

। अलीगढ़

अलीगढ़ जिले में पुलिस रिकॉर्ड में दर्ज करीब 200 हिस्ट्रीशीटर बदमाश पुलिस की निगाह से लापता हैं। इनका न मौजूदा ठिकाना मिल रहा है और न ही सत्यापन हो पा रहा है। अब इनकी तलाश पुलिस के लिए चुनौती बन गई है। एसएसपी नीरज कुमार जादौन ने यहां तक ऑफर दे दिया है कि जो सिपाही हिस्ट्रीशीटर को तलाशकर उसका सत्यापन कराएगा, उसे एक हजार रुपये का नकद इनाम दिया जाएगा। पुलिस लाइन में हाल ही में हुई अपराध समीक्षा बैठक में यह स्थिति सामने आई। पुलिस रिकॉर्ड के अनुसार जिले में दो हजार से अधिक अपराधियों की हिस्ट्रीशीट खुली हुई है। इनमें करीब 1800 हिस्ट्रीशीटरों का सत्यापन पूरा हो चुका है, जबकि लगभग 200 ऐसे हैं, जिनका मौजूदा पता और गतिविधियां पुलिस के रिकॉर्ड में स्पष्ट नहीं हैं। एसएसपी ने इसे गंभीरता से लेते हुए सभी बीट कांस्टेबलों को अपने-अपने क्षेत्र के लापता हिस्ट्रीशीटरों की तलाश करने के निर्देश दिए हैं।

# सीएम योगी ने दी बड़ी सौगात आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं का बढ़ाया मानदेय

## आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं को 12 हजार और सहायिकाओं को छह हजार मिलेगा मानदेय

।योध्या

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने मंगलवार को प्रदेश की 2.91 लाख आंगनवाड़ी कार्यकत्रियों और सहायिकाओं को बड़ी सौगात दी। आंगनवाड़ी कार्यकत्रियों का मानदेय आठ हजार से बढ़ाकर 12 हजार रुपये और सहायिकाओं का चार हजार से बढ़ाकर छह हजार रुपये प्रतिमाह किया जाएगा। इसके साथ ही कार्यकत्रियों, सहायिकाओं तथा उनके परिवारों को हर वर्ष पांच लाख रुपये तक कैशलेस इलाज की सुविधा मिलेगी। अब उन्हें दो के बजाय तीन साड़ियां मिलेंगी। मुख्यमंत्री ने स्मार्टफोन और रियल टाइम डेटा के इस्तेमाल से आंगनवाड़ी केंद्रों को स्मार्ट बनाने की भी घोषणा की।

- दो की जगह अब मिलेंगी तीन साड़ियां, स्मार्टफोन से रियल टाइम डेटा से जुड़ेंगे आंगनवाड़ी केंद्र
- मुख्यमंत्री बोले, पहले मासूम बच्चों के पोषाहार पर था माफिया का शिकंजा, अब महिला समूहों के हाथ में व्यवस्था
- सपा-कांग्रेस ने राम मंदिर ही नहीं, अयोध्या की सड़क, रेलवे स्टेशन और एयरपोर्ट का भी किया विरोध: सीएम योगी

### शराब माफिया संचालित करता था बच्चों का पोषाहार

पूर्ववर्ती सरकारों पर हमला करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि 2017 से पहले आंगनवाड़ी केंद्र जर्जर थे। बच्चे बैठने के लिए टाट लेकर आते थे। पेयजल और जरूरी उपकरणों का अभाव था। केंद्र सरकार पैसा देती थी, लेकिन पोषाहार पर माफिया का शिकंजा था। प्रदेश में बच्चों का पोषाहार एक शराब माफिया संचालित करता था। सरकार और माफिया व्यवस्था को चौपट करते थे और बदनामी आंगनवाड़ी कार्यकत्रियों और सहायिकाओं को झेलनी पड़ती थी। अब पोषाहार को माफिया से मुक्त कर 204 स्थानों पर टेक होम राशन प्लांट महिला स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से संचालित किए जा रहे हैं।

### सपा-कांग्रेस ने किया राममंदिर का विरोध

अयोध्या के बदलाव को आंगनवाड़ी केंद्रों के कायाकल्प से जोड़ते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि दस वर्ष पहले यहां न पर्याप्त बिजली थी, न सड़कें और न सुविधाएं। आज अयोध्या में फोरलेन सड़कें, भव्य रेलवे स्टेशन और महर्षि वाल्मीकि के नाम पर अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट है। रेलवे की सिंगल लाइन डबल हो चुकी है। राम की पैड़ी का कायाकल्प हुआ और अयोध्या देश की सोलर सिटी बनी है।

### हर आंगनवाड़ी केंद्र को अपना भवन देना लक्ष्य

मुख्यमंत्री ने आंगनवाड़ी कार्यकत्रियों की भूमिका को बच्चों के भविष्य से जोड़ते हुए कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने 2018 में इनकी भूमिका की तुलना माता यशोदा से की थी। मां के बाद छोटे बच्चों का पहला संवाद आंगनवाड़ी कार्यकत्रियों और सहायिकाओं से होता है। बचपन स्वस्थ होगा तो भारत स्वस्थ, समर्थ, आत्मनिर्भर और विकसित बनेगा। पिछले नौ वर्षों में प्रदेश के 70 हजार से अधिक आंगनवाड़ी केंद्रों को व्यवस्थित स्वरूप दिया गया है। सरकार का लक्ष्य प्रत्येक आंगनवाड़ी केंद्र को अपना भवन उपलब्ध कराना है। इसके लिए राज्य वित्त आयोग की धनराशि या अलग बजट से भवनों का निर्माण कराया जाएगा।

### नौ साल में आंगनबाड़ी व्यवस्था को किया व्यवस्थित

अयोध्या के राजकीय इंटर कॉलेज में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि प्रदेश में उनकी सरकार बनने से पहले आंगनबाड़ी केंद्रों की स्थिति ठीक नहीं थी। कई केंद्र वीरान पड़े रहते थे और वहां उपलब्ध संसाधनों का समुचित उपयोग नहीं होता था। उन्होंने आरोप लगाया कि पिछली सपा सरकार के दौरान आंगनबाड़ी केंद्रों के लिए भेजे जाने वाले धन का दुरुपयोग किया जाता था।

### इनका किया गया सम्मान व दिया गया चेक, साड़ी, प्रशस्ति पत्र आदि

**बढ़े हुए मानदेय का चेक वितरण**

- सुनीता पांडेय - आंगनवाड़ी कार्यकर्ता
- सोनी साहू - आंगनवाड़ी सहायिका

**साड़ी वितरण**

- ममता पांडेय - आंगनवाड़ी कार्यकर्ता
- नीलम यादव - आंगनवाड़ी कार्यकर्ता
- अर्चना मिश्रा - आंगनवाड़ी सहायिका
- सोनी साहू - आंगनवाड़ी सहायिका

**नव नियुक्त आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं व सहायिकाओं को नियुक्ति पत्र का वितरण**

- ज्योति निषाद - आंगनवाड़ी सहायिका
- अमृता निषाद - आंगनवाड़ी सहायिका

**अति कुपोषित श्रेणी से सामान्य पोषण स्थिति प्राप्त करने वाले बच्चों तथा संबंधित आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं का सम्मान**

- अनाया पुत्री आरती
- परी कन्नौजिया पुत्री सारिका
- मिथलेश कुमारी (आंगनवाड़ी कार्यकर्ता)

**महिला कल्याण विभाग द्वारा संचालित संवासिनी गृह के निवासरत बच्चों द्वारा शिक्षा संस्थान में उत्कृष्ट परिणाम के अंतर्गत**

- मोहिनी पाल (इंटर में 82.02 प्रतिशत अंक) - प्रशस्ति पत्र व बैग
- भाविनी शर्मा (हाईस्कूल में 89.16 प्रतिशत अंक) - प्रशस्ति पत्र व बैग
- देवेश यादव (हाईस्कूल में 77 प्रतिशत अंक) - प्रशस्ति पत्र व बैग

**महिला कल्याण विभाग की उत्कृष्ट विभागीय सेवाओं हेतु सम्मान**

- सफलता (अधीक्षिका राजकीय बाल गृह बालिका, लखनऊ) - प्रशस्ति पत्र
- नीतू सिंह (पर्यवेक्षक राजकीय बाल गृह बालिका, प्रयागराज) - प्रशस्ति पत्र

**बेटी-बचाओ, बेटी पढ़ाओ के अंतर्गत माउंट एवरेस्ट बेस कैंप का विजय अभियान करने वाली बालिकाएं**

- नीलांशु - प्रशस्ति पत्र व बैग
- प्रियंका उपाध्याय - प्रशस्ति पत्र व बैग
- प्रियंका प्रजापति - प्रशस्ति पत्र व बैग

वहीं आईआरएफसी नई दिल्ली के श्वेतकेतु मिश्रा (चीफ जनरल मैनेजर) व अवनीश प्रकाश ने दो करोड़ रुपये के सीएसआर के जरिए जनपद के 1,250 आंगनबाड़ी केंद्रों को प्री स्कूल किट उपलब्ध कराई। भारत केयर्स के सीईओ भोमिक शाह ने 5 हजार छात्राओं को स्कॉलरशिप दी और जगमग अयोध्या कार्यक्रम का क्रियान्वयन कराया। इन्हें भी सीएम योगी ने प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया।

### सेवा की मिसाल बनीं आंगनवाड़ी कार्यकत्रियां

मुख्यमंत्री ने कहा कि 2017 में सरकार बनने के समय आंगनवाड़ी कार्यकत्रियों को महज तीन हजार रुपये मानदेय मिलता था। सरकार ने इसे परफॉर्मेंस आधारित व्यवस्था से जोड़ते हुए आठ हजार रुपये किया। अब इसे बढ़ाकर 12 हजार रुपये किया जाएगा। सहायिकाओं का मानदेय भी 1,500 रुपये से बढ़ाकर पहले चार हजार और अब छह हजार रुपये किया जा रहा है। आंगनवाड़ी कार्यकत्रियों और सहायिकाओं ने कोरोना जैसी सदी की सबसे बड़ी महामारी के दौरान एएनएम और आशा कार्यकर्ताओं के साथ मिलकर महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वे गांव-गांव स्क्रीनिंग से लेकर दस्तक अभियान और संक्रमित लोगों की सेवा तक अपनी जान जोखिम में डालकर जुटी रहीं। मुख्यमंत्री योगी ने कहा कि सभी आंगनवाड़ी कार्यकत्रियों और सहायिकाओं के साथ उनके परिवार को हर वर्ष पांच लाख रुपये तक कैशलेस स्वास्थ्य सुविधा मिलेगी। इसका लाभ इम्पैनल्ड अस्पतालों के साथ सरकारी अस्पतालों और मेडिकल कॉलेजों में लिया जा सकेगा। हाल में प्रदेश के करीब 15 लाख शिक्षकों, शिक्षामित्रों और अनुदेशकों को पांच लाख रुपये की कैशलेस स्वास्थ्य सुविधा दी गई है। लगातार मांग आ रही थी कि आंगनवाड़ी कार्यकत्रियों और सहायिकाओं को भी इससे जोड़ा जाए। अब सरकार यह सुविधा उन्हें भी देने जा रही है।

### प्रदेश व जिले के अन्य गणमान्य अतिथि उपस्थित रहे

समारोह में सैम और मैम श्रेणी से सामान्य पोषण स्थिति में आए बच्चों और उनके अभिभावकों, उत्कृष्ट कार्य करने वाले आंगनवाड़ी केंद्रों तथा एवरेस्ट बेस कैंप अभियान में शामिल बेटियों को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर कृषि मंत्री सूर्य प्रताप शाही, महिला कल्याण व बाल विकास एवं पुष्टाहार मंत्री बेबी रानी मौर्य, महिला कल्याण राज्य मंत्री प्रतिभा शुक्ला, अयोध्या महापौर पंडित गिरीशपति त्रिपाठी, जिला पंचायत अध्यक्ष रोली सिंह, विधान परिषद सदस्य हरिओम पांडेय, अयोध्या सदर विधायक वेद प्रकाश गुप्ता, रुदौली विधायक रामचंद्र यादव, मिल्कीपुर विधायक चंद्रभानु पासवान, गोसाईंगंज विधायक डॉ. अमित सिंह चौहान, अभय सिंह, महिला कल्याण एवं बाल विकास विभाग की अपर मुख्य सचिव लीना जौहरी, प्रदेश व जिले के अन्य गणमान्य अतिथि उपस्थित रहे।

## संक्षिप्त समाचार

### फ्रांस में पहला हिंदू मंदिर: प्राण प्रतिष्ठा में 40 देशों से पहुंचे मेहमान

**पेरिस, एजेंसी।** फ्रांस की राजधानी पेरिस में रविवार को देश का पहला पारंपरिक हिंदू मंदिर श्रद्धालुओं के लिए खोल दिया गया। वैदिक मंत्रोच्चार के बीच बीएपीएस अक्षरधाम संस्थान के गुरु महंतस्वामी महाराज ने प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम को पूरा किया। इसमें यूरोप, अमेरिका, अफ्रीका, ऑस्ट्रेलिया और एशिया से आए संतों, भक्तों और गणमान्य लोगों ने हिस्सा लिया। मंदिर का निर्माण प्राचीन भारतीय वास्तुकला और वैदिक शिल्पशास्त्र के आधार पर किया गया है। इसमें फ्रांसीसी आधुनिक तकनीक का भी सुंदर मेल देखने को मिलता है। 13 दिनों तक चले इस महोत्सव में 40 से अधिक देशों से लोग शामिल हुए। प्रतिष्ठा से पहले पेरिस में एक भव्य नगर यात्रा निकाली गई। यात्रा में 14 सुसज्जित रथों पर हिंदू देवी-देवताओं की मूर्तियां सजाई गईं। पारंपरिक वेशभूषा में कलाकारों ने नृत्य प्रस्तुतियां दीं। यात्रा एफिल टावर और एकोल मिलिटेर से होते हुए प्लास द ला कॉनकॉर्ड तक पहुंची। यात्रा ने फ्रांस में भारतीय संस्कृति और हिंदू धर्म का नया अध्याय खोल दिया। यह मंदिर 5000 वर्गमीटर क्षेत्र में फैला है। ऊपरी तल पर पारंपरिक मंदिर और नीचे सांस्कृतिक केंद्र के रूप में हवेली बनाई गई है। इस अवसर पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने वीडियो संदेश जारी किया। उन्होंने कहा कि स्वामी प्रभुपाद ने भारत के सांस्कृतिक आध्यात्मिक वैभव के पुनर्जागरण का अभियान शुरू किया था। आज उसका प्रकाश यूरोप समेत पूरी दुनिया में फैल रहा है। 2024 में अबू धाबी में भी एक भव्य मंदिर का लोकार्पण हुआ था। यह निर्माण संतों की संकल्प शक्ति का प्रमाण है। उन्होंने कहा, बीएपीएस स्वामी नारायण संस्था और करोड़ों हरि भक्तों को इस अवसर पर बधाई दी गई। बीएपीएस मंदिरों से भारत के प्राचीन विचार और मानवीय मूल्य प्रसारित होते हैं। यह मंदिर फ्रांस की विविधता को समृद्ध करेगा और सांस्कृतिक संबंधों को ऊर्जा देगा। भारत और फ्रांस के संबंध नई ऊंचाइयों तक पहुंचे हैं। दोनों देश राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों के साथ मिलकर विशेष वैश्विक रणनीतिक साझेदारी बना रहे हैं। उन्होंने कहा, यह साझेदारी पुराने सांस्कृतिक और राजनीतिक संबंधों की मजबूत बुनियाद पर टिकी है। फ्रांस में भारतीय सैनिकों के बलिदान का इतिहास आज भी जीवित है। फ्रेंच स्कॉलर्स ने संस्कृत को लोकप्रिय बनाने में अहम भूमिका निभाई है। रामकृष्ण परमहंस और स्वामी विवेकानंद पर रोमा रोला की लेखनी समाजों को करीब लाई। प्रधानमंत्री ने कहा, दशकों पहले श्रील प्रभुपाद स्वामी ने फ्रांस आकर आध्यात्मिक संबंधों का नया अध्याय शुरू किया था। आज योग भी भारत और फ्रांस के लोगों के बीच जुड़ाव का एक अहम जरिया बन चुका है। यह स्वामी नारायण मंदिर मेड इन इंडिया है और बिल्ट इन फ्रांस है। इसके पत्थर भारत में तराशे गए हैं। भारत की प्राचीन प्रतिभा फ्रांस की आधुनिक इंजीनियरिंग से जुड़कर इस भव्य मंदिर ने आकार लिया है। यह मंदिर सदियों तक दोनों देशों के बीच सहयोग और संभावनाओं का प्रतीक बनेगा और सेवा प्रकल्पों का केंद्र होगा।

### गाजा को लेकर इस्राइल से नाराज है यूएस?: अमेरिकी प्रतिनिधि कुशनर का बड़ा बयान- बेतुकी कार्रवाई कर रहे नेतन्याहू

**कीव, एजेंसी।** अमेरिकी विशेष दूत और राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के दामाद जेरेड कुशनर ने रविवार को कहा कि इस्राइल में होने वाले नेसेट चुनाव की वजह से गाजा के हालात को लेकर प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू सरकार का रवैया थोड़ा तर्कहीन हो गया है। इस बीच, वॉशिंगटन हमास और इलाके के दूसरे हथियारबंद गुटों से हथियार हटाने की योजना को आगे बढ़ाने की कोशिशें जारी रखे हुए है। कुशनर ने ये बातें कीव में एक प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान कहीं, जहां वे रूस-यूक्रेन संघर्ष को खत्म करने की कोशिशों पर बातचीत के बाद अमेरिकी दूत स्टीव विटकोफ और यूक्रेनी राष्ट्रपति वोलोडिमिर जेलेंस्की के साथ मौजूद थे। गाजा के हालात पर बात करते हुए कुशनर ने कहा कि वॉशिंगटन और इस्राइल मोटे तौर पर इस बात पर सहमत हैं कि वे क्या नतीजा चाहते हैं, लेकिन उन्होंने कहा कि इस्राइल में 27 अक्टूबर को होने वाले नेसेट चुनाव से पहले घरेलू राजनीतिक वजहों से यह मामला उलझ रहा है। कुशनर ने कहा, 'हम इस्राइल में कुछ राजनीतिक मुद्दों पर काम कर रहे हैं। मुझे लगता है कि अंतिम स्थिति को लेकर हम उनसे सहमत हैं। वहां अभी-अभी एक चुनाव हुआ है। इस वजह से कुछ मामलों में उनका व्यवहार थोड़ा अतार्किक हो गया है।' उनके ये बयान तब आए हैं जब इस्राइल ने 'बोर्ड ऑफ पीस' के उस प्रस्ताव का विरोध किया है, जिसमें गाजा में हमास और दूसरे हथियारबंद गुटों के हथियार हटाने की बात कही गई है। यह एक बड़ी योजना का हिस्सा है, जिसमें उस इलाके से इस्राइल सेना की वापसी भी शामिल होगी। अमेरिका इस प्रस्ताव को आगे बढ़ाने की कोशिश कर रहा है, लेकिन इस्राइल के विरोध की वजह से यह प्रक्रिया रुकी हुई है। दरअसल, कुशनर, जो गाजा को लेकर अमेरिकी कूटनीतिक कोशिशों में शामिल रहे हैं, उन्होंने वहां के हालात के बारे में निराशाजनक बात कही। उन्होंने कहा, 'गाजा में बहुत लंबे समय से हालात ठीक नहीं रहे हैं। इसे असल में एनजीओ और आतंकवादियों ने बनाया था। यह लंबे समय से एक बहुत बुरी जगह बन गया है।' ये बातें ऐसे समय में कही गईं जब गाजा पर इस्राइल के हमले जारी हैं। युद्ध के बाद की व्यवस्थाओं, खासकर हमास के हथियारों और इस्राइली सेना की वापसी के दायरे को लेकर मतभेद बने हुए हैं। शांति योजना में हमास और अन्य सशस्त्र समूहों के हथियार हटाने की प्रक्रिया को इस्राइली सेना की वापसी से जोड़ने की कोशिश की गई है, लेकिन इस प्रस्ताव को राजनीतिक बाधाओं का सामना करना पड़ रहा है क्योंकि इस्राइल ऐसी किसी भी व्यवस्था

# होर्मुज बंद है या खुला: ट्रंप के दावे पर भी किया पलटवार

## अमेरिकी जहाजों पर हमला करने के बाद क्या बोला ईरान?

**तेहरान, एजेंसी।** ईरान के सुप्रीम नेशनल सिक्योरिटी काउंसिल के सचिव मोहसिन रजाई ने होर्मुज जलडमरूमध्य की मौजूदा स्थिति को लेकर अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के दावे को सीधे खारिज किया है। ईरानी सरकारी प्रसारक आईआरआईबी से बातचीत में रजाई ने कहा कि होर्मुज पूरी तरह बंद है और ट्रंप का यह कहना कि जलडमरूमध्य खुला है, 'बहुत बड़ा झूठ' है। उनके मुताबिक जलडमरूमध्य से जहाजों की आवाजाही बेहद सीमित रह गई है। रजाई ने यह भी कहा कि अमेरिका अगर ईरान को धमकी देना या उस पर हमला करना बंद कर देता है, तो ईरान होर्मुज को खुला रखने के लिए तैयार होगा। रजाई ने कहा कि होर्मुज बंद किए जाने से पहले इस रास्ते से 100 से ज्यादा जहाज गुजरते थे। इन जहाजों के जरिये 10 करोड़ टन से ज्यादा सामान का परिवहन होता था।

अब उनके दावे के मुताबिक केवल सात से आठ जहाज ही इस क्षेत्र से गुजर रहे हैं और इनमें ईरान की जरूरी वस्तुएं ले जाने वाले जहाज शामिल हैं। उन्होंने यह भी दावा किया कि अमेरिका से जुड़े कुछ जहाज चोरी-छिपे इस क्षेत्र से गुजरने की कोशिश करते हैं, जिन्हें ईरानी बल पहचानकर निशाना बनाते हैं। रजाई के अनुसार अमेरिका पांच से छह जहाजों को इस क्षेत्र से निकालने की कोशिश करता है और इन पर हमला किया जाता है।

**ईरान होर्मुज के बाहर नया प्रतिबंधित क्षेत्र क्यों बना रहा है?:** रजाई ने कहा कि आने वाले दिनों में होर्मुज जलडमरूमध्य के बाहर एक नया प्रतिबंधित क्षेत्र घोषित किया जाएगा। उनके मुताबिक यह क्षेत्र उस जगह से शुरू होगा, जिसे ईरान

अमेरिकी नौसैनिक नाकाबंदी की रेखा बता रहा है और यह फारस की खाड़ी के कुछ हिस्सों तक फैलेगा। ईरान ने साफ चेतावनी दी है कि नए घोषित क्षेत्र में प्रवेश करने वाले किसी भी जहाज को प्रतिबंधों की सूची में डाल दिया जाएगा। इसका मतलब यह है कि ईरान की ओर से समुद्री आवाजाही पर लगाई जा रही पाबंदियां केवल होर्मुज जलडमरूमध्य तक सीमित नहीं रह सकती हैं।

**ईरान ने अमेरिकी जहाजों को डुबोने से परहेज क्यों किया?:** मोहसिन रजाई ने दावा किया कि ईरान अमेरिकी तस्करी वाले जहाजों को देख रहा है और उन्हें नष्ट भी कर रहा है। हालांकि, उन्होंने कहा कि ईरान ने इन जहाजों को डुबाने का फैसला नहीं किया है। उनका तर्क है कि इन जहाजों में तेल होता है और उनके डूबने से क्षेत्र के पर्यावरण को नुकसान हो सकता है। रजाई के मुताबिक ईरान ने कुछ अमेरिकी सैन्य ठिकानों को भी निशाना बनाने के लिए चिह्नित किया था, लेकिन कुछ स्थानों पर जानबूझकर हमला नहीं किया गया। इनमें जॉर्डन का टाइटन बेस और इरबिल में मौजूद कुछ अमेरिकी ठिकाने शामिल हैं।

**अमेरिका के साथ तनाव में होर्मुज इतना अहम क्यों है?:** होर्मुज जलडमरूमध्य दुनिया के लिए बेहद महत्वपूर्ण समुद्री रास्ता है। पश्चिम एशिया में जारी संघर्ष के बीच यहां जहाजों की आवाजाही को लेकर ईरान और अमेरिका के बीच तनाव बढ़ा हुआ है। रजाई ने कहा कि होर्मुज को खुला रखने का भविष्य सीधे तौर पर अमेरिका के सैन्य रवैये से जुड़ा है। उन्होंने स्पष्ट किया कि जब तक अमेरिका ईरान को धमकी देता रहेगा या उस पर हमला करेगा, तब तक स्थिति सामान्य नहीं होगी। इस बीच नया प्रतिबंधित क्षेत्र बनाने की चेतावनी से फारस की खाड़ी में समुद्री यातायात को लेकर चिंता और बढ़ सकती है।

**लेबनान और हिजबुल्ला को लेकर ईरान ने क्या कहा?:** मोहसिन रजाई ने लेबनान और हिजबुल्ला के बारे में भी बात की। उन्होंने कहा कि युद्ध को केवल जीत और हार की लगातार श्रृंखला के रूप में नहीं देखा जा सकता। उनके मुताबिक युद्ध में उतार-चढ़ाव आते रहते हैं।

**ईरान के नए कदम से आगे क्या बदल सकता है?:** ईरान की ओर से होर्मुज के बाहर नया प्रतिबंधित क्षेत्र बनाने की घोषणा तनाव को एक नए स्तर पर ले जा सकती है। अभी रजाई के बयानों के अनुसार ईरान एक तरफ होर्मुज को अमेरिकी हमलों और धमकियों से जोड़ रहा है, वहीं दूसरी तरफ उन समुद्री इलाकों में भी प्रतिबंध बढ़ाने की तैयारी कर रहा है जिन्हें वह अपने सुरक्षा हितों से जुड़ा मानता है।

## चांद हमारा है': अमेरिकी झंडे के साथ शेयर की तस्वीर, राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने किया नया दावा

**वाशिंगटन, एजेंसी।** अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने रविवार को दावा किया कि चंद्रमा अमेरिका का है। उन्होंने ट्रुथ सोशल पर चंद्रमा की एक तस्वीर पोस्ट की, जिस पर 'चंद्रमा हमारा है' लिखा था। उन्होंने तस्वीर के साथ अमेरिकी झंडा भी लगाया। चंद्रमा की तस्वीर पोस्ट करने से कुछ मिनट पहले, ट्रंप ने अमेरिकी अंतरिक्ष बल की नई काली वर्दी की एआई-जनरेटेड तस्वीरें साझा कीं। उन्होंने रंगों का वर्णन 'स्पेस ग्रे, मिडनाइट ब्लैक, सिल्वर ग्रे और सैटिन ब्लैक' के रूप में किया। वर्दी में कंधे और कॉलर पर प्रतीक चिन्ह, आस्तीन पर पैच और एक बेल्ट थी।

वहीं, ट्रंप ने एक अन्य पोस्ट में न्यू मैक्सिको का नाम बदलकर ' न्यू अमेरिका' रखने का भी सुझाव दिया। उन्होंने पोस्ट किया, 'कई लोगों ने न्यू मैक्सिको का नाम बदलकर। न्यू अमेरिका रखने का सुझाव दिया। उस संभावित रूप से अविश्वसनीय राज्य के लोगों के लिए यह कितना अधिक प्रतिष्ठित और सुंदर नाम होगा। वाह, मुझे यह बहुत पसंद आया।'व्हाइट हाउस ने इस विचार का समर्थन किया। एक पोस्ट में 'मेक्सिको' को काटकर उसकी जगह 'अमेरिका' लिखा हुआ दिखाया गया था।

न्यू मेक्सिको की गवर्नर मिशेल लुजान ग्रिशम ने फॉक्स न्यूज पर जवाब देते हुए कहा कि राज्य का नाम विवाद का विषय नहीं है यह संयुक्त राज्य अमेरिका के अस्तित्व में आने से पहले से ही हमारा है।' उन्होंने कहा कि ट्रंप ईंधन की बढ़ती कीमतों जैसे मुद्दों से अमेरिकियों का ध्यान भटकाना चाहते हैं।

न्यू मेक्सिको को यह सुझाव देने से पहले एक आदेश जारी किया गया था। कुछ दिन पहले, ट्रंप ने कनाडा के साथ व्यापार विवाद के बीच लेक ओंटारियो का नाम बदलकर 'लेक अमेरिका' करने वाले दस्तावेज पर हस्ताक्षर किए थे। उन्होंने 27 अगस्त को ओवल ऑफिस से इस घोषणा की थी। लेक ओंटारियो कनाडा-अमेरिका सीमा पर स्थित पांच ग्रेट लेक्स में से एक है।

## सुपरहीरो अंदाज में दिखे डोनाल्ड ट्रंप: सीमा पर दीवार लगाकर रोके अवैध अप्रवासी

**वाशिंगटन, एजेंसी।** अमेरिकी राजनीति में अब सुपरहीरो का तड़का भी लग गया है। व्हाइट हाउस ने सोमवार को राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप को लेकर ग्रीन लैंटर्न थीम पर एक एआई वीडियो जारी किया है। वीडियो में ट्रंप को हरे रंग की रोशनी और सुपरहीरो जैसी ताकत के साथ दिखाया गया है, जो ग्रीन लैंटर्न के मशहूर पावर रिंग से प्रेरित है। व्हाइट हाउस के आधिकारिक एक्स अकाउंट पर वीडियो साझा किया। इसके साथ ही लिखा, 'तेज धूप में हो या अंधेरी रात में, कोई बुराई मेरी नजर से नहीं बच पाएगी। जो लोग बुराई की ताकत की पूजा करते हैं, वे मेरी शक्ति से सावधान रहें। ग्रीन लैंटर्न की रोशनी!'

**वीडियो में क्या नजर आ रहा है?** : वीडियो में ट्रंप एक चमकती अंगूठी उठाते और एक चमकदार हरी सीमा दीवार बनाते हुए दिखाई दे रहे हैं, जो प्रशासन की आव्रजन नीतियों का संकेत है। इसके बाद वे अपनी शक्तियों का उपयोग अमेरिकी विनिर्माण और सैन्य प्रयासों को बढ़ाने के लिए करते हैं।

बता दें कि राष्ट्रपति ट्रंप ने 31 अगस्त को एक वीडियो साझा किया था। इसमें वे खर्ग आईलैंड पर जोरदार धमाकों होते नजर आ रहे थे। वीडियो साझा करते हुए ट्रंप ने दावा किया कि द्वीप को 'टुकड़े-टुकड़े' किया जा रहा है।

डोनाल्ड ट्रंप ने अपने सोशल मीडिया पोस्ट में लिखा कि 'खर्ग आईलैंड के टुकड़े-टुकड़े किए जा रहे हैं।' हालांकि, उन्होंने इसके अलावा हमले को लेकर कोई विस्तृत जानकारी साझा नहीं की। ट्रंप के पोस्ट में दिखाई गई तस्वीरों में खर्ग आईलैंड पर बड़े धमाके होते नजर आ रहे हैं। खार्ग द्वीप ईरान का एक प्रमुख ऊर्जा केंद्र है, जो 28 फरवरी को अमेरिका और इस्राइल के हमलों के साथ युद्ध शुरू होने से पहले देश के लगभग 90% तेल निर्यात का संचालन करता था। द्वीप को कोई भी महत्वपूर्ण क्षति ईरान के तेल व्यापार को बाधित कर सकती है और उसकी अर्थव्यवस्था पर और दबाव डाल सकती है।

### दुनिया के नक्शे पर भारत के वोट से क्यों तिलमिलाया पाकिस्तान?:

# कश्मीर पर फिर अलापा पुराना राग

**इस्लामाबाद, एजेंसी।** संयुक्त राष्ट्र में दुनिया के नक्शे को लेकर आए एक प्रस्ताव पर भारत के समर्थन के बाद भारत-पाकिस्तान के बीच बयानबाजी फिर तेज हो गई है। भारत ने 4 सितंबर को अपनाए गए प्रस्ताव के पक्ष में मतदान किया था। इसके बाद विदेश मंत्रालय ने स्पष्ट किया कि इस वोट का मकसद केवल दुनिया के नक्शों में महाद्वीपों के आकार को ज्यादा सही तरीके से दिखाने के सिद्धांत का समर्थन करना था। भारत ने यह भी साफ किया कि प्रस्ताव का जम्मू-कश्मीर, लद्दाख या किसी अंतरराष्ट्रीय सीमा के राजनीतिक दर्जे से कोई लेना-देना नहीं है। इसके बावजूद अगले ही दिन पाकिस्तान ने भारत के रुख को निशाना बनाया और जम्मू-कश्मीर पर अपने पुराने दावे दोहरा दिए।

संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 4 सितंबर को दुनिया के नक्शे में महाद्वीपों के आकार को ज्यादा सही तरीके से दिखाने से जुड़ा प्रस्ताव अपनाया। इसका उद्देश्य ऐसे नक्शों के इस्तेमाल को बढ़ावा देना है, जिनमें अलग-अलग महाद्वीपों का क्षेत्रफल वास्तविक आकार के अनुपात में ज्यादा सही नजर आए। भारत ने इस

प्रस्ताव के पक्ष में मतदान किया। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने कहा कि भारत ने अपने वोट की व्याख्या में समान क्षेत्रफल वाले नक्शों के सिद्धांत को समर्थन देने की बात रखी। यानी भारत का वोट किसी राजनीतिक सीमा या विवादित क्षेत्र के समर्थन में नहीं था।

**भारत ने जम्मू-कश्मीर पर क्या साफ किया? :** भारत ने कहा कि संयुक्त राष्ट्र का प्रस्ताव किसी खास विश्व नक्शे को मंजूरी नहीं देता। न ही यह किसी खास नक्शा बनाने की पद्धति या राष्ट्रीय सीमाओं के चित्रण को मान्यता देता है। विदेश मंत्रालय ने साफ किया कि प्रस्ताव में अंतरराष्ट्रीय सीमाओं, विवादित क्षेत्रों या स्थानों के नाम से जुड़े राजनीतिक नक्शों पर कोई फैसला नहीं किया गया है। भारत ने साथ ही अपनी संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता को लेकर रुख को स्पष्ट, लगातार एक जैसा और गैर-परक्राम्य बताया। ऐसे में भारत के अनुसार इस प्रस्ताव को जम्मू-कश्मीर के दर्जे से जोड़ना सही नहीं है।

पाकिस्तान ने भारत के बयान पर क्या कहा? : भारत के स्पष्टीकरण के एक दिन बाद पाकिस्तान के विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता सज्जाद हैदर खान ने भारत के दावे को खारिज कर दिया। पाकिस्तान ने जम्मू-कश्मीर की स्थिति को लेकर भारत के रुख को बेबुनियाद बताया। उसने कहा कि भारत की कथित एकतरफा कार्रवाई और जम्मू-कश्मीर पर उसका नियंत्रण क्षेत्र की स्थिति को नहीं बदल सकता। पाकिस्तान ने एक बार फिर जम्मू-कश्मीर को संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के एजेंडे में लंबे समय से लंबित विवाद बताया और इस मुद्दे पर अपने पुराने रुख को दोहराया।

## अमेरिका को समझ आ रहा: बच्चों की परवरिश माता-पिता ही बेहतर करेंगे, डे-केयर से दूरी बनाने के लिए बनी खास योजना

**वाशिंगटन, एजेंसी।** अमेरिकी सरकार एक ऐसी योजना पर काम कर रही है, जिसमें छोटे बच्चों को पालने के लिए नौकरी छोड़कर घर पर रहने वाले माता-पिता में से किसी एक अभिभावक को वित्तीय मदद दी जाएगी। दरअसल, अमेरिका अब पारंपरिक पारिवारिक मूल्यों की ओर लौट रहा है जिसमें माना जाता है कि छोटे बच्चों की देखभाल डे-केयर के बजाय माता-पिता की निगरानी में होनी चाहिए।

ट्रंप प्रशासन ने इस संबंध में बाकायदा योजना का मसौदा भी तैयार कर लिया है। यह योजना मुख्यतः उपराष्ट्रपति जेडी वेंस की पहल का नतीजा है, जो लंबे समय से इसकी वकालत करते रहे हैं कि छोटे बच्चों को डे-केयर के मुकाबले घरेलू माहौल मिलना चाहिए, जो उनके शारीरिक व मानसिक विकास के लिए बेहद जरूरी होता है। मसौदे के मुताबिक, प्रस्तावित योजना का लाभ केवल उन विवाहित जोड़ों पर लागू होगा जिनमें एक जीवनसाथी काम करता है और दूसरा घर पर बच्चों

की देखभाल करता है। अविवाहित जोड़े या एकल अभिभावक इसके दायरे से बाहर रहेंगे। योजना को लागू करने के लिए चाइल्ड केयर एंड डेवलपमेंट फंड (सीसीडीएफ) के पैसे का उपयोग किया जाएगा। रूढ़िवादी विचारकों और हेरिटेज फाउंडेशन जैसे संगठनों ने इस कदम का समर्थन किया है। उनका मानना है कि यह नियम व्यावसायिक डे-केयर और घर पर बच्चों की परवरिश करने वाले माता-पिता के बीच भेदभाव को खत्म करेगा। व्हाइट हाउस और उपराष्ट्रपति कार्यालय की ओर से इस पर अभी कोई आधिकारिक प्रतिक्रिया नहीं आई है, लेकिन नियम को अंतिम रूप दिए जाने से पहले इसे जनता की प्रतिक्रिया के लिए ऑनलाइन जारी किया जाएगा।चाइल्ड केयर सब्सिडी फंड से उन कामकाजी माता-पिता या पढ़ाई/ट्रेनिंग कर रहे अभिभावकों को सब्सिडी मिलती है, जिनकी पारिवारिक आय उनके राज्य की औसत आय के 85% से कम हो।

यह मदद 13 वर्ष से कम उम्र के बच्चों के लिए मिलती है। सरकारी आंकड़ों के अनुसार, सीसीएस फंड से मदद पाने वाले परिवारों में करीब 80% परिवार एकल कामकाजी माता-पिता हैं, जिनमें सबसे ज्यादा संख्या अकेली मांओं की है।ट्रंप प्रशासन को इस बदलाव के लिए कांग्रेस की मंजूरी लेने की जरूरत नहीं होगी और इसे अगले वर्ष तक लागू किया सकता है।

## यमन में फिर भड़की जंग: हूतियों और सेना में भीषण लड़ाई, चार दिन में 117 लोगों की हुई मौत

**एडेन, एजेंसी।** पश्चिमी प्रांतों ताइज और होदेइदाह में यमनी सरकारी सेना और हूती समूह के बीच चार दिनों से भीषण झड़प चल रही है। इसमें अबतक कम से कम 117 लोग मारे गए हैं। यह जानकारी मेडिकल अधिकारियों ने दी। पश्चिमी तट के मोर्चे पर सरकारी सेना के साथ मौजूद एक वरिष्ठ मेडिकल अधिकारी ने नाम न बताने की शर्त पर शिन्हुआ समाचार एजेंसी को बताया कि गुरुवार को लड़ाई शुरू होने के बाद से सरकारी सेना के 54 सैनिक मारे गए हैं। कई अन्य घायल हुए हैं।

वहीं, पश्चिमी होदेइदाह प्रांत में हूती -नियंत्रित अस्पतालों के दो मेडिकल सूत्रों ने बताया कि इसी दौरान हूती समूह के 63 सदस्य मारे गए, जिससे दोनों पक्षों की कुल मरने वालों की संख्या 117 हो गई।

यमनी सरकार के लड़ाकू विमानों ने शुक्रवार को होदेइदाह और ताइज के पश्चिमी प्रांतों में हूती -नियंत्रित इलाकों पर हमले किए। ये हमले रणनीतिक बाब अल-मंदाब जलडमरूमध्य के पास हूती समूह के बड़े हमले का सामना कर रही जमीनी सेना की मदद के लिए किए गए थे।अधिकारी ने नाम न बताने की शर्त पर बताया कि ये हवाई हमले ऐसे समय में किए गए जब दोनों प्रांतों में कई मोर्चों पर जबरदस्त लड़ाई चल रही थी। हूती लड़ाकों ने पिछले 24 घंटों में तेजी से आगे बढ़ते हुए कई इलाकों पर कब्जा कर लिया था।अधिकारी ने कहा कि लड़ाकू विमानों ने उन इलाकों में हूती ठिकानों और गतिविधियों को निशाना बनाया जहां जमीनी लड़ाई चल रही थी। हमलों या हताहतों के बारे में और जानकारी तुरंत उपलब्ध नहीं हो सकी।

सरकार के एक सैन्य अधिकारी ने नाम न बताने की शर्त पर शिन्हुआ को बताया कि हूती सदस्यों द्वारा कब्जा किए जाने के कुछ ही घंटों बाद, सरकारी सेना ने रात भर चले एक तेज जवाबी हमले में पश्चिमी ताइज में कई महत्वपूर्ण ठिकानों को वापस अपने कब्जे में ले लिया।हालिया तनाव पश्चिमी यमन में पिछले कुछ वर्षों की सबसे भीषण जमीनी लड़ाइयों में से एक है। इससे देश के कई मोर्चों पर वर्षों की सापेक्ष शांति के बाद बड़े पैमाने पर लड़ाई फिर से शुरू होने की चिंता बढ़ गई है।यमन 2014 के अंत से ही संघर्ष में फंसा हुआ है, जब हूती समूह ने सना और उत्तरी यमन के बड़े हिस्से पर कब्जा कर लिया था। इसके बाद, अंतराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त यमनी सरकार के समर्थन में सऊदी अरब के नेतृत्व वाले गठबंधन ने अगले साल हस्तक्षेप किया था।

# नेपाल जलप्रलय के 12 दिन: पानी हुआ जहरीला, संपर्क में आते ही त्वचा पर इंफेक्शन; आंसुओं के बीच नुकसान के आंकड़े

**काठमांडू, एजेंसी।** नेपाल आपदा के बाद भारत में आया सैलाब अब दिन-ब-दिन जहरीला होता जा रहा है। इसके संपर्क में आते ही लोगों के पूरे शरीर में इंफेक्शन फैल जाता है। लोग खुजली से परेशान हैं। यह परेशानी तब और बढ़ रही है जब संक्रमण एक व्यक्ति से दूसरे में पहुंच रहा है। ऐसे में इसकी चेन को ब्रेक करना बेहद मुश्किल हो रहा है। सबसे पहले इसकी चपेट में वे बुजुर्ग आए जो आपदा के बाद खेतों में काम करने गए। अब उनसे यह संक्रमण घर के दूसरे लोगों में पहुंच रहा है। शरीर में अलग-अलग जगहों पर निशान पड़ रहे है। इसकी जद में कुशीनगर और महाराजगंज के कई गांव हैं।

महाराजगंज जिला अस्पताल के वरिष्ठ त्वचा रोग विशेषज्ञ डॉ. एके द्विवेदी

ने कहा कि पानी में ई. कोलाई और अन्य फीकल बैक्टीरिया पनपने की अधिक संभावना है। जब कोई व्यक्ति ऐसे पानी के संपर्क में आता है तो बैक्टीरिया सबसे पहले त्वचा की ऊपरी परत को कमजोर कर देता है। कुशीनगर जिले के पीपरीघाट निवासी रामायण सिंह ने बताया कि खेत में काम करने के दौरान उनके पैर नेपाल से आए दूषित पानी के संपर्क में आ गए थे। इसके तुरंत बाद खुजली शुरू हो गई। सेवरही की रंभा देवी की बेटी के शरीर पर दाने हो गए हैं। आपदा के 12वें दिन चीन ने पहली बार कुछ विदेशी मीडिया संस्थानों को गिरयोंग काउंटी जाने की अनुमति दी। अब चीन के सीमावर्ती इलाके में तबाही की असली तस्वीर सामने आई। यह आव्रजन चौकी बुरी तरह तबाह हो चुकी है। यहां तक कि यह पता लगाना भी मुश्किल है कि इसका ढांचा कहां पर खड़ा था।

नेपाल में अचानक बाढ़ से मची तबाही के 12 दिन बीतने बाद भी प्रभावित क्षेत्रों में स्थिति विकट बनी हुई है। राहत एवं बचाव कार्य बदस्तूर जारी है। मलबे को हटाने, सड़कों को दुरुस्त करने और संचार व्यवस्था को पटरी पर लाने के प्रयास युद्धस्तर पर जारी हैं। नेपाली सेना और इंजीनियरों की टीम अस्थायी पुल बनाने और प्रभावित लोगों तक आवश्यक सामग्री पहुंचाने में जुटी है। अपेक्षाकृत कम प्रभावित क्षेत्रों में कुछ लोग घरों की ओर लौटे हैं और अपनों को खोने के दर्द के बीच जिंदगी को फिर से पटरी पर लाने की कोशिश में जुटे हैं। अपने टूटे-फूटे घरों को फिर से ठीक करके रहने लायक बना रहे हैं। एक बड़ा इलाका ऐसा है जहां मलबे के ढेर के अलावा कुछ नहीं बचा है। लोग इसमें अपना बचा-खुचा सामान तलाश रहे हैं। उनका कहना है कि समझ ही नहीं आ रहा कि जिंदगी फिर कहां से शुरू करें।

खुद बचे, अब राहत अभियान में जुटे

सुदीप कुमार न्यौपाने (31) विनाशकारी बाढ़ में बाल-बाल बच गए थे, लेकिन उनके छोटे भाई और एक करीबी सहयोगी लापता हैं। न्यौपाने अब राहत कार्यों में शामिल हो गए और रसुवा में विस्थापित लोगों के बीच भोजन तथा अन्य जरूरी सहायता सामग्री के वितरण में मदद कर रहे हैं।

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक स्वामी मुद्रक एवं संपादक हरेश पंवार द्वारा शीतल प्रिंटिंग ऑफसेट, प्लॉट नंबर 245 , बुहाना रोड़ पचेरी बड़ी, जिला झुंझुनूं ,राजस्थान-333515 से मुद्रित एवं प्रकाशित, मुद्रक मीना, संपादक हरेश पंवार, भीम प्रज्ञा मीडिया हाउस, बुहाना रोड़ पचेरी बड़ी, जिला झुंझुनूं ,राजस्थान-333515 मो. 9983040937, –mail bheempragya@gmail.com